सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 222, नई दिल्ली, रविवार 19 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आप सभी को छोटी दीपावली एवं नरक चतुर्दशी की हार्दिक शुभकामनाएं

03 दीपावली की भीड़ को देखते हुए दिल्ली मेट्रो का बड़ा फैसला....

06 रोगों से बचाव के ज्ञान का सम्मान

08 बिहार विधानसभा चुनाव 2025: नामांकन में गड़बड़ियों पर NCP का सशक्त विरोध...

लगातार हो रही दुर्घाटनाओं के बाद अब बस चालकों को इस कड़ी परीक्षा से होगा गुजरना

दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) ने यात्रियों की सुरक्षा के लिए बस चालकों का ड्राइविंग टेस्ट और मेडिकल जांच कराने का फैसला किया है। चालकों को यातायात नियमों का पालन करने और यात्रियों के प्रति संवेदनशील रहने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। सुरक्षित ड्राइविंग के तरीकों पर जोर दिया जाएगा। हाल ही में हुई दुर्घटनाओं के बाद यह कदम उठाया गया है, जिसका उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं को कम करना है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) के बस चालकों को अब कड़ी परीक्षा से गुजरना होगा। उनका ड्राइविंग स्किल टेस्ट होगा। उसमें पास होने वाले चालकों की मेडिकल जांच होगी। इसके बाद उन्हें बस चलाने की अनुमति मिलेगी। डीटीसी ने यह कदम बसों में सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए उठाया है। स्किल टेस्ट डीटीसी के स्थायी चालकों के साथ ही निजी बस आपरेटर्स द्वारा भर्ती किए गए बस चालकों का भी होगा।

इस कार्यक्रम का मकसद चालकों को यात्रियों के प्रति ज़्यादा संवेदनशील बनाना भी है। टेस्ट के दौरान चालकों से सड़क यातायात से संबंधित सवाल भी पूछे जाते हैं और उनके गलत उत्तर मिलने के बाद उन्हें सही उत्तर बताया जाता है, किस परिस्थिति में उन्हें क्या करना है और क्या नहीं करना है, इसके बारे में उन्हें यातायात पुलिस द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है कि स्टाप पर ही बसें रुकें, यात्रियों को चढ़ने-उतरने का पूरा मौका दें और किसी भी यात्री को परेशान न करें।

इस व्यवस्था के तहत अब तक 1000 चालकों का टेस्ट हो चुका है। प्रशिक्षण के तहत सुरक्षित लेन में गाड़ी चलाना, ट्रैफिक नियमों का पालन करना और ऐसे ड्राइविंग तरीके सिखाए जाएंगे जिनसे एक्सीडेंट कम हों और रोड पर अनुशासन बढ़े। खास तौर पर यात्रियों से अच्छा व्यवहार करने पर भी ज़ोर दिया जाएगा। इसमें बस को सही जगह पर रोकना, यात्रियों से नरमी से बात करना और बुजुर्गों व खास ज़रूरतों वाले यात्रियों का ध्यान रखना शामिल है। ये प्रशिक्षण डीटीसी और क्लस्टर स्कीम की बसों के ड्राइवरों के लिए होगी, जो मिलकर शहर में 5,000 से ज़्यादा बसें चलाते हैं।

इस प्रशिक्षण में चालकों को यह प्रशिक्षण दिया जाता है कि वे यातायात जाम में भी शांत रहें और अपनी गाड़ी को सुरक्षित तरीके से चलाएं। अचानक ब्रेक लगाने या तेज़ रफ़्तार से बचने के तरीके बताए जाते हैं। साथ ही, बस के अंदर साफ-सफाई बनाए रखने और यात्रियों को आरामदायक सफर देने पर भी ध्यान दिया जाएगा। यह सब इसलिए ताकि दिल्ली की सड़कों पर सफर करने वाले हर यात्री को एक अच्छा अनुभव मिले और वे सुरक्षित महसूस करें।

दक्षिण भारत में गत दिनों चलती बस में चालक को दौरा पड़ जाने के बाद बस द्वारा कई वाहनों को टक्कर मार देने की घटना के बाद डीटीसी ने सभी चालकों का मेडिकल जांच कराने का भी फैसला लिया है। सभी चालकों की मेडिकल जांच से यह पता चल सकेगा कि चालक सेहतमंद हैं या नहीं है और क्या वे लंबी शिफ्ट के लिए फिट हैं। दिल्ली में पब्लिक बस सेवाओं को डीटीसी और दिल्ली इंटीग्रेटेड मल्टी-मोडल ट्रांजिट सिस्टम (डिम्ट्स) मिलकर चलाते हैं। क्लस्टर स्कीम के तहत प्राइवेट कंपनियां बसें चलाती हैं और डिम्ट्स उनकी देखरेख करता है।

पिछले दो साल में हुईं सड़क दुर्घटनाओं पर नजर डालें तो सभी तरह की बसों से 2024 में 35 बस दुर्घटनाओं में 35 लोगों की मौत हो चुकी है, वहीं 2025 में 30 जून तक 26 बस दुर्घटनाओं में 26 लोग मारे जा चुके हैं। 2024 में क्लस्टर सेवा से डीटीसी बसों से ज्यादा दुर्घटनाएं अधिक हुई हैं।

आंकड़ों के अनुसार 2024 में कुल 764 वाहनों से सड़क दुर्घटनाएं हुईं इनमें 778 लोग मारे गए। जिसमें से डीटीसी बसों से 17 दुर्घटनाएं हुईं और 18 लोग माए गए, जबकि क्लस्टर सेवा की बसों से छह दुर्घटनाएं हुईं और छह लोग मारे गए। इधर 2025 में 30 जून तक डीटीसी बसों से पांच दुर्घटनाएं हुईं और पांच लोग मारे गए, जबकि क्लस्टर सेवा की बसों से छह दुर्घटनाएं हुई हैं और छह लोग मारे गए हैं। दिल्ली सरकार के तहत इस समय कुल 4900 बसें संचालित होती हैं।

पुरानी बसों में कैंटीन खोलकर डीटीसी यात्रियों को देगी सुविधा और बढ़ाएगी अपनी आय, शुरुआत इस डिपो से...

दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) पुरानी बसों में कैंटीन खोलकर यात्रियों को सुविधा देने और आय बढ़ाने की योजना बना रहा है। इस पहल के तहत, बस स्टैंड पर यात्रियों को चाय, नाश्ता और अन्य जरूरी चीजें मिलेंगी। शुरुआत एक डिपो से होगी, जिसके बाद इसे अन्य डिपो में भी लागू किया जाएगा। यह डीटीसी की आय में वृद्धि करने का एक नया तरीका है।

नई दिल्ली। पुरानी बसों में कैंटीन खोलकर डीटीसी (दिल्ली परिवहन निगम) यात्रियों को देगी सुविधा और अपनी आय भी बढ़ाएगी। दिल्ली परिवहन निगम ने तीनों आईएसबीटी (अंतर्राज्यीय बस अड्डा) सहित प्रमुख टर्मिनल के आस-पास पुरानी बसों को रेस्टोरेंट के अंदाज में तैयार कर इन में कैंटीन खोलने की योजना बनाई है। इसके लिए टेंडर जारी किए हैं। ये कैंटीन वातानुकूलित होंगी, मॉडल के तौर पर कश्मीरी गेट आईएसबीटी में कैंटीन के लिए एक बस तैयार की गई है। सरकार पुरानी बसों में कैंटीन खोलकर दो तरह की फायदे देख रही है एक तो बस और टर्मिनल के बाहर टर्मिनल पर यात्रियों को खाने पीने की आइटम की सुविधा अच्छी और कम दाम में मिल सकेगी दूसरा टेंडर के माध्यम से यह सुविधा प्रदान कर डीटीसी की आय भी बढ़ सकेगी। घाटे में चल रही डीटीसी आय बढ़ाने के लिए तरह-तरह के रास्ते खोज रही है। इनमें एक रास्ता कैंटीन खोलकर टेंडर के माध्यम से आय अर्जित करना भी है। इस योजना के तहत डीटीसी और परिवहन विभाग के तहत डीटीआइडीसी (दिल्ली ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट कारपोशन) बसों में कैंटीन खोलने की रणनीति पर काम कर रही हैं।

International Good Will Society of India द्वारा अपनी XXXVI Souvinir निकालने जा रही हैं। आप आगर इसमें अपनी एड देना चाहते हैं तो जल्द संपर्क करें। एड के लिए आपको 10000 रुपए एडवांस में सोसायटी के बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया मेरठ कैंट के अकाउंट नंबर 31651130802 में जमा करवा कर अपना एड का मैटर सोसायटी के महा सचिव को व्हाट्सएप नंबर 09639811632 पर भेजना होगा।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं।

हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

SCAN ME

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल-0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

काली चौदस आज

जैसे-जैसे दिवाली करीब आती है, हममें से कई लोग इस त्यौहार के हर महत्वपूर्ण दिन को ध्यान से मनाते हैं। इन्हीं में से एक दिन है काली चौदस, जिसे भूत चतुर्दशी भी कहा जाता है। यह रात देवी-देवताओं और रक्षक शक्तियों की पूजा करने, तथा घर और मन से नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने के लिए मानी जाती है।

काली चौदस की तारीख, समय और मुहूर्त

==========

इस साल काली चौदस 2025 रविवार, 19 अक्टूबर को मनाई जाएगी। चतुर्दशी तिथि 19 अक्टूबर दोपहर 1 बजकर 51 मिनट पर शुरू होगी और 20 अक्टूबर दोपहर 3 बजकर 44 मिनट तक रहेगी।

पूजा के लिए सबसे शुभ समय, जिसे काली चौदस मुहूर्त कहा जाता है, रात 10 बजकर 57 मिनट से 11 बजकर 46 मिनट तक रहेगा। अगर आप इस दिन पूजा या आराधना करना चाहते हैं, तो यही देर रात का समय सबसे उत्तम माना गया है।

क्योंकि तिथि अगले दिन यानी 20 अक्टूबर तक चलती है, कई लोगों को लगता है कि पूजा अगले दिन करनी चाहिए। लेकिन परंपरा के अनुसार काली चौदस उसी रात मनाई जाती है जब चतुर्दशी की रात्रि होती है, इसलिए 2025 में यह 19 अक्टूबर की रात को ही मनाई जाएगी।

काली चौदस दिवाली से पहले क्यों मनाई जाती है?

==========

काली चौदस नकारात्मक शक्तियों से रक्षा पाने का दिन माना जाता है। इस दिन देवी कालरात्रि की पूजा की जाती है, जो माता दुर्गा का एक उग्र रूप हैं और जो अपने भक्तों की रक्षा करती हैं। लोग इस दिन बुरी शक्तियों से बचाव की प्रार्थना करते हैं और अपने घरों को नकारात्मकता से मुक्त करते हैं। कुछ लोग अपने पूर्वजों की आत्माओं को भी याद करते हैं और उन्हें सम्मान देते हैं।

काली चौदस पूजा कैसे करें?

==========

कई लोग आधी रात के बाद श्मशान भूमि जाकर देवी कालरात्रि और अन्य रक्षक देवताओं जैसे वीर वेताल की पूजा करते हैं। घरों या मंदिरों में भी पूजा की जाती है। लोग दीपक जलाते हैं, मंत्रों का जाप करते हैं और घर को सकारात्मक ऊर्जा से भरने की कोशिश करते हैं।

कुछ लोग शुभ समय देखने के लिए चौघड़िया का भी प्रयोग करते हैं ताकि सभी कर्म शुभ मुहूर्त में किए जा सकें। ध्यान रखने वाली बात यह है कि काली चौदस को रूप चौदस और नरक चतुर्दशी से भ्रमित नहीं करना चाहिए। ये तीनों अलग-अलग दिन हैं और इनका महत्व भी भिन्न है। काली चौदस का उत्सव भारत के पश्चिमी हिस्सों में, खासकर गुजरात में बहुत श्रद्धा से मनाया जाता है। हालांकि, इसका असली संदेश हर जगह एक ही है और वो है नकारात्मकता को दूर करना और जीवन में शुद्धता व सुरक्षा का आह्वान करना।

काली चौदस पर देवी काली का आशीर्वाद मांगना

==========

इस दिन देवी पार्वती की काली के रूप में पूजा की जाती है। माना जाता है कि इस दिन काली की पूजा करने से कई प्रकार के लाभ मिलते हैं। इसमें मुख्य रूप से शनि दोष के नकारात्मक प्रभावों को दूर करना, विवाह और धन में समृद्धि, दीर्घकालिक बीमारियों से मुक्ति और बुरी आत्माओं के प्रभाव से मुक्ति शामिल है।

नरक चतुर्दशी के दिन देवी काली केंद्रीय महत्व की देवी हैं। देवी शक्ति के उग्र रूप को सभी नकारात्मक पहलुओं और दुष्ट तत्वों के विनाशक के रूप में जाना जाता है। उन्हें विनाश और उत्थान के चेहरे के रूप में भी जाना जाता है। काली चौदस पर उनका आशीर्वाद लेने से सभी नकारात्मक ऊर्जाओं से सुरक्षा और शत्रुओं पर विजय सुनिश्चित होगी।

दीपावली, दीपों की लौ में दैदीप्यमान हमारा भारत

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

दीपावली भारतीय संस्कृति का वह उज्ज्वल पर्व है जो केवल दीप सजाने या मिठाइयाँ बाँटने का उत्सव नहीं बल्कि आत्मिक आलोक और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है यह दिन उस दिव्य स्मृति को पुनर्जीवित करता है जब प्रभु श्रीराम वनवास की अवधि पूर्ण कर अयोध्या लौटे और सम्पूर्ण नगर दीपमालाओं से आलोकित हुआ यह दृश्य केवल उत्सव नहीं था बल्कि अंधकार पर प्रकाश और असत्य पर सत्य की विजय का उद्घोष था, उसी क्षण से दीपावली भारतीय जीवन में हर वर्ष लौटने वाला प्रकाशोत्सव बन गई जो हमें याद दिलाता है कि जब तक भीतर का दीप नहीं जलेगा तब तक बाहर के दीप व्यर्थ हैं यह पर्व पाँच दिनों तक मनाया जाता है,धनतेरस से भाईदूज तक चलने वाले इन दिनों में भारतीय लोकजीवन अपनी समृद्ध परंपराओं और मानवीय भावनाओं की झलक दिखाता है लक्ष्मीजी और गणेशजी की पूजा इस बात का बोध कराती है कि जीवन में धन और विवेक का संतुलन ही सच्ची समृद्धि है दीपावली हमें सिखाती है कि प्रकाश केवल दीपक में नहीं बल्कि आत्मा में खिलने वाला विश्वास है आधुनिक सभ्यता कभी उस सच्चे उजाले को नहीं बुझा सकती जो प्रेम, विश्वास और धर्म से जलता है यही वह लौ है जो युगों से भारत को पोषित करती आई है और आने वाले युगों में भी इसके गौरव को अमर रखेगी हर दीपक में आशा की झिलमिलाहट है, हर रोशनी में अपनेपन की चमक है, और हर मुस्कान में उस भारत की आत्मा झलकती है जो अपनी संस्कृति की ज्योति से सम्पूर्ण मानवता का मार्ग आलोकित करती रही है। दीपावली दरअसल रूहानी और इंसानी रौशनी का संगम है, एक ऐसा मंज़र जब दिलों की दीवारें मिट जाती हैं और मुहब्बत की लौ हर दिशा में फैल जाती है,ये हिन्दोस्तान की रूह में समाई यह दीवाली वो वक़्त है, जब हर इंसान अपने अंदर के अँधेरे को जलाकर रोशनी का पैग़ाम देता है,अहसास दिलाती है कि असली उजाला न आईनों में है न घिराग़ों में बल्कि इंसान के दिल में छिपी नेकी में है इससे वक़्त का हर ज़रिया रौशन हो उठता है रवेत खलिहान रौनक से भर जाते हैं बच्चे आसमान में पटाख़ों की चमक के साथ सपने सजाते हैं और घरों में दीए नहीं इबादतें जलती हैं ये दीवाली दरअसल हमारी तहज़ीब की वो याद है जो सदीयों से मुहब्बत अमन और रोशनी का अलम उठाए खड़ी है और जब तक भारत की मिट्टी में ये दीए जलते रहेंगे तब तक उसकी रूह भी उजली रहेगी क्योंकि उसी उजाले में इस मुल्क की पहचान और इज़्ज़त बसती है।

विटामिन B12 और विटामिन D की कमी: कारण, लक्षण और आयुर्वेदिक समाधान

भारत में क्यों आम होती जा रही है यह समस्या?

आज के आधुनिक और तेजी से बदलते जीवनशैली में विटामिन B12 और विटामिन D की कमी एक सामान्य समस्या बनती जा रही है। रिसर्च के अनुसार भारत की लगभग 47% आबादी इन दो ज़रूरी विटामिन्स की कमी से प्रभावित है। खास बात यह है कि यह समस्या सिर्फ शाकाहारियों में ही नहीं, मांसाहारियों और फलाहारियों में भी पाई जा रही है।

मुख्य कारण: पोषण की कमी या आदतों की गलती?

विटामिन B12 शरीर में कुछ विशेष सूक्ष्म जीवाणुओं (Bacteria) की मदद से बनता है। लेकिन आजकल के अत्यधिक स्वच्छता और केमिकल-आधारित जीवनशैली ने इन अच्छे बैक्टीरिया का विनाश कर दिया है।

रोज़ सुबह टूथपेस्ट, डेटॉल, शैम्पू जैसे रसायनों का अत्यधिक प्रयोग

अत्यधिक शुद्ध पानी (RO Water) और रासायनिक खेती

कीटाणु मुक्त भोजन और स्टोरेज में Wax और Preservatives

धूप से डर और लगातार AC में रहना

ये सभी कारण हमारे शरीर को जरूरी Natural Exposure से वंचित करते हैं, जिससे विटामिन B12 और D का स्तर धीरे-धीरे कम होता चला जाता है।

पहचानें लक्षण

क्या आपको भी हो रही है यह कमी?

अगर आपके शरीर में इन विटामिन्स की कमी है, तो आप निम्न लक्षणों का अनुभव कर सकते हैं

कमजोरी और थकान

बालों का गिरना या जल्दी सफेद होना

हाथ-पैर में सुन्नता या जलन

भूख न लगना या गैस की समस्या

उंगलियों या जोड़ों में दर्द

हल्की सी मात्रा में खाना खाने पर भी पेट भारी लगना

इन लक्षणों के दिखने पर तुरंत रक्त परीक्षण (Blood Test) कराना चाहिए।

विटामिन B12 और D की कमी का प्राकृतिक और आयुर्वेदिक समाधान

1 सही खानपान की शुरुआत करें

हरी पत्तेदार सब्ज़ियां जैसे पालक, मेथी, चौलाई

अंकुरित अनाज, चना, मूँग

ताज़े फल और सलाद

स्पिरुलिना और नोनी जूस जैसे प्राकृतिक पूरक

सोया दूध, जिसे घर पर बनाना सबसे अच्छा रहता है

अंजीर और खजूर, जिन्हें यीस्ट के साथ भिगोकर सेवन करें

2 धूप का सेवन

सुबह 9 से 11 बजे तक की धूप में 20-30 मिनट बिताएं। स्किन पर सीधे धूप पड़नी चाहिए, क्रीम या सनस्क्रीन के बिना।

3 आदतों में बदलाव

अत्यधिक Sanitization से बचें

साबुन, केमिकल्स और RO पानी का सीमित प्रयोग करें

ऑर्गेनिक खाना और स्थानीय फल-सब्जियों को प्राथमिकता दें

कीटाणुओं और मिट्टी से थोड़ा संपर्क बनाएं

परहेज़ और सावधानी

अगर विटामिन B12 का स्तर बहुत कम (जैसे कि 19) हो जाए तो कुछ समय के लिए डॉक्टरी सलाह के अनुसार दवाइयां या इंजेक्शन लेना अनिवार्य हो जाता है।

लेकिन ध्यान रहे, अगर आप दिए गए आयुर्वेदिक और प्राकृतिक उपायों को नियमित रूप से नहीं अपनाते हैं, तो सुधार की संभावना कम हो जाती है।

निष्कर्ष

विटामिन B12 और D की कमी एक गंभीर लेकिन नियंत्रण योग्य समस्या है। इसके लिए न तो केवल एलोपैथिक दवाएं जरूरी हैं और न ही सिर्फ खाने का ध्यान। ज़रूरत है एक संतुलित जीवनशैली, सजीव (Natural) आहार और आयुर्वेदिक दृष्टिकोण की।

अगर आप भी इन लक्षणों से परेशान हैं, तो आज ही अपना लाइफस्टाइल बदलें। समय पर जांच कराएं और आयुर्वेदिक उपायों को अपनाएं।

मूल मूल्य- चेतना आधारित

हमारे आंतरिक कंपन की गुणवत्ता हमारे विचारों और भावनाओं की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। हम एक दिन में हज़ारों विचार बनाते हैं, और हर विचार अपने साथ एक भावना लेकर आता है।

इनमें से कुछ विचार और भावनाएँ सुंदर, शुद्ध और सकारात्मक होती हैं, जबकि अन्य अशुद्ध और नकारात्मक होती हैं। ये सभी यात्रा करते हैं और अन्य आत्माओं और भौतिक प्रकृति को छूते हैं। इसलिए, हमारे विचार कंपन, भावनाओं, विश्वास प्रणाली या दृष्टिकोण की गुणवत्ता हमारे जीवन, संबंधों, समाज, प्रकृति और पर्यावरण को बेहतर बनाने या बेहतर बनाने की कुंजी है।

हमारा दैनिक जीवन हमें कई विकल्प देता है कि हमें क्या करना है और इसे अपनी क्षमता के अनुसार कैसे करना है। हम उनमें से प्रत्येक में जो निर्णय लेते हैं, वे हमारे मूल्यों को दर्शाते हैं। चाहे वह हमारी देखभाल, धैर्य, ईमानदारी या कृतज्ञता हो, मूल्य सदैव दिशा देते हैं और जीवन को अर्थ देते हैं। यदि हमारे विचार, शब्द और व्यवहार हमारे मूल्यों के अनुरूप हैं, तो हम सहज महसूस करते हैं। लेकिन अगर हम समझौता करते हैं, विचलित

होते हैं या मूल्यों को छोड़ देते हैं, तो हमें जल्द या बाद में इसका पछतावा होता है।

लेकिन जैसे ही हम दुनिया में आगे बढ़ते हैं, हम देखते हैं कि हमारे आस-पास के लोग अपने मूल्यों से समझौता कर रहे हैं। ऐसे क्षणों में, क्या हम अपने मूल्यों को छोड़ने के लिए ललचाते हैं?

मूल्य हमारी ताकत हैं। भले ही कोई उनका उपयोग न कर रहा हो, और भले ही दूसरे लोग मानते हों कि ये काम नहीं करते, हमें हार नहीं माननी चाहिए। प्रलोभनों और चुनौतियों का सामना करते हुए भी, इन मूल मूल्यों को केंद्र में रख, टिके रहने से हमारी आंतरिक शक्ति बढ़ती है। अगर हम उनका उपयोग केवल सुविधानुसार करते हैं, तो हम अपने मूल्यों को खो देते हैं।

एक मुख्य मूल्य चुनें और उस मूल्य को यह दर्शाने के लिए प्रतिबद्ध रहें कि हम कौन हैं और हम क्या करते हैं। इसे निरंतर और सभी के साथ प्रयोग करें। स्वयं को याद दिलाएँ, 'मैं एक बार में एक मूल्य चुनता हूँ। और मैं इसे अपने हर विचार, शब्द और व्यवहार में उपयोग करता हूँ। मेरे मूल्य मुझे परिभाषित करते हैं। मैं उन्हें हर दृश्य में क्रियान्वित करता हूँ और अपने व्यक्तित्व को मजबूत बनाता हूँ।'

साथ ही, हम अपने और दूसरों के आंतरिक स्व, आत्मा को भी महसूस करते हैं - जो हमारी भौहों के बीच स्थित आध्यात्मिक प्रकाश का दिव्य बिंदु है। जितना अधिक हम ऐसा करते हैं, उतना ही हमारा आभामंडल सकारात्मक रूप से चार्ज होता है, और हमारे कंपन हमारे वातावरण को शुद्ध और सकारात्मक बनाते हैं।

आत्म चेतना की ये सशक्त भावनाएँ निरंतर अभ्यास द्वारा हमारे हर शब्द और हर कार्य को स्वच्छ और सामंजस्यपूर्ण बनाती हैं। प्रसन्नता की ऐसी आत्म-चेतन भावनाएँ हमें सभी आत्माओं और प्रकृति से प्रेम करने और उनका सम्मान करने और सफल जीवन और सुन्दर संसार निर्माण करने में सक्षम बनाती हैं।

!!!...The Criteria of Our Thinking Creates The Path We Are Choosing to Live Our Life. So Always Think Good And Definite... !!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

आखिर क्यों मनाई जाती है दीपावली, क्या है पौराणिक कथा

संजय कुमार सुमन

भारत के हर क्षेत्र में दिवाली त्योहार को मनाने की विशिष्ट परंपराएं हैं। इस त्योहार को बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्योहार पूरे भारत में बड़े ही उत्साह और धूमधाम से मनाया जाता है। दीपावली की रात को घरों में दीये जलाए जाते हैं, आतिशबाजी होती है, और लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ मिलकर खुशियां मनाते हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि दीपावली क्यों मनाई जाती है? साहित्यकार संजय कुमार सुमन द्वारा लिखे इस लेख में, हम आपको दीपावली के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान करेंगे और इसके पीछे की कहानियों को समझाएंगे। हम आपको बताएंगे कि कैसे दीपावली हमारे जीवन में खुशियां और रोशनी लाती है और कैसे यह त्योहार हमें एकता और सामाजिक समरसता की ओर ले जाता है। तो आइए, दीपावली के बारे में जानें और इसकी महत्ता को समझें। दीपावली का आध्यात्मिक संदेश एक ही है जो 'अंधकार पर प्रकाश की, बुराई पर अच्छाई की और अज्ञान पर ज्ञान की जीत' है।

दीपावली मनाने के पीछे मुख्य रूप से तीन कारण माने जाते हैं। पहला और सबसे प्रमुख कारण मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम 14 साल के वनवास के बाद धर्मनगरी अयोध्या लौटे और इसी खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाकर उनका स्वागत किया था। जैसा की रामचरितमानस में वर्णित है कि रानी कैकई की दासी मंथरा की साजिश की वजह से भगवान श्रीराम को राजा दशरथ ने 14 साल के वनवास पर भेज दिया था। दरअसल, वह अयोध्या का राजकाज उनके बेटे भरत को दिलाना चाहती थी, लेकिन प्रभु श्री राम सभी भाइयों में सबसे बड़े थे और सारे भाई उनसे बहुत प्रेम करते थे। इसलिए भगवान राम के वनवास जाने के बाद भी भरत राजा नहीं बनें और प्रभु श्री राम की वनवास से लौटने का इंतजार किया।

हिंदू धर्म में माता लक्ष्मी को धन-संपदा की देवी कहा गया है। ऐसे में लोग अपने सुखों की प्राप्ति के लिए दीपावली के दिन माता लक्ष्मी की पूजा अर्चना करते हैं। ऐसा माना जाता है कि इसमें मां लक्ष्मी स्वयं भक्तों के घर आती है। भक्त माता लक्ष्मी को खुश करने के लिए मुख्य द्वार पर तोरण, रंगोली आदि से सजाते हैं। साथ ही सनातन धर्म में स्वास्तिक चिन्ह को बहुत शुभ माना जाता है, इसलिए दिवाली के दिन मुख्य द्वार पर स्वास्तिक चिन्ह भी बनाई जाती है। मान्यताओं के अनुसार स्वास्तिक चिन्ह बनाने से भक्तों पर माता लक्ष्मी की विशेष कृपा बरसती है एवं सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को माता लक्ष्मी का प्राकट्य दिवस माना जाता है।

इसके पीछे एक कथा बताई जाती है कि एक बार माता लक्ष्मी अपने महालक्ष्मी स्वरूप में इंद्रलोक में वास करने पहुंची। माता की शक्ति से देवताओं की भी शक्ति बढ़ गई। इससे देवताओं को अभिमान हो गया कि अब उन्हें कोई पराजित नहीं कर सकता। एक बार इंद्र अपने ऐरावत हाथी पर सवार होकर जा रहे थे, उसी मार्ग से ऋषि दुर्वासा भी माला पहनकर गुजर रहे थे। प्रसन्न होकर ऋषि दुर्वासा ने अपनी माला फेंककर इंद्र के गले में डाली लेकिन इंद्र उसे संभाल नहीं पाए और वो माला ऐरावत हाथी के गले में पड़ गई। हाथी ने सिर को हिला दिया और वो माला जमीन पर गिर गई। इससे ऋषि दुर्वासा नाराज हो गए और उन्होंने श्राप दे दिया कि जिसके कारण तुम इतना अहंकार कर रहे हो, वो पाताल लोक में चली जाए। इस श्राप के कारण माता लक्ष्मी पाताल लोक चली गईं।लक्ष्मी के चले जाने से इंद्र व अन्य देवता कमजोर हो गए और दानव मजबूत हो गए। तब जगत के पालनहार नारायण ने महालक्ष्मी को वापस बुलाने के लिए समुद्र मंथन करवाया। देवताओं और राक्षसों के प्रयास से समुद्र मंथन हुआ तो इसमें कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन भगवान धनवंतरि निकले। इसलिए इस दिन धनतेरस मनाई जाती है और अमावस्या के दिन लक्ष्मी बाहर आईं। इसलिए हर साल कार्तिक मास की अमावस्या पर माता लक्ष्मी की पूजा होती है। दिवाली का त्योहार चातुर्मास के दौरान आता है। इस बीच श्रीहरि योग निद्रा में होते हैं।उनकी निद्रा भंग न हो, इसलिए दिवाली के दिन लक्ष्मी माता के साथ उनका आवाह्न नहीं किया जाता। ऐसे में माता महालक्ष्मी अपने दत्तक पुत्र भगवान गणेश के साथ घरों में पधारती हैं। इसके अलावा एक वजह ये है कि माता लक्ष्मी को धन और ऐश्वर्य की देवी हैं। अगर धन और ऐश्वर्य किसी के पास ज्यादा आ जाए तो उसे अहंकार हो जाता है।मति भ्रष्ट हो जाती है। ऐसा व्यक्ति अहंकार के चलते धन को संभाल नहीं पाता।

प्रचलित मान्यता के अनुसार, दिवाली की रात, लक्ष्मी ने विष्णु को अपने पति के रूप में चुना और उनसे विवाह किया। मान्यता यह है कि इस दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु ने कृष्ण के रूप में अपने 8वें अवतार में राक्षस नरकासुर का विनाश किया था। राक्षस नरकासुर वर्तमान असम के निकट प्रागज्योतिषपुर का दुष्ट राजा था। शक्ति ने राक्षस राजा को अहंकारी बना दिया और वह अपनी प्रजा और यहाँ तक कि देवताओं के लिए भी खतरनाक हो गया। उसने आतंक के शासन के साथ शासन किया । इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया थ। इस नृशंस राक्षस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दिए जलाए ।

जैन मतावलंबियों के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली को ही है। इन तमाम घटकों के एक साथ जुड़ने की वजह से दीपावली का दिन बेहद खास हो जाता है।

महाकाव्य महाभारत के अनुसार, कार्तिक अमावस्या की रात को पांचों पांडव भाई पत्नी द्रौपदी और माता कुंती के साथ 12 साल का वनवास बिताने के बाद हस्तिनापुर लौटे थे। वे पूरे हस्तिनापुर शहर को चमकीले मिट्टी के दीयों से रोशन करते हैं। माना जाता है कि पांडवों की वापसी की याद में दीये जलाने की इस परंपरा को दिवाली का त्योहार मनाकर जीवित रखा गया है।

राजा विक्रमादित्य प्राचीन भारत के महान सम्राट थे। वह आदर्श राजा थे। उन्हें उनकी उदारता, साहस के लिए जाना है। कहा जाता है कि कार्तिक अमावस्या को ही उनका राज्याभिषेक हुआ था। ऐसे धर्मनिष्ठ राजा की याद में तभी से दीपावली का त्योहार मनाया जाता है।

धनतेरस, धनवंतरी जयंती, का का यह महोत्सव आपके जीवन में सुख-समृद्धि और स्वास्थ्य धन से परिपूर्ण हो

हम में 'हमारे' से बड़ा लगाव है। उसे दिन-रात पुष्ट/फ्रेम करने में ही लगे रहते हैं।

सबसे पहले अपने मन से यह भ्रम निकाल दीजिए कि हम किसी की ज़िंदगी में महत्वपूर्ण हैं या कोई हमें अपने जीवन में प्रथम स्थान देता है।

यहां लाख अच्छाईयां हों, लेकिन लोग केवल एक गलती और सही मौके का इन्तजार करते हैं। जैसे ही चीज़ें उनके पक्ष में होती हैं हमें अपने जीवन से तुरंत निकाल कर दूर फेंक देते हैं। ध्यान रहे कि यही सच है कि इस संसार में हम अकेले हैं। लोग हमें स्वार्थी कहेंगे परंतु उन्हें नजरंदाज कर देना। जीवन के एक पड़ाव पर हमें स्वार्थी हो जाना, बुरी बात नहीं है। यहां हर कोई अपना भला करना चाहता है उनकों हमारे कुछ होने या कुछ न होने से कोई मतलब नहीं है। वह तो हर हालत में, दूसरे को अपने से नीचे देखना/दिखाना चाहतें हैं। जहां कोई अपने से ऊंचा/श्रेष्ठ हुआ नहीं कि शत्रुता सिर उठाने लगती है। यहां प्रत्येक प्रतिस्पर्धा में है कि 'मैं ऊंचा उठूं' लेकिन दूसरा हमसे ऊपरी पायदान पर होते ही, शत्रु बन जाता है भले वह भाई-भाई ही क्यों न हों? ध्यान रहे कि प्रतिस्पर्धा हमारा सुख-चैन छीन लेती है। मिल जाये कुछ तो और न मिले तो, दुख ही दुख है। इसलिए जो कुछ भी मिला है उसे धन्यवाद के साथ स्वीकार करें।

कार्य/कर्म तो करना ही है, यह व्यायाम है। यह प्राप्त शक्ति का अहोभाव के साथ व्ययन है, इसमें सुख है, आनन्द है। लेकिन हर समय किसी के लिए उपलब्ध रहना मात्र बेवकूफी/मूर्खता है। होश रहे कि यदि हमने अपना मूल्य नहीं जाना तो दूसरे उसका महत्व कैसे समझ सकतें हैं?

दीपावली की भीड़ को देखते हुए दिल्ली मेट्रो का बड़ा फैसला- पिंक, मैजेंटा और ग्रे लाइनों का बदला टाइमटेबल

दिल्ली मेट्रो ने दीपावली पर यात्रियों की संभावित भीड़ को ध्यान में रखते हुए बड़ा फैसला लिया है। पिंक, मैजेंटा और ग्रे लाइनों पर ट्रेनों के समय में बदलाव किया गया है। इस बदलाव का उद्देश्य यात्रियों को सुगमता प्रदान करना है, जिससे वे बिना किसी परेशानी के अपनी यात्रा कर सकें। ट्रेनों की संख्या में वृद्धि की गई है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दीपावली पर घर से बाहर निकलकर खुशियों की खरीदारी करने वालों या यात्रा पर निकल रहे लोगों की सहूलियत को देखते हुए दिल्ली मेट्रो ने बड़ा एलान किया है। यह जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा की है। इसके तहत दीवाली की पूर्व संध्या पर पिंक, मैजेंटा और ग्रे लाइनों की मेट्रो सेवा की समय सारिणी में फेरबदल किया गया है।

दिल्ली मेट्रो रेल निगम ने एक्स पोस्ट में जानकारी दी कि...

"दीवाली की पूर्व संध्या (19 अक्टूबर) को पिंक, मैजेंटा और ग्रे लाइनों पर मेट्रो सेवाएं, जो सामान्यतः रविवार को सुबह 7:00 बजे शुरू होती हैं, इस दिन सुबह 6:00 बजे से शुरू होंगी।

सोमवार (20 अक्टूबर) को दीवाली के अवसर पर अंतिम मेट्रो सेवा सभी लाइनों के टर्मिनल स्टेशनों से रात 10:00 बजे शुरू होगी, जिसमें एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन भी शामिल है।

दीवाली के दिन बाकी समय में मेट्रो सेवाएं सभी लाइनों पर सामान्य समय पर पूर्व निर्धारित शेड्यूल के अनुसार संचालित होंगी।" ऐसे में यह जानकारी मेट्रो से यात्रा करने वालों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। वहीं, त्योहारी सीजन को देखते हुए, दिल्ली पुलिस ने 18 से 21 अक्टूबर तक चांदनी चौक और आसपास के बाजारों में होने वाले उत्सवों को ध्यान में रखते हुए ट्रैफिक एडवाइजरी जारी की है।

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने एक दीया शहीदों के नाम से इक्यावन हजार मिट्टी के दीये वितरण किया

परिवहन विशेष न्यूज

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू संरक्षक हरीश चन्द पाण्डेय के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से भारतीय सेना के शहीद जवानों के सम्मान में दीपावली की शुभ संध्या पर शहीद जवानों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक दीया शहीदों के नाम से संस्था पदाधिकारियों ने हल्द्वानी कालाढूंगी चौराहा में स्टॉल लगाकर इक्यावन हजार मिट्टी के दीये और बत्ती के पैकेट वितरण किया।

इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था कोषाध्यक्ष बलराम हालदार मार्गदर्शक धरम पाल ने संयुक्त रूप से कहा कि भारतीय सेना के जवान अपनी जान की परवाह न करते हुए भारत एवं भारतवासियों को हमेशा सुरक्षित रखते है क्योंकि भारतीय सेना के जवान हजारों फुट की ऊंचाई पर अपनी हड्डियाँ गलाकर दुश्मनों की हर हरकत पर पैनी निगाह रखते हुए दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देकर दुश्मनों को संभलने का मौका भी नहीं देते है तब जाकर हम अपने घरों में सुरक्षित रहते है और तब हम अपने सारे त्योहारों को हर्ष उल्लास पूरी खुशी के साथ भयमुक्त होकर मना पाते है इसलिए भारतीय सेना के शहीद जवानों के बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता इसीलिए एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था भारतीय सेना के शहीद जवानों के सम्मान में एक दीया शहीदों के नाम से इक्यावन हजार मिट्टी के दीये और बत्ती के पैकेट बनाकर आम जनमानस को वितरण कर रही है जिससे हम सभी दीपावली पर एक दीया शहीदों के नाम जलाकर अपने शहीदों को श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति श्रद्धा भाव प्रकट कर उनके बलिदान को हमेशा याद रखें और ये हम सभी भारतीयों का परम कर्तव्य है

इस क्रम में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि यातायात निरीक्षक महेश चंद्रा ने लोगों को दीये के पैकेट वितरण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया

इस दौरान दीये पैकेट बांटने में संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू संरक्षक हरीश चन्द पाण्डेय कोषाध्यक्ष बलराम हालदार मार्गदर्शक धरम पाल अलका टंडन पूर्णिमा रजवार जया जोशी तारा टकवाल रिंकी गुप्ता रेनू कांडपाल नमन तिवारी पूनम गुप्ता योगिता बनोला सूरज मिस्त्री दीपा रावत कुसुम बोरा वंश प्रजापति खुशी नागर मनीष साहू अमन कुमार सुशील राय पंकज कुमार सूरज कुम्हार दीपक कुमार मुकेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

रोशन हो संसार

खुशहाल जीवन रोशनी का संसार
जगमगाता रहें हमारा घर-द्वार
दीप जलायें हम सभी
दीपावली की खुशियों से रोशन हो संसार।
मिटें ये अन्धकार अमावस्या पर
सकारात्मकता का प्रकाश हो चारों ओर
फूलझड़ी अनार राकेट बम पटाखे जलायें बच्चे सावधानी से
दीपावली की खुशियों में रोशन हो संसार।
खील पताशे मिठाई गुजिया मठरी बने
घर घर
व्यंजनों की खुशबू से महकें घर
रहे नहीं कही भी अंधेरा रोशनी में नहाये
दीपावली की खुशियों में रोशन हो संसार।।

हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़ नसिया इन्दौर

दीपों की आभा में लौटे भारतीय संस्कृति — मिट्टी के दियों से रोशन करे घर-आँगन

डॉ. शम्भू पंवार

भारत की सांस्कृतिक परंपराओं में दीपावली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आध्यात्मिक आलोक का उत्सव है। इसे दीपोत्सव और प्रकाश पर्व भी कहा जाता है। यह पर्व अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक है। जब घर-आँगन में मिट्टी के दीप जलते हैं, तो केवल उजाला नहीं फैलता, बल्कि हमारे भीतर की चेतना भी आलोकित होती है।

दीपावली का पर्व कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है, किंतु इसका आरंभ दो दिन पहले धनतेरस से होता है। धनतेरस के दिन धन के देवता कुबेर और मां लक्ष्मी की आराधना की जाती है। इस दिन सोना-चांदी, बर्तन या नए वस्त्र खरीदना शुभ माना जाता है। इसके बाद नरक चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज— इन पाँच दिनों तक पूरा भारत दीपों की श्रृंखला से जगमगाता रहता है।

मिट्टी के दीपक का धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय महत्व

भारतीय सनातन परंपरा में मिट्टी के दीपक का विशेष स्थान है। कोई भी धार्मिक या मांगलिक कार्य बिना दीपक के अधूरा माना जाता है।

*दीपक केवल प्रकाश का साधन नहीं, बल्कि पांच तत्वों का संगम है।

*मिट्टी — पृथ्वी का प्रतीक, स्थिरता और धैर्य का द्योतक।

*तेल (सरसों का तेल) — शनि का प्रतीक, कर्म और सहनशीलता का प्रतीक।

*बाती (कपास) — जल का प्रतिनिधि, जो भावनाओं और करुणा का प्रतीक है।

***अग्नि — ऊर्जा, तेज और ज्ञान का प्रतीक।**

*हवा (प्राणवायु) — जो लौ को जीवंत बनाए रखती है, जीवन की गति का प्रतीक है।

मिट्टी के दीए से उठता प्रकाश न केवल घर को, बल्कि आत्मा को भी प्रकाशित करता है।

इससे निकलने वाला धुआँ वातावरण में मौजूद जीवाणुओं को नष्ट करता है और सरसों के तेल से जलने वाला दीप पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करता। इस प्रकार मिट्टी का दीपक धार्मिक आस्था, पर्यावरणीय संतुलन और आत्मिक शांति — तीनों का सुंदर संगम है।

पौराणिक परंपराओं की ओर लौटने की आवश्यकता

आधुनिक युग में भौतिक आकर्षण और चकाचौंध ने हमें अपनी मूल जड़ों से दूर कर दिया था। कुछ वर्षों से बाजार में विदेशी, विशेषकर चाइनीज लाइटें, इलेक्ट्रॉनिक झालरें और प्लास्टिक के दीपक छा गए थे, जिनसे न केवल भारतीय कारीगरों की आजीविका प्रभावित हुई, बल्कि पर्यावरण भी प्रदूषित हुआ। किन्तु अब एक नई चेतना जाग रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "वोकल फॉर लोकल" और "आत्मनिर्भर भारत" के आह्वान ने जनमानस में स्वदेशी के प्रति विश्वास जगाया है। आज भारतवासी फिर से मिट्टी की सौंधी महक और परंपरागत मूल्यों की ओर लौट रहे हैं। इस दीपावली हर घर-आँगन में यह संकल्प गूंज रहा है। "इस बार दीपावली स्वदेशी, अपनी मिट्टी के दीयों से मनाएँगे।"

कुम्भकारों के चेहरे पर लौटी मुस्कान

कुम्भकार केवल मिट्टी के कारीगर नहीं, वे संस्कृति के रक्षक और परंपरा के वाहक हैं। प्राचीन काल से यह वर्ग मिट्टी को आकार देकर दीपक, कलश, पात्र आदि बनाता आया है। एक समय था जब दीपावली के अवसर पर यही कुम्भकार सबसे अधिक व्यस्त रहते थे। उनका पूरा परिवार मिलकर हजारों दीप बनाता था और दीपोत्सव की रोशनी में उनकी मेहनत दमक उठती थी।

लेकिन जब बाजार विदेशी उत्पादों से भर गया, तो इन कुम्भकारों की चाक लगभग थम सी गई। उनके घरों के दीप बुझने लगे, और वर्षों की परंपरा संकट में आ गई। परंतु इस वर्ष फिर वही रौनक लौट आई है। स्वदेशी की भावना और मिट्टी के दीप जलाने की प्रवृत्ति ने कुम्भकारों के चेहरे पर फिर से मुस्कान ला दी है। गाँव-गाँव में चाक फिर घूमने लगे हैं, हाथों में मिट्टी की सौंधी गंध और आँखों में उम्मीद की चमक लौट आई है। दीपावली का सच्चा अर्थ— भीतर और बाहर दोनों का आलोक। दीपावली केवल बाहरी रोशनी का त्योहार नहीं, बल्कि भीतर के अंधकार को मिटाने का पर्व है। जब हम मिट्टी के दीप जलाते हैं, तो वह हमें यह भी स्मरण कराता है कि "जैसे दीप अंधकार मिटाता है, वैसे ही ज्ञान और करुणा जीवन के अंधकार को दूर करते हैं।"

आइए इस दीपोत्सव पर हम सब संकल्प लें कि इस वर्ष केवल घर ही नहीं, हृदय भी मिट्टी के दीयों से रोशन करें। हमारे उत्सव में प्रकृति की सुगंध, परंपरा की आस्था और स्वदेशी का गौरव झलके — यही सच्ची दीपावली होगी।

आओ, लौट चलें अपनी जड़ों की ओर — मिट्टी के दियों से रोशन करें भारत का हर घर और हर मन।

(वर्ल्डरिकॉर्डहोल्डर)*
अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार विचारक

ईशिका सक्सेना कम उम्र में हासिल किया बड़ा मुकाम

परिवहन विशेष न्यूज

ईशिका सक्सेना जिन्होंने बहुत ही कम उम्र में बदायूं जनपद का प्रतिनिधित्व इंटरनेशनल ट्रेड शो ग्रेटर नोएडा एक्सपो में किया जहां 40 देशों ने प्रतिभाग किया ओर 22 बर्ष की आयु में अपना व्यवसाय हैंड मेड ज्वैलरी ओडिलिया द पर्ल टाउन स्थापित करके ट्रेडमार्क भी अप्लाई कर दिया कम उम्र में ये बहुत बड़ा कार्य है जिसके लिए महिला शशक्तिकरण के अंतर्गत रामलीला महोत्सव बदायूं के समापन समारोह में केंद्रीयमंत्री B L वर्मा के द्वारा युवा महिला उद्यमी अवार्ड से सम्मानित किया गया इस मौके पर दातागंज विधायक राजीव कुमार सिंह बब्बू भइया व शहर विधायक महेश चन्द्र गुप्ता व जिला अध्यक्ष राजीव कुमार गुप्ता हरसहाय श्यामलाल सूर्य प्रकाश आदि लोग उपस्थित रहे।

शीर्षक - दीपोत्सव

दीपोत्सव कुछ इस तरह से चलो हम मनाएं,
हर घर हो दीवाली थोड़ा अपना धर्म निभाएं,
प्रभु श्री राम जी के गुणों को जीवन में उतारें,
अपने अनमोल जीवन को सद्गुणों से संवारे ।

खुशियों की फुलझड़ियाँ घर-घर टिमटिमाएं,
मिलजुल कर हम त्यौहार सौहार्द पूर्ण मनाएं,
नकारात्मक विचारों की करें तगड़ी सफाई,
मन मंदिर में आत्म "आनंद' की हो रोशनाई ।

मुस्कुराहटों का घर-घर नव दीप करें प्रज्वलित,
प्रकृति का कण-कण हो सुवासित प्रफुल्लित,
जगमग करे अंतर्मन का जागृत दिव्य प्रकाश,
घर, परिवार, समाज और राष्ट्र का हो विकास ।

दीप्तिमान, समृद्धिवान, वैभवशाली हो जीवन,
बरसे धरती पर शुद्धता सौंदर्यता का नव यौवन,
अनार, चकरी रंग बिरंगी रोशनियों के चाव का,
करें हम नव सृजन भीतर प्रेम करुणा भाव का ।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु

आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद !
रचना (स्वरचित व सर्वाधिकार सुरक्षित)

शुभ दीवाली

शुभ दीवाली आ गई, झूम रहा संसार।
माँ लक्ष्मी का आगमन, सजे सभी घर द्वार।।

*

सुख वैभव सबको मिले, मिले प्यार उपहार।
सच में सौरभ हो तभी, दीवाली त्यौहार।।

*

दीवाली का पर्व ये, हो सौरभ तब खास।
आ जाए जब झोंपड़ी, महलों को भी रास।।

*

जिनके स्वच्छ विचार हैं, रखे प्रेम व्यवहार।
उनके सौरभ रोज ही, दीवाली त्यौहार।।

*

दीवाली उनकी मने, होय सुखी परिवार।
दीप बेच रोशन करे, सौरभ जो घर द्वार।।

*

मैंने उनको भेंट की, दीवाली और ईद।
जान देश के नाम कर, जो हो गए शहीद।।

*

फीके-फीके हो गए, त्योहारों के रंग।
दीप दिवाली के बुझे, होली है बेरंग।।

*

नेह भरे मोती नहीं, खाली मन का सीप।
सूख गई हैं बातियाँ, जलता कैसे दीप।।

*

बाती रूठी दीप से, हो कैसे प्रकाश।
बैठा मन को बांधकर, अंधियारे का पाश।।

*

-डॉ सत्यवान सौरभ

सांसदों के लिए बने ब्रह्मपुत्रा अपार्टमेंट में लगी भीषण आग, दो बच्चियों समेत महिला झुलसी

दिल्ली के ब्रह्मपुत्रा अपार्टमेंट के स्टाफ क्वार्टर में आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। आग लगने की वजह से दो बच्चियों समेत एक महिला झुलस गई और कई वाहन जलकर खाक हो गए। स्थानीय लोगों ने फायर फाइटिंग पाइप में पानी न होने की शिकायत की। दमकल विभाग के देरी से पहुंचने पर भी सवाल उठाए गए हैं।

नई दिल्ली। सांसदों के लिए बने ब्रह्मपुत्रा अपार्टमेंट के स्टाफ क्वार्टर में शनिवार दोपहर आग लग गई। सोसायटी के लोगों ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन सीपीडब्ल्यूडी के फायर फाइटिंग पाइप में पानी नहीं होने की वजह से वह आग नहीं बुझा सके। करीब 40 मिनट बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पाया। इस बीच टावर के पास खड़ी दो कारें, एक स्कूटी सहित घर में रखा सामान जलकर नष्ट हो गया। आग लगने की घटना में दो बच्चियां व एक महिला भी झुलस गई। आशंका है कि शार्ट सर्किट या कबाड़ तक चिंगारी पहुंचने से आग लगी है।

डॉ. बिशंबर दास मार्ग पर ब्रह्मपुत्रा अपार्टमेंट का उद्घाटन वर्ष 2020 में हुआ था। इसका निर्माण आठ बंगले तोड़कर किया गया था, जो लगभग 80 साल पुराने थे। इसमें कुल 76 नए फ्लैट्स हैं, जिसमें से 28 फ्लैट राज्यसभा सदस्यों के हैं। अपार्टमेंट में पीछे की तरफ बने टावर में पहली, दूसरी व तीसरी मंजिल पर करीब 30 फ्लैट हैं, इनमें राज्यसभा सदस्यों के कर्मचारी परिवार के साथ रहते हैं। स्टाफ क्वार्टर वाले टावर में भूतल पर कर्मचारी दोपहिया वाहन पार्क करते हैं।

करीब डेढ़ साल पहले सीपीडब्ल्यूडी ने पार्किंग एरिया पर कब्जा कर उसे अवैध तरीके से स्टोर रूम बना दिया था। उसी में रखे पुराने फर्नीचर में शनिवार दोपहर करीब 1.18 आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि पहली, दूसरी और तीसरी मंजिल को अपने कब्जे में ले लिया। कर्मचारियों ने दोपहर 1.22 बजे फायर बिग्रेड को इसकी सूचना दी। आरोप है कि सूचना मिलने के 40 मिनट के बाद फायर ब्रिगेड के 14 वाहन मौके पर पहुंचे। इन वाहनों ने करीब 40 मिनट में 2.10 बजे तक आग पर काबू पा लिया।

इस बीच आग की चपेट में आकर दो सगी बहनें जीविका व मधु समेत एक महिला मामूली रूप से झुलस गई। एक पालतू कुत्ता भी झुलस गया। इसके अलावा टावर के पास खड़ी दो

कारें, एक स्कूटी व अन्य सामान पूरी तरह जल गया। स्टाफ क्वार्टर में रहने वाले मनोज साहू ने बताया कि आग लगने पर कर्मचारियों ने परिसर में लगे फायर फाइटिंग पाइप से खुद ही आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन पाइप में पानी न होने के कारण वे आग नहीं बुझा पाए। उनका यह भी आरोप है कि ब्रह्मपुत्रा अपार्ममेंट से करीब पांच मिनट की दूरी पर संसद भवन के पास अग्निशमन विभाग का आफिस है। समय पर सूचना देने के बाद भी फायर बिग्रेड की गाड़ियां करीब 40 मिनट देरी से पहुंचीं।

हादसे ने दिखाई दावों की हकीकत

अग्निशमन विभाग से लेकर तमाम एजेंसियां दावा कर रही हैं कि दीवाली पर आग से निपटने के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। लेकिन, ब्रह्मपुत्रा अपार्टमेंट में हुए हादसे ने दीवाली पर आग से निपटने के इंतजाम के दावों की हकीकत दिखा दी है। राज्यसभा सदस्यों के निवास स्थान वाले अपार्टमेंट में ही जब फायर फाइटिंग पाइप सूखा पड़ा है तो राजधानी की अन्य सोसायटियों में आग बुझाने के इंतजाम कैसे होंगे। इसका अंदाजा लगाया जा रहा है। इस घटना ने अग्निशमन विभाग के सोसाटियों का सर्वे कर आग के इंतजाम की जांच किए जाने के दावे को भी कठघरे में खड़ा कर दिया है।

खुशियों की दीपावली : मन की अंधियारी दूर करने का समय

(रोशनी बाहर नहीं, मन के भीतर जलाएं दीये, रिश्तों और सुकून से रौशन होती है असली दीपावली।)

दीपावली केवल दीप जलाने का पर्व नहीं, बल्कि मन के अंधकार को मिटाने और आत्मा में उजाला भरने का अवसर है। आज यह जरूरी है कि हम इसे दिखावे या प्रदूषण का उत्सव न बनाएं, बल्कि सादगी, करुणा और प्रेम का पर्व बनाएं। जब हम दूसरों के जीवन में रोशनी बाँटते हैं, तभी सच्चा सुख और सुकून प्राप्त होता है। दीपावली का असली अर्थ है — हर मन में शांति, हर घर में प्रेम और हर समाज में समरसता का प्रकाश।

- डॉ प्रियंका सौरभ

दीपावली वर्ष का वह पर्व है जो केवल अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर के तमस को मिटाकर आत्मिक प्रकाश जगाने का संदेश देता है। यह वह दिन है जब लोग घरों को सजाते हैं, दीपक जलाते हैं, नए वस्त्र पहनते हैं और मिठाइयाँ बाँटते हैं। परंतु क्या हमने कभी ठहरकर सोचा है कि असली दीपावली क्या केवल घर की सफाई और रोशनी से पूरी हो जाती है? क्या वास्तव में वह अंधकार, जिसके नाश के लिए यह पर्व मनाया जाता है, केवल दीवारों और आँगन में होता है या हमारे मन और व्यवहार में भी कहीं छिपा है?

आज का समाज बाहरी चमक में इतना उलझ गया है कि भीतर की रोशनी मद्धम पड़ती जा रही है। दीपावली अब अक्सर दिखावे, खर्च और प्रतिस्पर्धा का उत्सव बनती जा रही है। लोग इस दिन अपने घर को हजारों लाइटों से सजा देते हैं, लेकिन अपने मन के कोनों में बसे अंधकार — ईर्ष्या, अहंकार, असंतोष और असहनशीलता — को नजरअंदाज कर देते हैं। त्योहार का असली उद्देश्य यही था कि हम अपने भीतर झाँकें, संबंधों को सहेजें और अपने चारों ओर स्नेह की रोशनी फैलाएं। मगर आज यह भावना बाज़ार और भौतिकता के शोर में खोती जा रही है।

दीपावली केवल लक्ष्मी के आगमन का नहीं बल्कि आत्ममंथन का भी समय है। जब हम घर के हर कोने की धूल झाड़ते हैं, तो दरअसल हमें अपने मन की धूल भी झाड़नी चाहिए — पुरानी शिकायतें, मतभेद, कटुता और तनाव। हर दीपक यह याद दिलाता है कि अंधकार मिटाने के लिए केवल एक दीप ही काफी होता है, बशर्ते वह सच्चे मन से जलाया गया हो। परिवार में एक छोटी सी मुस्कान, एक क्षमा का भाव, एक प्रेमपूर्ण संवाद — यही वे दीप हैं जो रिश्तों के कोनों को रोशन करते हैं।

आज के दौर में यह पर्व मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में भी बहुत मायने रखता है। तेज़ भागदौड़, सामाजिक दबाव, कामकाजी तनाव और डिजिटल दुनिया की भागमभाग में इंसान भीतर से खाली होता जा रहा है। त्यौहारों को भी हमने एक "इवेंट" बना दिया है — फोटोशूट, सोशल मीडिया पोस्ट और महंगे तोहफों की परंपरा ने उसकी आत्मा को कमजोर कर दिया है। हमें यह याद रखना होगा कि दीपावली का आनंद केवल बाहरी सजावट में नहीं, बल्कि उस मानसिक सुकून में है जो हमें अपनेपन, संवाद और आत्मीयता से मिलता है।

आजकल के बच्चे और युवा पटाखों की चमक में खुशियाँ ढूंढते हैं। लेकिन क्या हमें यह अधिकार है कि अपनी खुशी के लिए पर्यावरण को प्रदूषित करें? धुएं और शोर से भरी हवा में सांस लेता हर जीव, हर बच्चा और हर बुजुर्ग इस खुशी की कीमत चुका रहा है। असली आनंद तो तब है जब हमारे दीपक किसी को कष्ट न दें। जब हम धरती माँ के प्रति भी उतने ही संवेदनशील हों जितने अपने घर के प्रति। पर्यावरण के अनुकूल दीपावली मनाना अब केवल विकल्प नहीं, जिम्मेदारी बन चुकी है। मिट्टी के दीप, प्राकृतिक रंगों की सजावट और स्थानीय उत्पादों का उपयोग करके भी हम इस पर्व को सुंदर बना सकते हैं — और यह सौंदर्य कृत्रिम रोशनी से कहीं अधिक स्थायी है।

दीपावली के अवसर पर एक और अंधकार मिटाने की आवश्यकता है — वह है अकेलेपन और मानसिक बेचैनी का अंधकार। त्योहार का मौसम बहुतों के लिए उत्सव का होता है, लेकिन कुछ लोगों के लिए यह यादों और उदासी का समय भी होता है। जिनके अपने दूर हैं, जो किसी प्रिय को खो चुके हैं, या जो आर्थिक और सामाजिक संघर्षों से जूझ रहे हैं — उनके लिए यह रोशनी कई बार चुभन का कारण बनती है। ऐसे में समाज का कर्तव्य है कि वह अपने आसपास के ऐसे लोगों को भी इस रोशनी में शामिल करे। दीपावली का असली अर्थ तभी पूर्ण होगा जब किसी के घर का अंधकार भी हमारे दीप से दूर हो।

हमारे शास्त्र कहते हैं — तमसो मा ज्योतिर्गमय — यानी हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाना चाहिए। यह प्रकाश केवल दीपक का नहीं बल्कि ज्ञान, विवेक और करुणा का है। जब मन में करुणा का प्रकाश जलता है, तो वह हजारों दीपकों से अधिक उजाला फैलाता है। दीपावली हमें यही सिखाती है कि जीवन में प्रकाश फैलाना केवल दिए जलाने का नहीं, बल्कि दया, सत्य और प्रेम की राह पर चलने का प्रतीक है।

त्योहारों का मकसद केवल परंपरा निभाना नहीं होता। वे हमें रुककर सोचने का अवसर देते हैं कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। दीपावली हमें याद दिलाती है कि जो प्रकाश बाहर है, वह तभी स्थायी होगा जब भीतर भी उजाला हो। जब हम अपने भीतर के राम को जगाते हैं और रावण रूपी अहंकार, द्वेष और लालच को जलाते हैं, तभी सच्ची दीपावली मनती है।

आज के समय में यह भी जरूरी है कि हम दीपावली को "समावेशिता का पर्व" बनाएं। समाज में विभाजन की दीवारें, जाति-धर्म के मतभेद, आर्थिक असमानता — ये सब हमारे युग के अंधकार हैं। अगर हर व्यक्ति अपने स्तर पर थोड़ा सा प्रकाश फैला सके — किसी गरीब को भोजन दे दे, किसी बच्चे की शिक्षा में सहयोग करे, किसी बीमार को सहारा दे — तो वही दीपावली सबसे उज्ज्वल होगी। असली लक्ष्मी वही है जो करुणा, दया और सेवा के रूप में घर में प्रवेश करे।

दीपावली व्यापार का भी पर्व मानी जाती है। यह समय होता है जब बाजारों में रौनक रहती है, कारोबारियों की आशाएं बढ़ती हैं। लेकिन व्यापारी समुदाय को भी यह नहीं भूलना चाहिए कि सच्चा लाभ केवल आर्थिक नहीं, नैतिक भी होता है। ईमानदारी, पारदर्शिता और ग्राहक के प्रति सम्मान ही वह पूंजी है जो लंबे समय तक टिकती है। जब बाजार में विश्वास का दीप जलेगा, तभी समाज समृद्ध होगा।

हमारी संस्कृति में यह भी कहा गया है कि "दीपावली केवल संपन्नता का नहीं, संयम का भी प्रतीक है।" इसलिए अत्यधिक उपभोग, दिखावा और प्रतिस्पर्धा से बचना ही सच्ची श्रद्धा है। यह पर्व हमें सिखाता है कि "थोड़े में भी बहुत" कैसे पाया जा सकता है। जिस घर में प्रेम, संतोष और एकता है, वहाँ हर दिन दीपावली है।

आज जरूरत है कि हम दीपावली को एक आध्यात्मिक और सामाजिक आंदोलन के रूप में देखें। हर व्यक्ति अपने जीवन में एक संकल्प ले — कि वह किसी न किसी रूप में प्रकाश फैलाएगा। कोई ज्ञान के दीप जलाएगा, कोई सहायता का, कोई प्रेम का। जब हर व्यक्ति एक दीप बनेगा, तो समाज में ऐसा उजाला फैलेगा जिसे कोई अंधकार मिटा नहीं सकेगा।

कभी-कभी यह भी आवश्यक है कि हम इस पर्व को कुछ पल की शांति के साथ मनाएँ। आत्मचिंतन के कुछ क्षण, अपने प्रियजनों के साथ समय बिताना, और अपनी उपलब्धियों व कमियों पर विचार करना भी दीपावली का हिस्सा होना चाहिए। जब हम अपने भीतर के दीप से मार्ग रोशन करते हैं, तो जीवन में दिशा स्पष्ट होती है।

दीपावली का अर्थ केवल "दीप" नहीं, "आवली" अर्थात श्रृंखला भी है। यह श्रृंखला बताती है कि प्रकाश एक से दूसरे तक पहुँचता है। यही मानवता का मूल संदेश है — एक दीप दूसरे को जलाए, एक दिल दूसरे को रोशन करे। तभी यह संसार अंधकार से मुक्त हो सकेगा।

अंततः, इस दीपावली पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम केवल अपने घर को नहीं, बल्कि अपने विचारों, व्यवहारों और समाज को भी प्रकाशित करेंगे। शोर और प्रदूषण से दूर, सरलता और स्नेह से भरी दीपावली ही सच्चे अर्थों में "खुशियों और सुकून की दीपावली" होगी। यही दीपक भारत की संस्कृति का प्रतीक बनेगा — जहाँ रोशनी केवल बिजली से नहीं, बल्कि इंसानियत से फैलती है।

दीपावली : कानपुर के कई इलाकों में पुलिस की मिलीभगत से सजीं जुएं की फड़ें

– दीपावली के अलावा भी कई थाना क्षेत्रों में खुलेआम कराया जाता है जुआं। बदले में थानेदार की होती है प्रतिमाह लाखों की कमाई

सुनील बाजपेई

कानपुर। प्रदेश के इस अतिसंवेदनशील जिले में दीपावली के त्यौहार को सकुशल तरीके से संपन्न कराने के लिए यहां की पुलिस अपराधी अराजक तत्वों के खिलाफ पूरी तरह से सतर्क है। इस दौरान जुआ खेलने वाले या फिर शराब पीकर हुड़दंग करने वालों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई भी की जा रही है।वहीं आउटर पुलिस की भी सतर्कता महाराजपुर ,बिल्लौर, सचेंडी, बिधनू ,सचेंडी नरवल, चौबेपुर ,शिवराजपुर घाटमपुर सजेती आज थाना क्षेत्रों में भी नजर आई।

कुल मिलाकर दीपावली के इस पावन पर्व को सकुशल का पूर्ण तरीके से संपन्न कराने के लिए अधिकारियों की ओर से सभी पुलिस कर्मियों को आवश्यक आदेश निर्देश पहले ही दिए जा चुके हैं।, जिसके फलस्वरूप दीपावली के त्यौहार को सफल और शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस दौरान अधिकारियों ने किसी भी तरह की लापरवाही बरतने वाले पुलिसकर्मियों को उनके विरुद्ध भी कार्रवाई किए जाने की चेतावनी भी दी।

दूसरी विभागीय सूत्रों का दावा यह भी है कि कई थाना क्षेत्रों में पुलिस की मिलीभगत से लाखों के जुआंड़ खानों का भी संचालन किया जा रहा है। मतलब पुलिस ही पैसे लेकर जमा करवा रही है। यद्यपि ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है हर साल यहां दीपावली पर इसी तरह से जुए की फड़ पुलिस की मिलीभगत से ही लगभग हर थाना क्षेत्र में सजाई जाती है। और और इनमें से अधिकांश जुआंड खानों को पकड़ा तभी जाता है। जब संबंधित इलाके के थानेदार को अपनी कुर्सी खतरे में पड़ती दिखाई पड़ती है। वरना ना केवल दीपावली बल्कि पूरे साल जुआ घरों का संचालन पुलिस की ही मिलीभगत से होता रहता है। सूत्रों की माने तो अपने इलाके में जुआं करवाने के बदले हर थानेदार को प्रतिमाह लाखों की कमाई होती है।

दीपावली पर विशेष

:: गरीबों की मांग ::

दीप मालिके वापस जाओ।
दीप मालिके वापस जाओ।।

स्वागत कैसे करुं तुम्हारा।
स्वागत का कुछ नहीं सहारा॥
या पहले "साधन "दिलवाओ,
दीप मालिके वापस जाओ।
दीप मालिके वापस जाओ।

पहले ही संताप बहुत है।
हर "अभाव" का ताप बहुत है ॥
कैसे इसका करुं समापन,
हो हिम्मत सहाय बन जाओ।
दीप मालिके वापस जाओ।
दीप मालिके वापस जाओ।

जब भी तुम वापस आती हो,
वे खुश, मुझको गम लाती हो।
हालातों को कब तक झेलूं,
कोई तो अब राह बताओ।

दीप मालिके वापस जाओ।
दीप मालिके वापस जाओ।।

इच्छाओं का सागर गहरा,
उस पर भी अभाव का पहरा।
प्रभु कहने का साहस दिलवाओ।

दीप मालिके वापस जाओ।
दीप मालिके वापस जाओ।।

- सुनील बाजपेई

संत रामपाल जी महाराज द्वारा चलाए अन्नपूर्णा अभियान के तहत नौं परिवारों को सहायता सामग्री प्रदान

परिवहन विशेष न्यूज

संगरूर,(जगसीर लोगोंवाल) - मानवता की सेवा को समर्पित अन्नपूर्णा अभियान के तहत संत रामपाल जी महाराज के सेवादारों ने बठिंडा में आठ जरूरतमंद और असहाय परिवारों को सहायता सामग्री वितरित की। इसमें राशन आटा ,चावल, कई प्रकार की दालें, नमक , मिर्ची पाउडर, मसाले, साबुन, शर्फ आदि 23 प्रकार की सामग्री सहित घर की जरूरत का सारा समय शामिल है। यह मानवता की सेवा कार्य संत रामपाल जी महाराज के दिशा-निर्देशों अनुसार देशभर में चलाए जा रहे अन्नपूर्णा अभियान का हिस्सा है। इस अभियान का उद्देश्य है कि कोई भी परिवार भूखा न रहे और हर जरूरतमंद को जीवन की आवश्यक वस्तुएं निःस्वार्थ भाव से मिलती रहें।सेवादारों ने बताया कि यह अभियान किसी धर्म या जाति से नहीं जुड़ा, बल्कि मानवता को सर्वोपरि मानने वाला सेवा अभियान है। संत रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में हमेशा कहते हैं— "सबसे बड़ा धर्म है— दूसरों की भलाई करना।" सेवादारों ने बताया कि नेपाल सहित पूरे भारत में चल रही इस मुहिम के तहत पंजाब में 200 से अधिक परिवारों की निरंतर सहायता की जा रही है। आने वाले दिनों में बठिंडा और आसपास के गांवों में भी इसी प्रकार की सहायता जारी रहेगी। उन्होंने यह भी कहा कि जिन परिवारों को सहायता की आवश्यकता होती है संत रामपाल जी महाराज के सेवादार स्थानीय लोगों की मदद से उनसे संपर्क करते हैं। अब तक अन्नपूर्णा अभियान के माध्यम से देशभर में हजारों जरूरतमंद परिवारों तक राशन, कपड़े और दवाइयों की सहायता पहुंचाई जा चुकी है। अनेकों लाचार और जरूरतमंद परिवारों को मकान भी बना कर दिए गए हैं।

पदयात्रा से हृदययात्रा तक: निर्मला देशपांडे "दीदी" का जीवन

निर्मला देशपांडे का नाम सुनते ही मन में उभर आती है वह जीवंत छवि—सफेद खादी की साड़ी लपेटे एक सौम्य स्त्री, हिंसा की लपटों से तपते इलाकों में शांति का अमृत बरसाती हुई, तिरंगा थामे सीमाओं के पार मित्रता के सेतु रचती चली जाती। 1929 की वह शरद सुबह नागपुर में, जब स्वतंत्रता संग्राम की गूंज अभी तरोताजा थी, विमला और पुरुषोत्तम यशवंत देशपांडे के साहित्यिक आंगन में एक बालिका ने जन्म लिया। पिता पुरुषोत्तम, मराठी साहित्य के यशस्वी रचनाकार, जिन्हें 1962 में 'अनामिकाची चिंतनिका' पर साहित्य अकादमी सम्मान मिला, तथा माता विमलाबाई, जे. कृष्णमूर्ति की गहन अनुयायी विदुषी—ऐसे दार्शनिक-साहित्यिक परिवेश में पोषित निर्मला ने पुस्तकों से कहीं अधिक समाज की कठोर वास्तविकताओं को आत्मसात किया। नागपुर के मॉरिस कॉलेज से राजनीति विज्ञान में एम.ए. प्राप्त कर लेक्चरर बनीं, किंतु कक्षा की संकुचित दीवारों से परे विशाल, कराहते संसार ने उन्हें आह्वान किया। विवाह का त्याग कर उन्होंने गांधीवादी त्रयी—अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय—को जीवन का सार बना लिया। यह प्रतिज्ञा केवल संकल्प न थी, अपितु एक क्रांतिकारी विद्रोह थी, जो 1952 में विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से जुड़कर साकार हो उठी।

कल्पना कीजिए उस युवती को—चप्पलों में बंधे साधारण चरण, कंधे पर लटका एक मामूली थैला, भारत के कोने-कोने में 40,000 किलोमीटर की अथाह पदयात्रा करती हुई। विनोबा के भूदान अभियान की धुरी पर अडिग खड़ी निर्मला, जहां जमींदारों से भूमि संग्रह कर भूमिहीनों को वितरित किया जाता था, 'मानसकन्या' के रूप में उनकी आध्यात्मिक संतान बनीं। गांव-गांव ठहरकर गांधी के ग्राम स्वराज का संदेश प्रज्वलित किया—एक आत्मनिर्भर समाज की कल्पना, जहां हिंसा का स्थान शांति ग्रहण करे। किंतु यह यात्रा कांटों भरी थी: रेगिस्तानी धूल के तूफान, हिमालयी शीतलहरी, बाढ़ की प्रलयंकारी धारा—सबका सामना किया। एक बार उन्होंने कहा, "गांधीवादी सिद्धांतों का पालन कठिन है, किंतु पूर्ण लोकतांत्रिक समाज का यही एकमात्र पथ।" इस आंदोलन ने हजारों एकड़ भूमि गरीबों तक पहुंचाई, अहिंसा को मात्र शब्द न बनाकर कर्म का स्वरूप प्रदान किया।

1980 के दशक में जब पंजाब सिख-हिंदू दंगों की भयंकर ज्वाला में सुलग रहा था, निर्मला देशपांडे वहां पहुँचीं मानो कोई करुणामयी माँ अपने संतापी संतानों को आलिंगन में भरने। उन्होंने शांति मार्च का उद्घाटन किया, जिसमें सैकड़ों महिलाएँ उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलीं, नारे लगाते हुए। कश्मीर की रक्तरंजित घाटियों में, जहाँ 1990 के दशक में आतंकवाद ने शांति को बंधक बना लिया था, 1994 में उन्होंने शांति मिशन का सूत्रपाण कर कश्मीरी पंडितों और मुसलमानों के बीच विश्वास के पुल खड़े किए। एक बार उन्होंने हृदयस्पर्शी स्वर में कहा, "कश्मीर हमारा हृदय है, इसके घावों को करुणा से भरना हमारा परम कर्तव्य।" 2002 के गुजरात दंगों की विभीषिका में उन्होंने 'सांझी विरासत' फोरम गढ़ा, जहाँ लेखक, कलाकार और कार्यकर्ता एकजुट हो सांप्रदायिक विष का मुकाबला करने को लामबंद हुए। दंगों की भयावहता के बीच वे सड़कों पर धरना देकर बैठीं, लोगों को आह्वान करतीं कि "सांप्रदायिकता एक घातक विष है, जो समूचे समाज को निगल डालता है।" आदिवासियों और महिलाओं के उत्थान का उनका अविरल संकल्प नदी की प्रबल धारा सा था—आदिवासी अंचलों में जाकर शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन के बीज रोपे; महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु कार्यशालाओं में वे प्रेरित करतीं, "महिला वह अमूल्य बीज है, जो समाज को हरित वन बनाती है।" साम्प्रदायिक सौहार्द का उनका जुनून सीमाओं को लाँघता हुआ अंतरराष्ट्रीय पटल पर चमका। 1996 में भारत-पाकिस्तान शांति वार्ता का मंच रचकर दोनों देशों के सांसदों को एक मेज पर बिठाया, संवाद की ज्योति प्रज्वलित की। 2000 में 'महिलाओं की शांति बस' को दिल्ली से लाहौर पहुँचाया, जिसमें भारतीय-पाकिस्तानी नारियाँ एकजुट होकर शांति का संदेश बिखेर गईं। उनकी मृत्योपरांत पाकिस्तान ने 13 अगस्त 2009 को 'सितारा-ए-इम्तियाज' से सम्मानित कर उनके योगदान को अमर किया। तिब्बत के दमन के विरुद्ध आवाज बुलंद की, चीनी अत्याचारों का खंडन किया। 2006 में अफजल गुरु की क्षमा याचिका का डटकर समर्थन करते हुए कहा, "न्याय हिंसा की आग से नहीं, करुणा के सरित से बहता है।" 1984 में अखिल भारतीय रचनात्मक समाज (एबीआरएस) की स्थापना कर उन्होंने गांधीवादी संस्थाओं का एक महासंघ गढ़ा, जिसकी पत्रिका 'नित्य नूतन' उनके दार्शनिक चिंतन का जीवंत प्रतिबिंब बनी—आज भी क्राउडफंडिंग से प्रकाशित होकर प्रेरणा बाँटती। एबीआरएस ने साम्प्रदायिक सद्भाव, विश्व शांति और राष्ट्रीय एकता के लिए असंख्य कार्यकर्ताओं को संगठित किया। 'निर्मला दीदी', जैसा उन्हें स्नेह से पुकारा जाता, ने सदैव उद्घोष किया, "शांति कोई स्वर्गीय उपहार नहीं, अपितु अथक संघर्ष की विजय है।"

राजनीति में उनका प्रवेश भी गांधीवादी सादगी और सत्याग्रह की ज्योति से प्रज्वलित था। 1997 और 2004 में राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा की मनोनीत सदस्य के रूप में संसद की पवित्र चौखट पर खड़ी होकर वे साम्प्रदायिक हिंसा के विरुद्ध, महिला सशक्तिकरण की पुकार और पर्यावरण संरक्षण के आह्वान के साथ उद्घोष करती रहीं। 2007 में राष्ट्रपति पद की दौड़ में प्रतिभा पाटिल के साथ उनका नाम चमका—यदि स्वास्थ्य साथ देता, तो भारत की प्रथम राष्ट्रपति एक गांधीवादी नारी होतीं, जो अहिंसा का त्रिशूल थामे राष्ट्र को दिशा देतीं। किंतु वे पदलोलुपता से ऊपर रहीं, सादगी की मिसाल बनीं। 2005 में नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित, उसी वर्ष राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार और 2006 में पद्म विभूषण से अलंकृत हुईं; 5 नवंबर 2007 को उपराष्ट्रपति द्वारा 'राष्ट्र गौरव पुरस्कार' प्रदान किया गया। ये सम्मान उन्हें मोहित न कर सके—वे वही निर्मला दीदी रहीं, खादी की साड़ी में लिपटी, हृदय में करुणा का सागर लिए।

निर्मला देशपांडे का जीवन एक जीवंत महाकाव्य था, जो सिद्ध करता है कि एक अकेला व्यक्ति समूचे समाज को परिवर्तित कर सकता है। नक्सलियों को वे "दलितों-आदिवासियों के न्याय की पुकार" मानतीं, किंतु हिंसा का कठोर खंडन करतीं। इंदिरा गांधी की इमरजेंसी का प्रारंभिक समर्थन लोकतंत्र रक्षा के भाव से किया, परंतु पश्चात गहन खेद व्यक्त कर आत्मचिंतन की मिसाल बनीं। मृत्यु से पूर्व नेपाल के माओवादियों से संवाद की तैयारी में थीं, गांधीवाद को जड़ों में उतारते हुए—पर्यावरण संतुलन, सीमित आवश्यकताएँ और वैश्विक एकता के सिद्धांतों पर। "वसुधैव कुटुम्बकम्" को उन्होंने केवल श्लोक न बनाकर जीवन-दर्शन का मूलाधार किया। 1 मई 2008 को दिल्ली में शांतिपूर्ण विदाई ली, निद्रा में विलीन होकर। किंतु उनकी विरासत अमर है—आज ध्रुवीकरण की आंधी में उनकी वाणी गूंजती है: "शांति का पथ कंटकाकीर्ण है, किंतु यही सत्य का एकमात्र मार्ग।" उनकी साहित्यिक वेणी भी कम आकर्षक न थी—उपन्यास 'सीमांत' में महिलाओं की मुक्ति का संग्राम चित्रित, 'चिमलीग' में चीनी संस्कृति की गहन पड़ताल। वे प्रेरित करतीं, "साहित्य विचारों का सच्चा आलोक है।" आदिवासी नारियों के उत्थान में शिक्षा को अचूक अस्त्र बनाया। गुजरात दंगों के बाद 'आध्यात्म ज्योति' फोरम रचकर धर्म को विभाजन न बनाकर एकता का सूत्र बाँधा। तिब्बतियों के दमन के विरुद्ध मानवाधिकारों की ज्वाला प्रज्वलित की। उनका जीवन गांधीवाद की शाश्वतता का प्रमाण है—पुरातन न होकर कालातीत। वे गर्व से कहतीं, "मैं गांधी की संतान हूँ, भारत की पुत्री।" 19 अक्टूबर को उनकी जयंती पर सूर्योदय के साथ हम चिंतन करते हैं—कितनी निर्मला चाहिए, जो पदयात्रा से अधिक हृदय-यात्रा करें। उनका परलोकगमन एक युग का अवसान था, किंतु प्रेरणा का उद्गम अमर। उनके चरणचिह्नों पर चलकर ही वह भारत साकार होगा, जो गांधी ने सपना बुना—शांत, समृद्ध, सर्वसमावेशी। निर्मला देशपांडे न केवल शांति सिपाही थीं, अपितु शांति की जीवंत मूर्ति; उनकी जयंती हमें स्मृत कराती है कि सच्चा संघर्ष कभी निष्फल न जाता।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

छोटी दिवाली या नरक चतुर्दशी 19 अक्टूबर 2025 -अंधकार से प्रकाश ,अहंकार से विनम्रता और नरक से मुक्ति का आध्यात्मिक पर्व

एडवोकेट किशन सनमुखदासभावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराएँ विश्वभर में अपनी गहराई, आध्यात्मिकता और मानवता के संदेश के लिए जानी जाती हैं। दीपावली का पंचदिवसीय महापर्व केवल एक उत्सव नहीं बल्कि मानव जीवन के आत्मिक उत्थान का प्रतीक माना जाता है। इस पंचदिवसीय श्रृंखला का दूसरा दिन "छोटी दिवाली" या "नरक चतुर्दशी" कहलाता है। वर्ष 2025 में यह पावन दिवस 19 अक्टूबर को मनाया जाएगा। इस दिन का महत्व केवल दीप प्रज्ज्वलन तक सीमित नहीं, बल्कि यह मानव जीवन के भीतर बसे अंधकार, नकारात्मकता और अहंकार को मिटाने का प्रतीकात्मक संदेश देता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह पर्व भारत ही नहीं, बल्कि विश्वभर में बसे भारतवंशियों के बीच भी समान श्रद्धा और उल्लास से मनाया जाता है। छोटी दिवाली केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि यह मानवता के भीतर छिपे अंधकार, जैसे अहंकार, लोभ, ईर्ष्या, क्रोध और मोह, पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। चूँकि हमें अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण से जानना कि आखिर छोटी दिवाली को नरक चतुर्दशी क्यों कहा जाता है, इस दिन किसकी पूजा की जाती है और यह पर्व क्यों मनाया जाता है?

साथियों बात अगर हम छोटी दिवाली को नरक चतुर्दशी क्यों कहा जाता है, इसको जानने की करें तो अधर्म, अहंकार और अंधकार पर धर्म, नम्रता और प्रकाश की विजय का प्रतीक हैं, छोटी दिवाली का नाम "नरक चतुर्दशी" इसलिए पड़ा क्योंकि यह दिन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा राक्षस नरकासुर के वध से जुड़ा हुआ है। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, नरकासुर नामक असुर ने अत्याचार और अधर्म का साम्राज्य स्थापित कर रखा था। उसने पृथ्वी और स्वर्ग दोनों लोकों को आतंकित कर रखा था। नारी की अस्मिता का अपमान, साधुओं का अपमान और दैवीय शक्तियों को चुनौती देना उसका स्वभाव बन गया था। अंततः भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण अवतार में, अपनी पत्नी सत्यभामा के साथ मिलकर उसका अंत किया। कहा जाता है कि जब नरकासुर का वध हुआ, तो उसने अंतिम समय में श्रीकृष्ण से वरदान मांगा कि उसकी मृत्यु के दिन जो लोग स्नान और दीपदान करें, उन्हें नरक का भय न रहे। भगवान श्रीकृष्ण ने यह वरदान स्वीकार किया। तभी से यह दिन "नरक चतुर्दशी" के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसका अर्थ है, वह चतुर्दशी जो नरक से मुक्ति का मार्ग दिखाए। छोटी दिवाली इसीलिए कही जाती है क्योंकि यह मुख्य दिवाली के एक दिन पहले आती है, और इसमें दीप जलाने की परंपरा आरंभ हो जाती है। परंतु इसके पीछे का भाव कहीं अधिक गहरा है, यह दिन हमें सिखाता है कि असली नरक बाहर नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर छिपे अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष और असत्य के रूप में है। जब हम इनसे मुक्त होते हैं, तब सच्ची "छोटी दिवाली" हमारे जीवन में आती है-जब हम अपने भीतर के अंधकार को सटीक दूर कर आत्मिक प्रकाश जलाते हैं आधुनिक वैश्विक संदर्भ में यदि देखें तो "नरक चतुर्दशी" एक सार्वभौमिक संदेश देती है कि प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के भीतर जो अंधकार, अन्याय, हिंसा, लालच और भेदभाव, फैला हुआ है, उसे सत्य, सद्भाव और प्रकाश से मिटाना ही सच्चा उत्सव है। यह दिन हर व्यक्ति को यह याद दिलाता है कि नरकासुर जैसी प्रवृत्तियाँ हर युग में मौजूद रहती हैं, बस उनके रूप बदलते रहते हैं। आज का नरकासुर पर्यावरण प्रदूषण, लालच आधारित अर्थव्यवस्था, असमानता, और मानसिक तनाव के रूप में हमारे जीवन को घेर रहा है। इसलिए छोटी दिवाली का संदेश आधुनिक समय में पहले से भी अधिक प्रासंगिक है।

साथियों बात अगर हम नरक चतुर्दशी के दिन किसकी पूजा की जाती है, इसको समझने की करें तो, नरक चतुर्दशी के दिन तीन प्रमुख देवताओं की पूजा की परंपरा है, यमराज, भगवान श्रीकृष्ण, और देवी लक्ष्मी। (क) यमराज पूजा-इस दिन यमराज की पूजा का विशेष महत्व है। पौराणिक मान्यता के अनुसार जो व्यक्ति नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले स्नान कर यमराज को दीपदान करता है, उसे मृत्यु का भय नहीं सताता और उसे यमलोक का दर्शन नहीं करना पड़ता। इसे "यम दीपदान" कहा जाता है। घर के बाहर दक्षिण दिशा में एक दीप जलाकर कहा जाता है, ₹मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालिना श्यामया सह। त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतां मम ॥₹ इसका अर्थ है कि इस दीप के माध्यम से मैं यमराज को प्रसन्न कर उनसे दीर्घायु और सुखमय जीवन की प्रार्थना करता हूँ। (ख) श्रीकृष्ण पूजा-भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन अधर्म पर विजय प्राप्त की थी, इसलिए उन्हें विजयी और धर्म के रक्षक के रूप में पूजा जाता है। भक्त उनके चरणों में पुष्प, फल और दीप अर्पित करते हैं। उनके साथ देवी सत्यभामा की भी पूजा की जाती है, क्योंकि नरकासुर के वध में देवी का योगदान महत्वपूर्ण रहा था। (ग) लक्ष्मी पूजा और रूप चौदस-

इस दिन "रूप चौदस" भी कहा जाता है। प्रातःकाल तेल स्नान, उबटन, और शुद्धिकरण के बाद सौंदर्य और स्वास्थ्य की देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। माना जाता है कि जो व्यक्ति इस दिन स्नान और शुद्ध आचरण करता है, उसके शरीर और मन में दीर्घकालिक सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है। रूप चौदस के दिन स्त्रियाँ और पुरुष दोनों अपने रूप, स्वास्थ्य और आभा की रक्षा के लिए स्नान, तेल, चंदन और सुगंधित वस्तुओं का उपयोग करते हैं। यह न केवल धार्मिक बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शरीर से विषाक्त तत्वों को निकालने और त्वचा को स्वस्थ रखने का उपाय माना गया है। आधुनिक वैश्विक समाज में जहां "वेलनेस" और "मेंटल हेल्थ" की चर्चा प्रमुख हो गई है, नरक चतुर्दशी की यह परंपरा हमें यह बताती है कि आत्मिक और शारीरिक शुद्धता दोनों का संगम ही सच्चा स्वास्थ्य है।

साथियों बात अगर हम नरक चतुर्दशी क्यों मनाई जाती है इसको समझने की करें तो, आत्मशुद्धि, पाप मुक्ति और प्रकाश की ओर मानव यात्रा का उत्सव हैं, नरक चतुर्दशी का मुख्य उद्देश्य केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और पापमुक्ति का मार्ग है। यह पर्व हमें यह स्मरण कराता है कि जीवन में हर मनुष्य से भूलें होती हैं, और उन भूलों से ऊपर उठने के लिए आत्मचिंतन, स्नान और दीपदान के माध्यम से हम भीतर का "नरक" साफ कर सकते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जो व्यक्ति इस दिन सूर्योदय से पहले स्नान करता है, वह पापों से मुक्त होता है। इस स्नान को "अभ्यंग स्नान" कहा जाता है। यह केवल शारीरिक शुद्धि नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक शुद्धि का भी प्रतीक है। कहा जाता है कि तेल से स्नान करने से शरीर से नकारात्मक ऊर्जा निकलती है, और मन में प्रकाश का प्रवेश होता है। नरक चतुर्दशी हमें यह सिखाती है कि हर व्यक्ति के भीतर दो शक्तियाँ होती हैं, एक अंधकारमय (नरकासुर जैसी) और दूसरी प्रकाशमय (कृष्ण जैसी)। इस दिन हम अपने भीतर की अंधकारमय प्रवृत्तियों, जैसे क्रोध, लोभ, द्वेष, असत्य, आलस्य और नकारात्मक विचारों का वध करने का संकल्प लेते हैं। जब व्यक्ति इस अंतर्द्वंद से ऊपर उठता है, तभी वह सच्चा "प्रकाश" प्राप्त करता है। आज जब पूरी दुनिया तनाव, असमानता, युद्ध और आत्मकेंद्रित जीवनशैली से जूझ रही है, तब नरक चतुर्दशी जैसे पर्व वैश्विक समाज को यह प्रेरणा देते हैं कि आत्मशुद्धि, विनम्रता और प्रकाश की ओर बढ़ना ही मानवता का मार्ग है। यह केवल धार्मिक दिन नहीं बल्कि "स्पिरिचुअल रीसेट डे" कहा जा सकता है, जब हम अपने भीतर के अंधकार को पहचानते हैं और उसे मिटाने का संकल्प लेते हैं।

साथियों बातें अगर हम छोटी दिवाली का सांस्कृतिक, सामाजिक और वैश्विक महत्व की करें तो, भारत में छोटी दिवाली का उत्सव केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक एकता, पारिवारिक प्रेम और सामूहिक स्वच्छता का भी प्रतीक है। गाँवों और नगरों में लोग इस दिन अपने घरों की अंतिम सफाई करते हैं, मिट्टी के दीये जलाते हैं, और पड़ोसियों के साथ मिठाइयाँ बांटते हैं। यह पर्व समाज में "साझा प्रकाश" का संदेश देता है कि अंधकार केवल अपने घर से नहीं, पूरी बस्ती से मिटाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में छोटी दिवाली का संदेश सार्वभौमिक है, यह केवल भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं। आज अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में बसे भारतीय समुदाय इस दिन न केवल दीप जलाते हैं बल्कि स्थानीय समाज को भी इसमें शामिल करते हैं। संयुक्त राष्ट्र, यूरोपियन संसद और कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ दीपावली को "ग्लोबल सेलिब्रेशन ऑफ़ लाइट" के रूप में मान्यता दे चुकी हैं। ऐसी स्थिति में छोटी दिवाली का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यह मुख्य दीपावली से एक दिन पहले मानवता के भीतर के नरक को मिटाने की तैयारी का दिन है। नरक चतुर्दशी का गूढ़ अर्थ केवल पौराणिक कथा तक सीमित नहीं है। "नरक" का अर्थ है, मानसिक पीड़ा, अवसाद, लालच, और वह अंधकार जो मनुष्य के भीतर उसे असत्य के मार्ग पर ले जाता है। "चतुर्दशी" का अर्थ है — पूर्णता के पूर्व की अवस्था, अर्थात् वह क्षण जब प्रकाश पूरी तरह प्रकट होने वाला है। इसलिए नरक चतुर्दशी का दिन आत्मिक परिवर्तन का समय है, जब मनुष्य अपने भीतर झाँककर कहता है: "अब मैं अंधकार से मुक्त होकर प्रकाश की ओर बढ़ूँगा।" यह आत्मसंवाद ही नरक चतुर्दशी का सार है। श्रीकृष्ण का नरकासुर वध केवल बाह्य घटना नहीं, बल्कि एक प्रतीक है, जब मनुष्य अपनी इच्छाओं और नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करता है, तब वह "नरकासुर" का अंत करता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि इस प्रकार छोटी दिवाली या नरक चतुर्दशी केवल दीपों का पर्व नहीं, बल्कि आत्मज्ञान, शुद्धि और अहंकार मुक्ति का दिन है। यह हमें सिखाती है कि असली उत्सव बाहर नहीं, भीतर मन में होता है। जब हम अपने भीतर के अंधकार को दूर करते हैं, तो पूरी दुनिया रोशन होती है। इस दिन किया गया दीपदान केवल घर के द्वार को नहीं, बल्कि आत्मा के द्वार को भी प्रकाशित करता है। यमराज की आराधना हमें मृत्यु का भय नहीं, बल्कि जीवन के प्रति सजगता सिखाती है। श्रीकृष्ण की पूजा हमें धर्म की रक्षा और अन्याय के अंत का संदेश देती है, जबकि लक्ष्मी पूजा हमें सिखाती है कि सौंदर्य केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक पवित्रता में निहित है। छोटी दिवाली 2025 इसीलिए केवल एक तिथि नहीं, बल्कि मानवता को यह स्मरण कराने का अवसर है कि जब तक भीतर का अंधकार मिटेगा नहीं, तब तक बाहर के दीप अधूरे रहेंगे। यह पर्व विश्व के हर कोने में रहने वाले व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा है, "हम अपने भीतर का नरकासुर समाप्त करें, तभी सच्ची दिवाली आएगी।"

नागरिक परिक्रमा : (संजय पराते की राजनैतिक टिप्पणियां)

1. नफरत की राजनीति में पत्रकारिता की छौंक!

अमित शाह ने दिल्ली में दैनिक जागरण के पूर्व प्रधान संपादक नरेंद्र मोहन की स्मृति में व्याख्यान दिया। व्याख्यान का विषय था : घुसपैठ, जन सांख्यिकी परिवर्तन और लोकतंत्र। नरेंद्र मोहन की वैचारिक प्रतिबद्धता किसी से छुपी हुई नहीं थी। वे भाजपा से राज्यसभा सदस्य थे। वे विचारधारात्मक रूप से संघी गिरोह के साथ थे और उनकी स्मृति में किसी व्याख्यान के होने का अर्थ संघी विचारधारा का प्रचार-प्रसार होना ही जो सकता था, जैसा कि अमित शाह ने अपने व्याख्यान के जरिए किया भी। व्याख्यान के लिए सुसज्जित मंच भी किसी समाचार पत्र के आयोजन का मंच नहीं लग रहा था, क्योंकि वह अखंड हिंदू राष्ट्र और सनातन का उदघोष करते हुए धार्मिक मंच के रूप में ही सज्जित था।

घुसपैठियों के बारे में बोलना इस समय भाजपा और संघी गिरोह का प्रिय शगल है। बिहार विधानसभा और उसके बाद होने वाले चुनावों में वे इसी नैरेटिव को सेट करना चाहते हैं कि हमारे देश के अस्तित्व को असली खतरा घुसपैठियों से हैं और इशारों में वे मुस्लिमों की ओर उंगली उठाते हैं। मुस्लिम बांग्लादेशी घुसपैठियों से हमारे देश के भर जाने का वे शोर मचा रहे हैं। मुस्लिम इसलिए कि

संघी गिरोह को मुस्लिमों से ही दिक्कत है, हिंदू घुसपैठियों से नहीं। यदि कोई हिंदू घुसपैठिया है, तो वह संघी गिरोह के लिए शरणार्थी हैं, जिसको वे नागरिकता देना चाहते हैं।

किसी वैचारिक व्याख्यान की अपनी गरिमा होती है। पाठक और श्रोता यह अपेक्षा रखते हैं कि व्याख्यान देने वाला आंकड़ों को तोड़े मरोड़े बिना, ठोस तथ्यों और तर्कसंगत आधार पर अपनी बातों को रखेगा। लेकिन अमित शाह जैसे जुमलेबाजों से इतनी न्यूनतम अपेक्षा रखना भी गलत साबित हुआ। संघी गिरोह का एकमात्र उद्देश्य अल्पसंख्यकों के प्रति नफरत फैलाना है और यही काम उन्होंने किया। आखिरकार, संघ के वफादार चाकर जो वे ठहरे।

अपने संबोधन में शाह ने घुसपैठियों को पहचान कर मतदाता सूची से उनका नाम डिलीट करने और अंततः उन्हें डिपोर्ट करने के प्रति मोदी सरकार की प्रतिबद्धता जताई है। स्पष्ट रूप से उनका इशारा पहले बिहार और अब पूरे देश में होने जा रहे एसआईआर की ओर है। इस देश का कोई भी नागरिक नहीं चाहेगा कि किसी भी घुसपैठिए का नाम मतदाता सूची में हो। चुनाव आयोग ने बिहार में एसआईआर की प्रक्रिया पूरी कर ली है और वर्ष 2003 की तुलना में लाखों मतदाताओं के नाम काट दिए गए हैं, लेकिन चुनाव आयोग यह बताने की स्थिति में नहीं है कि इन काटे गए लाखों नामों में कितने घुसपैठिए हैं। एक भी नहीं ! साफ है कि यह मुद्दा मुस्लिम अल्पसंख्यकों को निशाना बनाने के लिए संघी गिरोह का राजनैतिक हथियार है।

गृहमंत्री ने कहा कि मुस्लिम आबादी 24.6 प्रतिशत की दर से बढ़ी है, जबकि हिंदू आबादी में 4.5 प्रतिशत की गिरावट आई है। मुस्लिम आबादी की वृद्धि दर का आँकड़ा 2001 से 2011 के बीच का है। क़ायदे से इसी अवधि में हिंदू आबादी की वृद्धि दर की बात होगी, तभी तुलना हो पाएगी। हिंदू आबादी में आज तक निरपेक्ष गिरावट नहीं हुई है और न कभी नकारात्मक वृद्धि दर देखी गई है। वास्तविकता तो यह है कि जिस अवधि में मुस्लिम आबादी साढ़े चौबीस फ़ीसद की दर से बढ़ रही थी, उसी अवधि में हिंदू आबादी भी 16.8 फ़ीसद की दर से बढ़ रही थी। इसलिए

इस देश में निवास करने वाला कोई व्यक्ति भारतीय नागरिक है या नहीं, इसे जानने के लिए निश्चित स्थापित प्रक्रिया है, जिसके इस्तेमाल पर किसी को भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती। इसकी छानबीन के लिए भारत सरकार का गृह मंत्रालय अधिकृत है। लेकिन कानूनी प्रक्रियाओं का सहारा लिए बिना, केवल संघी गिरोह के शक के आधार पर मुस्लिमों की धर-पकड़ की जा रही है और उन्हें एकतरफा तौर पर, घुसपैठिया कहकर हिरासत में रखा जा रहा है या डिपोर्ट करने की कोशिश की जा रही है। अब यह स्थापित तथ्य है कि ऐसे नागरिकों को, जिन्हें भारत सरकार साफ तौर पर बांग्लादेशी साबित नहीं कर पाई है, बांग्लादेश की सरकार ने भी उन्हें अपनाने से इंकार कर दिया है। ऐसे भी प्रकरण सामने आ गए हैं कि भारतीय नागरिकों को ही, जो मुस्लिम थे और बंगला भाषा बोलते थे, डिपोर्ट करने की कोशिश की गई है और बाद में सरकार को शर्मिंदगी उठानी पड़ी है। साफ है कि घुसपैठियों का मामला इतना आसान नहीं है और उसके साथ संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के अनुसार, मानवाधिकार का मामला भी जुड़ा हुआ है। भारत सरकार ने इस मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर का, जिससे वह बंधी हुई है और मानवाधिकारों का, बार-बार उल्लंघन किया है। इससे मोदी सरकार को अंतर्राष्ट्रीय शर्मिंदगी भी झेलनी पड़ रही है। लेकिन शायद इस सरकार की प्राथमिकता में नफरत की घरेलू राजनीति करना ही है, चाहे इस देश की प्रतिष्ठा की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किरकिरी होती रहे।

साफ है कि गृह मंत्रालय अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करेगा और चुनाव आयोग अपनी संवैधानिक सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए संघी गिरोह के एजेंट के रूप में काम करेगा, तो इस देश में संविधान और लोकतंत्र दोनों खतरे में है। देशव्यापी एसआईआर के निर्णय के बाद यह खतरा बिहार की सीमा से बाहर पैर पसार रहा है। वास्तव में मोदी सरकार एसआईआर के बहाने उस जनता को चुनना चाहती है, जो बार-बार उसे गद्दी में बैठाए और हिंदू राष्ट्र के उसके फासीवादी उद्देश्य को पूरा करने के लिए नफरत की हुंकार लगाए। देश की धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक ताकतों के सामने आज यह सबसे बड़ी चुनौती है।

अमित शाह के भाषण को 'जुमलेबाजी' के सिवा और किसी श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। यह व्याख्यानमाला की गरिमा को गिराने के सिवा और कुछ नहीं है। उन्हें यह भी ख्याल नहीं था कि कुछ बौद्धिक जन भी उनके इस कार्यक्रम में उपस्थित होंगे, जिनके लिए वे केवल जगहंसाई के पात्र ही बनेंगे।

दूसरी बात, क्या किसी व्यक्ति की भारतीय नागरिकता तय करने का अधिकार क्या चुनाव आयोग के पास है? यदि ऐसा है, तो फिर गृह मंत्रालय का क्या काम है, जिसका जिम्मा मोदी सरकार ने अमित शाह को दिया हुआ है? साफ है कि एसआईआर के बहाने मोदी सरकार चुनाव आयोग के जरिए पिछले दरवाजे से एनआरसी लागू करना चाह रही है। जबकि चुनाव आयोग का काम ऐसे सभी दावेदारों को मतदाता के रूप में पंजीकृत करने का है, जो अपने आपको भारतीय नागरिक बताते हुए सरकार द्वारा जारी अनेकानेक पहचान पत्रों में से किसी एक को पेश करते है, और इनमें आधार कार्ड भी शामिल है, जिसे स्वीकार करने का आदेश बिहार एसआईआर के संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को दिया है। अब चुनाव आयोग मनमाने तरीके से किसी व्यक्ति को, उसके माता-पिता, दादा-दादी या नाना-नानी की नागरिकता स्थापित न होने के आधार पर, मतदाता सूची में पंजीकृत करने से इंकार नहीं कर सकता और इस आधार पर, न ही संबंधित व्यक्ति को घुसपैठिया करार दे सकता है। यदि चुनाव आयोग के इस मानदंड को लागू किया जाएगा, तो वास्तव में इस देश की अधिसंख्यक आबादी अपने आपको भारतीय नागरिक ही सिद्ध नहीं कर पाएगी और उसे मतदाता सूची से बाहर होना पड़ेगा। इस प्रकार, प्रभावित होने वालों में केवल अल्पसंख्यक मुस्लिम ही नहीं होंगे, सामाजिक-आर्थिक-शैक्षणिक रूप से पिछड़े तमाम तबके भी शामिल होंगे। इस प्रकार, चुनाव आयोग इस देश के नागरिकों के सार्वभौमिक मताधिकार पर ही हमला कर रहा होगा, जिसकी इजाजत उसे कतई नहीं दी जा सकती।

मोदी सरकार यह दुष्प्रचार कर रही है कि हमारे देश में घुसपैठिए लोकतंत्र और देश के अस्तित्व के लिए खतरा बन चुके हैं। लेकिन ऐसी जुमलेबाजी करने से पहले उसे यह बताना चाहिए कि हमारे देश के लगभग 100 करोड़ मतदाताओं में से घुसपैठिए कितने हैं और उन्हें भारतीय नागरिकता से अलग करने के लिए इस सरकार ने स्थापित लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और कानून के तहत क्या कदम उठाए हैं? यदि पिछले दस सालों में घुसपैठियों के कारण मुस्लिम आबादी बढ़ी है, जैसा दावा अमित शाह ने अपने व्याख्यान में किया है, तो उसके लिए क्या सरकार की कोई जिम्मेदारी नहीं बनती या उसकी उसकी कोई असफलता दर्ज नहीं की जाएगी? यदि शाह का दावा इतना मजबूत है कि हमारे देश में घुसपैठियों ने इतनी बड़ी संख्या में प्रवेश कर लिया है कि वे हमारी चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने और लोकतंत्र का हरण करने की ताकत रखते हैं, तो इस देश में एसआईआर बाद में होना चाहिए, घुसपैठियों को चिन्हित करने का काम पहले होना चाहिए। यदि शाह का दावा मजबूत है, तो खुद मोदी सरकार की वैधता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा होता है, क्योंकि वह इस देश की आम जनता की नहीं, घुसपैठियों की सरकार मानी जाएगी। लेकिन वास्तविकता यही है कि अपने व्याख्यान में अमित शाह कोई तर्कसंगत बात नहीं कर रहे थे, केवल बकलौली कर रहे थे, ताकि संघी गिरोह की राजनीति को आगे बढ़ा सके।

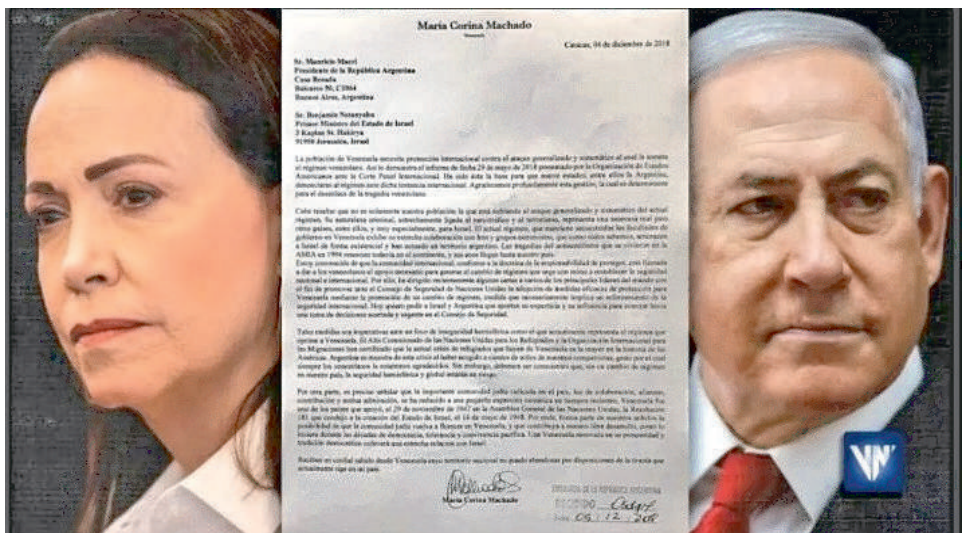

2. नोबेल शांति पुरस्कार अब ट्रंप के चरणों में

ट्रंप हार गए, लेकिन सीआईए की एजेंट जीत गयी ! नोबेल पुरस्कार कमेटी के प्रति ट्रंप का गुस्सा अब थोड़ा शांत हो जाना चाहिए। नोबेल शांति पुरस्कार मारिया कोरिना मचाडो को मिल गया है। वे ट्रंप की प्रिय पात्र हैं, क्योंकि वेनेजुएला में अमेरिकी हितों की रक्षक है। उनसे बड़ा अमेरिका का कोई पैरोकार ट्रंप को नहीं मिला है, जो देश की संपत्ति अमेरिका को बेचने/ सौंपने की ऐसी ढीठ तरफदारी करे।

महात्मा गांधी को यह पुरस्कार कभी नहीं मिला, इसके बावजूद कि समकालीन दुनिया में शांति और अहिंसा का उनसे बड़ा कोई योद्धा पैदा नहीं हुआ। उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े क्रूर शासक और लुटेरे साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों को भी झुकाकर दिखा दिया। जिस अंग्रेजी राज का सूरज दुनिया में डूबता नहीं था, वह भारत में अस्त हुआ और अंग्रेजों को बोरिया बिस्तर समेटकर भागना पड़ा।यह गांधीजी ही थे, जिन्होंने फिलिस्तीन मुक्ति आंदोलन का खुलकर समर्थन किया था। अटल बिहारी की भाजपा सरकार सहित स्वतंत्र भारत की सरकारों को भी उनके दिखाए इस रास्ते पर अमल करना पड़ा। लेकिन महात्मा गांधी को शांति का नोबेल पुरस्कार कभी नहीं मिला।

लेकिन यह उन लोगों को जरूर दिया गया है, जिन्होंने युद्ध को बढ़ावा दिया और अनगिनत निर्दोषों की हत्या की। नोबेल शांति पुरस्कार पाने वाले युद्ध-प्रेमियों की सूची काफी लंबी है। नोबेल विजेता वुडरो विल्सन ने 12 देशों पर हमला किया था और अमेरिका को प्रथम विश्व युद्ध में शामिल करने को सही ठहराने के लिए झूठ का सहारा लिया। एफडीआर के विदेश मंत्री कॉर्डेल हल को नाज़ी जर्मनी से भाग रहे यहूदी शरणार्थियों के अमेरिकी प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने के बावजूद नोबेल पुरस्कार दिया गया। विदेश मंत्री हेनरी किसिंजर और उनके वियतनामी समकक्ष ले डुक थो को संयुक्त रूप से 1973 में वियतनाम शांति समझौते के लिए नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया था, फिर भी किसिंजर ने हस्ताक्षर करने के तुरंत बाद ही इस समझौते को तोड़ दिया था। दक्षिण वियतनामी सरकार ने राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे पर अपने हमले फिर से शुरू कर दिए और अमेरिका ने उत्तरी वियतनाम पर बमबारी फिर से शुरू कर दी थी और यह युद्ध 1975 तक समाप्त नहीं हुआ था। वियतनाम ने इस युद्ध में साम्राज्यवादी अमेरिका की जो दुर्गति की, अब वह इतिहास का विषय है। बराक ओबामा भी अन्य नोबेल विजेताओं की तरह एक युद्ध-प्रेमी ही हैं। पदभार ग्रहण करने के कुछ ही समय बाद उन्होंने अफ़ग़ान युद्ध में 17,000 अतिरिक्त सैनिकों को भेजने का आदेश दिया था और लीबिया पर बमबारी करके उसे तबाह कर दिया। उन्होंने इराक में बुश के युद्ध को जारी रखा और इज़राइल का समर्थन किया। युद्ध-पिपासुओं को नोबेल शांति पुरस्कार मिलना ही इस पुरस्कार के चरित्र को दर्शाता है।

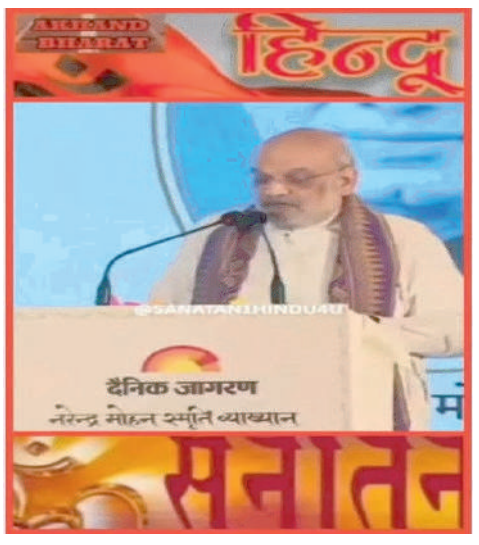

इतिहास का यह कड़वा सबक है कि दुनिया में स्थाई शांति साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़कर ही हासिल की जा सकती है। जो लोग नफरत फैलाने, युद्ध का वातावरण बनाने और अपने देश के हथियार उद्योग के मुनाफे के लिए युद्ध आयोजित करने के दोषी हैं, जिन पर मानवता को बर्बरतापूर्वक कुचलने का कभी न मिटने वाला दाग लगा है, ऐसे लोगों को शांति के नाम पर कोई पुरस्कार दिया जाता है, तो यकीन मानिए कि उस पुरस्कार का चरित्र विशुद्ध राजनैतिक और युद्धोन्मादी ही होगा। शांति के नोबल पुरस्कार का चरित्र भी ठीक ऐसा ही है।

और अब, इस साल का नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया है मारिया कोरिना मचाडो को। यह एक ऐसी महिला है, जिसने वेनेजुएला पर अमेरिकी सैन्य आक्रमण की ट्रम्प की योजना का सार्वजनिक रूप से समर्थन किया है और अमेरिकी नौसेना द्वारा वेनेजुएलावासियों की न्यायेतर हत्या का समर्थन किया है। उसने जनता द्वारा निर्वाचित वेनेजुएला की सरकार पलटने के लिए इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू और अर्जेन्टीना के राष्ट्रपति से सेना भेजने की अपील की थी। वह नरसंहारकारी इज़राइल राज्य का समर्थन करती है और राष्ट्रपति चुनाव जीतने पर अपनी एम्बेसी जेरुशलम में स्थानान्तरित करके इजरायल को पूर्ण समर्थन देने का ऐलान किया था। वह गाजा में इजरायल द्वारा फिलिस्तीनियों के जनसंहार का खुला समर्थन करती है। वह अमेरिका की इच्छानुसार वेनेजुएला के तेल संसाधनों का निजीकरण करके उसे अमेरिका के हाथ में सौंपना चाहती है। बेंजामिन नेतन्याहू, जिसे अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने युद्ध अपराधी घोषित किया है, का उसकी कारगुज़ारियों के लिए खुले आम समर्थन करती है। इस वर्ष का नोबेल शांति पुरस्कार जिसे दिया गया है, वह मारिया कोरिना मचाडो 'देशभक्ति और शांति की' इतनी सारी खूबियों से सुसज्जित हैं ! स्वाभाविक है कि उसने अपना यह पुरस्कार ट्रंप के चरणों में रख दिया है, लेकिन लगता नहीं है कि इससे ट्रंप की नाराजगी कुछ कम होगी। ट्रंप की नाराजगी के बावजूद साम्राज्यवादी मीडिया का मचाडो को लेकर बल्ले-बल्ले करना आसानी से समझ में आता है।

(टिप्पणीकार अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

बिहार की नई राजनीतिक करवट से विकास और सुरक्षा की मिलेगी गारंटी

कमलेश पांडे

बिहार के लोगों को यह भी पता है कि उनके पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जिन अल्पसंख्यकों की राजनीति कर रहे हैं, उससे बंगलादेश का षड्यंत्र सफल हो या न हो, लेकिन पूर्वी भारत निकट भविष्य में रक्तरंजित भी हो सकता है।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025, कई मायने में राष्ट्रीय और सूबाई राजनीति को प्रभावित करेगा, क्योंकि 2026 में पश्चिम बंगाल और 2027 में उत्तरप्रदेश में भी विधान सभा चुनाव होने हैं। यही नहीं, पूर्वी भारत की सुरक्षा को भी यह चुनाव सुनिश्चित करेगा। इस चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए की रीति-नीति, कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन का अंतर्कलह और मशहूर चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की नवस्थापित पार्टी जनसुराज द्वारा उठाए हुए मुद्दे गहरा असर डालेंगे।

वहीं, एआईएमआईएम और अन्य छुटभैये दलों की कोशिशें मतदाताओं के मनोमिजाज पर क्या रंग जमाएंगी और अपने साइलेंट मतदान ट्रेंड से वो क्या गुल खिलाएंगे, इसका पता तो 14 नवंबर को ही पता लग पायेगा, क्योंकि राजनीतिक रूप से यह प्रदेश बहुत ही जागरूक प्रदेश है। महंगाई और बेरोजगारी से जूझ रहे आम बिहारियों के दिल मे अब सामाजिक न्याय से भी ज्यादा हिंदुत्व की लहरें उफान मार रही हैं। क्योंकि उन्हें पता है कि इस्लामिक देशों और चीन-अमेरिका के सहयोग से बनने वाले 'ग्रेटर बंगलादेश' से शांतिप्रिय बिहार भविष्य में गुजरात, राजस्थान, पंजाब और जम्मूकश्मीर की तरह ही युद्ध भूमि भी बन सकता है।

बिहार के लोगों को यह भी पता है कि उनके पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जिन अल्पसंख्यकों की राजनीति कर रहे हैं, उससे बंगलादेश का षड्यंत्र सफल हो या न हो, लेकिन पूर्वी भारत निकट भविष्य में रक्तरंजित भी हो सकता है। इसलिए विकसित, समृद्ध और ज्ञान की संस्कृति की रक्षा के लिए बिहार वासी कुछ ठोस व कड़ा निर्णय भी ले सकते हैं। उन्हें पता है कि इंडिया गठबंधन के राजद, कांग्रेस, भाकपा माले, वीआईपी, वामपंथी दलों की विचारधारा भी पाकिस्तान-बंगलादेश की सरकारों से काफी मिलती जुलती है। इसलिए यदि इन्हें नहीं रोका गया तो संभव है कि भविष्य में ये लोग बिहार को भी उसमें शामिल करवा दें।

ऐसा इसलिए कि टीवी स्क्रीन और सोशल मीडिया पर इंडिया गठबंधन के नेताओं के जो हिन्दू विरोधी बयान और कार्यप्रणाली सामने आती रहती है, इससे बिहार के मतदाता अपने राज्य के भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं। बीते वर्षों में उन्होंने महसूस किया है कि राज्य में जंगलराज (2000-2005) का पर्याय बन चुका राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद का कुनबा और उनके सरदार तेजस्वी यादव, पूर्व उपमुख्यमंत्री जनता दल यूनाइटेड के नेता व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सहयोग से ब्रेक के बाद सत्ता में आ जाते हैं, इसलिए इसबार ऐसा रणनीतिक मतदान किया जाए कि ऐसी किसी सियासी बात की संभावना भी नहीं बचे।

बिहार से जुड़े सूत्र बताते हैं कि सूबे में भाजपा के अलावा जनसुराज का प्रदर्शन अच्छा हो सकता है, क्योंकि लालू प्रसाद और नीतीश कुमार की कारगुजारियों से प्रबुद्ध बिहारी बहुत ही नाराज चल रहे हैं और ग्राम स्तर पर वह नए बिहार का निर्माण करने के लिए एक मुहिम चला रहे हैं। यह गैर धार्मिक और गैर जातीय मुहिम है, जिसका मकसद बिहार के विकास और किसी भी अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र से बिहार की सुरक्षा की बात उनके एजेंडे में है। यही वजह है कि राष्ट्रवादी भाजपा और उसके सहयोगियों के अलावा जनसुराज के प्रत्याशियों की ओर वे करवट ले रहे हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों का भी मानना है कि आपसी दांवपेंच से परेशान एनडीए के नेताओं और बिखरे या कई सीटों पर आपस में ही नूराकुश्ती करने वाले इंडिया गठबंधन के नेताओं के अलावा जो नया विकल्प मौजूद है, उसे ही इस बात मजबूत विपक्ष की जिम्मेदारी मिलने लायक जनसमर्थन दे दिया जाए, इससे राष्ट्रवादी सरकार के बनने और जनहित के मुद्दे पर उसे सक्रिय करने की गारंटी मिल जाएगी। इसलिए सच कहूं तो राजनीतिक अहंकार और बुद्धिजीवियों की बिखरी टंकार के बीच बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की चुनावी लड़ाई दिलचस्प होने जा रही है।

जैसे-जैसे चुनाव प्रचार जोर पकड़ेगा, बुद्धिजीवियों की निर्दलीय और सर्वदलीय राजनीतिक मुहिम तेज होती जाएगी। सीट बंटवारे में जो कलह दिखाई दी, उसके पीछे भी इन्हीं बुद्धिजीवियों के हाथ की खबरें हैं। खासकर कांग्रेस के लिए नई राजनीतिक जमीन तैयार करने वाले बुद्धिजीवी तो इस बात पर अड़े हुए हैं कि किसी भी कीमत पर अपने दूरगामी राजनीतिक हितों से समझौता नहीं करना है। इससे स्पष्ट है कि यूपी में जो गलती 2022 के विधानसभा चुनाव में अखिलेश यादव किये थे, 2025 में वही गलती दुहराकर तेजस्वी यादव भी सियासी रूप से अप्रासंगिक हो जाएंगे। स्पष्ट है कि बिहार की नई राजनीतिक करवट से विकास और सुरक्षा दोनों की गारंटी मिलेगी।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

यूपी की राज्यपाल महिलाओं— बच्चों की बदहाली पर चुप क्यों?

योगेंद्र योगी

उत्तर प्रदेश में स्कूलों में 21.83 लाख नामांकन पिछले साल की तुलना में कम हुए, जबकि बिहार में 6.14 लाख, राजस्थान में 5.63 लाख और पश्चिम बंगाल 4.01 लाख नामांकन कम हुए हैं। उत्तर प्रदेश में मील कवरेज में 5.41 लाख छात्रों की कमी आई।

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने लिव-इन रिलेशनशिप को लेकर एक बार फिर चौंकाने वाला बयान दिया है। उन्होंने महिलाओं और छात्राओं को चेतावनी दी कि अगर सावधानी नहीं बरती गई तो परिणाम भयावह हो सकते हैं। पटेल का कहना है कि दूर रहें, वरना आप 50 टुकड़ों में मिलेंगी। यह टिप्पणी उनके पिछले दावे के ठीक अगले दिन आई, जिसमें उन्होंने कहा था कि लिव-इन रिलेशनशिप का असर देखने के लिए किसी अनाथालय में जाना चाहिए, जहाँ 15 साल की लड़कियाँ अपने बच्चों के साथ कतार में खड़ी होती हैं। राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों और न्यायाधीशों के साथ बैठक में भी छात्रों को लिव-इन रिलेशनशिप से बचाने के उपाय सुझाए थे।

राज्यपाल पटेल का यह बयान निश्चित तौर पर युवतियों को जागरुक करने वाला और लिव इन रिलेशनशिप के खतरों से आगाह करने वाला है। सवाल यही है कि क्या उत्तर प्रदेश की युवतियों और महिलाओं के समक्ष यही एक खतरा है। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल ने महिलाओं से जुड़े सिर्फ एक खतरे के सावचेत रहने की सीख दी है। लिव इन रिलेशनशिप के नकारात्मक पहलू हैं जरूर, लेकिन इस चलन अभी व्यापक रूप से नहीं है। महिला राज्यपाल उत्तर प्रदेश में महिलाओं से जुड़े अन्य खतरों को अनदेखा कर गई, क्योंकि शायद वहां भाजपा की सरकार है। अन्य खतरे लिव इन रिलेनशिप से कहीं ज्यादा गंभीर है। इनका निदान भी सरकार के लिए आसान नहीं है। राज्यपाल ने कभी इन खतरों का जिक्र तक नहीं किया।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के कुल 4,48,211 मामले दर्ज किए गए। इनमें उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 66,381 मामले, उसके बाद महाराष्ट्र में 47,101 और राजस्थान में 45,450 मामले दर्ज किए गए। इन तीनों राज्यों में से महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में वर्ष 2023 में भी भाजपा की सरकारें थी। ऐसे में भाजपा महिला अपराधों की जिम्मेदारी से भाग नहीं सकती। महिलाओं से जुड़े साइबर अपराधों में लखनऊ का देश में चौथा स्थान है, जिसमें अश्लील फोटो-वीडियो और फेक कंटेंट जैसे मामले शामिल हैं। इस श्रेणी में लखनऊ से आगे बैंगलुरु, हैदराबाद और दिल्ली हैं।

उत्तर प्रदेश जहां महिला अपराधों में अग्रणी है, वहीं महिलाओं और बच्चों के अन्य मामलों में पिछड़ा हुआ है। देश के 13 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश के 63 जिलों में 50 फीसदी से अधिक बच्चे आंगनवाड़ियों में नामांकित हैं और कुपोषित पाए गए हैं, जिनमें से 34 जिले अकेले उत्तर प्रदेश के हैं। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के जून 2025 के पोषण ट्रैकर के अनुसार महाराष्ट्र, झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और असम के कुछ जिले सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा 34 जिले ऐसे हैं जहां बच्चों में कुपोषण की दर 50 फीसदी से अधिक है। इसके बाद मध्य प्रदेश, झारखंड, बिहार और असम का स्थान है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक स्वास्थ्य रिपोर्ट (2024-25) के अनुसार, विगत वर्षों में सुधार के बावजूद उत्तर प्रदेश भारत में सबसे अधिक बाल मृत्यु दर वाले राज्यों में शामिल है। रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में प्रत्येक 1,000 बच्चों में से 43 बच्चे अपने पाँचवें जन्मदिन से पहले मर जाते हैं। वर्तमान शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) 1,000 जीवित जन्मों पर 38 है, जबकि नवजात मृत्यु दर(आईएमआर) 28 है। यूनिसेफ इंडिया रिपोर्ट 2020 के अनुसार लगभग 46% मातृ मृत्यु और 40% नवजात मृत्यु प्रसव के दौरान या जन्म के बाद पहले 24 घंटों के भीतर हो जाती हैं।

उत्तर प्रदेश में स्कूलों में 21.83 लाख नामांकन पिछले साल की तुलना में कम हुए, जबकि बिहार में 6.14 लाख, राजस्थान में 5.63 लाख और पश्चिम बंगाल 4.01 लाख नामांकन कम हुए हैं। उत्तर प्रदेश में मील कवरेज में 5.41 लाख छात्रों की कमी आई। यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन (यूडीआइएसई) की वर्ष 2023-24 की रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश के 18 प्रतिशत सरकारी स्कूलों, अर्थात लगभग 27,000 स्कूलों के भवन जर्जर स्थिति में हैं। इनमें से कई स्कूलों की छतें और दीवारें ख़तरनाक स्थिति में हैं। लखनऊ में प्राथमिक विद्यालय और नसीराबाद में छत का प्लास्टर गिरने से दो बच्चे घायल हो गये। नोएडा और गोरखपुर के इलाक़ों से भी ऐसी ही घटनाएँ सामने आ चुकी हैं।

एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन (एएसईआर) 2024 की रिपोर्ट बताती है कि उत्तर प्रदेश के 22 प्रतिशत सरकारी स्कूलों में कार्यशील शौचालय ही उपलब्ध नहीं हैं और 35 प्रतिशत स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग शौचालय नहीं हैं। लगभग 40 प्रतिशत विद्यालयों में तो नियमित स्वच्छता व्यवस्था ही नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या और गम्भीर है, जहाँ शौचालयों की कमी के कारण लड़कियों की ड्रॉपआउट दर में 10-12 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी है। शिक्षा मंत्रालय की 2024-25 की रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश के 28 प्रतिशत सरकारी स्कूलों में पेयजल की सुविधा नहीं है और 40 प्रतिशत स्कूलों में बिजली कनेक्शन उपलब्ध नहीं है। आश्चर्य यह है कि राज्यपाल आनंदी बेन ने उत्तर प्रदेश में महिलाओं और बच्चों से जुड़े इन मुद्दों का कभी जिक्र तक नहीं किया। बेहतर होता कि जिस तरह राज्यपाल पटेल ने लिव इन रिलेशनशिप से युवतियों को आगाह किया, उसी तरह योगी सरकार को भी आगाह करती तो शायद उत्तर प्रदेश में महिलाओं की मौजूदा हालत बेहतर हो सकती थी।

विज्ञान इसकी पुष्टि करता है, घर से काम करना वास्तव में जीवन को बेहतर बनाता है

विजय गर्ग

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय के चार वर्षीय अध्ययन में बताया गया है कि 'कोविड-19 महामारी के दौरान ऑस्ट्रेलिया में घर से काम करना : कर्मचारी घर से काम कर रहे हैं (EWFH) अध्ययन के क्रॉस-सेक्शनल परिणाम' ने दैनिक दिनचर्या को कैसे बदल दिया। एक बार की सवेरे स्थिर होने लगीं, प्रतिभागी औसतन हर रात लगभग तीस मिनट अधिक सोते थे....

जब अलार्म इतनी जल्दी बजना बंद कर दिया, तो कुछ सूक्ष्म बदल गया। सुबह शांत हो गई, नाश्ता थोड़ा अधिक समय तक चला गया और लाखों लोगों के लिए रफ्तार गायब हो गयी। यह शुरू में एक अस्थायी राहत की तरह लग सकता था, लेकिन वैज्ञानिक अब कहते हैं कि इसमें और भी कुछ है।

चार वर्षों तक दूरस्थ श्रमिकों को ट्रैक करने के बाद शोधकर्ताओं ने एक स्पष्ट निष्कर्ष निकाला हैः ₹घर से काम करना हमें समृद्ध बनाता है

दीर्घकालिक डेटा से पता चलता है कि लचीलापन केवल जीवन को सुविधाजनक नहीं बनाता - यह लोगों को बेहतर नींद लेने, स्वस्थ रहने और वास्तव में काम पर बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करता है।

एक शांत सुबह, एक स्थिर मन

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय के चार वर्षीय अध्ययन में बताया गया है कि 'कोविड-19 महामारी के दौरान ऑस्ट्रेलिया में घर से काम करनाः कर्मचारी घर से काम कर रहे हैं (EWFH) अध्ययन के क्रॉस-सेक्शनल परिणाम' ने दैनिक दिनचर्या को कैसे बदल दिया।

एक बार की सवेरे स्थिर होने लगीं, प्रतिभागी औसतन हर रात लगभग तीस मिनट अधिक सोते थे। उस अतिरिक्त आराम ने थकी हुई आँखों को आसान करने से अधिक किया, इससे पूरे दिन फोकस, धैर्य और ऊर्जा के स्तर में सुधार हुआ।

ट्रैफ़िक या ट्रेन की भीड़ के तनाव के बिना, श्रमिकों ने अपने दिन शांत जमीन पर शुरू किए। काम शुरू होने से पहले ही औसत ऑस्ट्रेलियाई व्यक्ति अपनी ऊर्जा को कम करके हर सप्ताह लगभग 4.5 घंटे बचाता है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि इन छोटी-छोटी बदलावों से मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक विनियमन में मापने योग्य सुधार हुआ, संक्षेप में लोगों को बस खुद जैसा महसूस हुआ।

चयन और विश्वासः असली गेम-चेंजर दिलचस्प बात यह है कि अध्ययन से पता चला कि दूरस्थ कार्य का सबसे बड़ा लाभ तब होता है जब लोग इसे स्वेच्छा से चुनते हैं।

जब घर से काम करना अनिवार्य होता था, तब मूड और प्रेरणा कम होती थी। लेकिन जैसे ही लचीलापन वापस आया, संतुष्टि फिर से बढ़ गई। पाठ स्पष्ट थाः नियंत्रण और सहमति स्थान से अधिक महत्वपूर्ण थी।

सहायक प्रबंधकों वाली टीमों ने भी बेहतर परिणाम बताए।

निरंतर पर्यवेक्षण के बजाय, स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने और प्रतिक्रिया प्रदान करने वाले नेताओं ने लोगों को संलग्न रहने में मदद की। जैसा कि एक निष्कर्ष में उल्लेख किया गया है, सहायक संरचनाएं 'स्थिरकर्ता की तरह कार्य करती हैं', बिना किसी दबाव के काम को ट्रैक पर रखती हैं।

स्वस्थ दिन, खुशियां उत्पादकता के अलावा, दूरस्थ कार्य ने चुपचाप स्वास्थ्य और जीवनशैली की आदतों को बदल दिया।

स्पेनिश शोधकर्ताओं का अनुमान है कि अब लोग यात्रा से बचकर हर साल दस अतिरिक्त दिनों की बचत करते हैं। उस समय का अधिकांश हिस्सा बुद्धिमानी से घूमने, व्यायाम करने और पारिवारिक जीवन में पुनः निवेश किया जा रहा है।

कार्यकर्ताओं ने बैठकों के बीच छोटी पैदल यात्राएं कीं या खिंचाव के लिए त्वरित ब्रेक का उपयोग किया। अध्ययन में पाया गया कि मामूली शारीरिक गतिविधि भी मूड को बेहतर बनाती है और लंबी बैठने की लाइनें टूट जाती हैं।

भोजन के विकल्प भी बेहतर हुएः लोगों ने अपने आहार में ताजे फल, सब्जियां और डेयरी जोड़कर अधिक खाना बनाया।

जैसे-जैसे दैनिक लय समायोजित हो गया, छोटे आराम मिल गए, चाय के ब्रेक ने चीनी वाले स्नैक्स की जगह ली और कुछ मिनटों तक बाहर ध्यान केंद्रित किया। परिवारों के साथ रहने वाले लोगों को एक और अप्रत्याशित लाभ मिलाः घरेलू कार्यों को काम के दिनों में मिश्रित किया गया, जिससे शामें आराम या संपर्क के लिए स्वतंत्र हो गईं।

प्रदर्शन जो परिणामों के माध्यम से बोलता है इस बात की आशंका के बावजूद कि घर से काम करने से उत्पादकता खराब हो सकती है, शोध में इसके विपरीत पाया गया। अधिकांश लोगों ने या तो अपना उत्पादन बनाए रखा या सुधार किया।

कारण. ध्यान देने के समय पर कम विचलन और अधिक नियंत्रण।

घंटों के बजाय परिणाम मापने वाले नेताओं को प्रदर्शन का स्पष्ट संकेत मिला। समीक्षा चक्र तेज, लक्ष्य अधिक विशिष्ट और परिणाम अधिक पारदर्शी हो गए। डिजिटल कार्यक्षेत्र में जिन टीमों ने संचार मानकों को परिभाषित किया, जैसे कि संदेश कब देना है या किस उपकरण का उपयोग करना है।

एर्गोनोमिक्स भी मायने रखता था। आरामदायक कुर्सी, उचित प्रकाश व्यवस्था और अच्छी तरह से सेट स्क्रीन दैनिक भुगतान के साथ छोटे निवेश थे। रिमोट स्टाफ द्वारा सामना की जाने वाली अदृश्य चुनौतियों को पहचानने के लिए सीखने वाले प्रबंधकों ने बर्नआउट को रोकने और विश्वास बढ़ाने में मदद की।

भविष्य लचीला, मानवीय और मापने योग्य है जैसे-जैसे साक्ष्य जमा हो जाते हैं, दूरस्थ काम अस्थायी प्रयोग की तरह नहीं दिखता बल्कि एक सतत विकास जैसा लगता है। लचीला सेटअप हर नौकरी के लिए उपयुक्त नहीं हैं, लेकिन हाइब्रिड सिस्टम सबसे अच्छी बात साबित हो रही है, कुछ दिन घर पर गहन काम करने और अन्य कार्यालय में सहयोग के लिए।

वैज्ञानिकों ने जोर दिया है कि कुंजी कठोर उपस्थिति के बजाय मानव ऊर्जा पर काम डिजाइन करना है। स्पष्ट अपेक्षाएं, आधुनिक उपकरण और विश्वास-आधारित नेतृत्व न केवल अधिक उत्पादक बल्कि अधिक सामग्री वाली टीमें बनाते हैं।

शहरों को भी इस बदलाव से लाभ होगा। कम आवागमन के साथ, सड़कें साफ हो जाती हैं, उत्सर्जन गिर जाता है और श्रमिकों को एक बार ट्रैफ़िक में खोए गए घंटे वापस मिल जाते हैं।

बड़े शहरों के बाहर देखभाल करने वाले और पेशेवर, यह एक शांत क्रांति है, जहां करियर और देखभाल अंततः सह-अस्तित्व कर सकती हैं।

चार वर्षों के साक्ष्य के बाद, निर्णय आता हैः दूरस्थ कार्य एक गुजरने वाला चरण नहीं बल्कि आगे बढ़ने का एक स्मार्ट तरीका है। लोग अधिक समय तक सो रहे हैं, बेहतर खा रहे हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं, क्योंकि काम अंततः जीवन में फिट बैठता है, इसके विपरीत नहीं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

भारत की महिला एथलीटों के मौन संघर्ष

विजय गर्ग

दशकों से भारतीय खेलों में महिलाओं ने उन बाधाओं का सामना किया है जो खेलने के मैदान से कहीं अधिक हैं। उनकी यात्राएं न केवल पदक और रिकॉर्ड से चिह्नित होती हैं, बल्कि सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों, बुनियादी ढांचे की कमी, असमान वेतन और सीमित प्रतिनिधित्व के प्रति लचीलापन भी। फिर भी, उन्होंने बार-बार साबित किया है कि प्रतिभा और दृढ़ता सबसे कठिन बाधाओं को भी पार कर सकती है। 1980 के दशक में भारत को सपने देखने वाली पीटी उषा की विद्युतीकृत स्प्रिंट से लेकर मैरी कॉम के मुक्केबाजी विश्व खिताब, सायना नेहवाल और पीवी सिंधू की ओलंपिक महिमा और मिराबाई चानु की वजन उठाने वाली जीत तक भारतीय महिलाओं ने एक बार पुरुष डोमेन के रूप में देखा गया है। हाल ही में, निकात ज़रीन, लवलिना बोर्गोहेन और हरमनप्रीत कौर जैसे एथलीटों ने यह साबित किया है कि महिलाएं केवल प्रतिभागी नहीं हैं - वे अग्रणी हैं। फिर भी, इन शानदार उपलब्धियों के पीछे एक चुनौतीपूर्ण वास्तविकता है।

भारत में अधिकांश महिला एथलीटों, विशेषकर छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों से, सामाजिक और वित्तीय बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। लैंगिक रूढ़िवाद बरकरार रहते हैं - लड़कियों को अक्सर बताया जाता है कि खेल ₹नारीर₹ या घरेलू अपेक्षाओं से विचलित होते हैं। यहां तक कि जो लोग राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर पहुंचते हैं, वे अक्सर अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में खराब प्रशिक्षण सुविधाओं, प्रायोजन की कमी और न्यूनतम मीडिया कवरेज के साथ संघर्ष करते हैं। अंतर जल्दी शुरू होता है। कई प्रतिभाशाली युवा लड़कियां अपर्याप्त सहायता प्रणालियों के कारण खेल छोड़ देती हैं - सुरक्षित प्रशिक्षण वातावरण और उचित पोषण की अनुपस्थिति से लेकर गुणवत्तापूर्ण कोचिंग तक सीमित पहुंच। जबकि भारत का खेल बुनियादी ढांचा बढ़ रहा है, समावेशीकरण एक चुनौती बनी हुई है। परिणामः प्रत्येक प्रसिद्ध चैंपियन के लिए, अनगिनत अन्य लोग अदृश्य रहते हैं, परिस्थितियों से उनकी क्षमता दबा दी जाती है।

इसी पृष्ठभूमि में स्त्री इंडिया स्पोर्ट्स फाउंडेशन (एसआईएसएफ) और स्त्री भारत स्पोर्ट्स कॉन्क्लेव 2025 जैसे कार्यक्रम परिवर्तन के संकेत बन रहे हैं। नई दिल्ली के महाराष्ट्र सदन में स्त्री इंडिया स्पोर्ट्स कॉन्क्लेव 2025 का आयोजन न केवल एक कार्यक्रम के रूप में किया गया, बल्कि महिलाओं को खेलों में स्थान और मान्यता प्राप्त करने के लिए एक आंदोलन के रूप में भी। एसआईएसएफ द्वारा आयोजित सम्मेलन ने महिलाओं के लिए एक निष्पक्ष, सुरक्षित और समावेशी खेल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की दृष्टि से एथलीटों, नीति निर्माताओं, शिक्षकों और सामाजिक नेताओं को एकजुट किया।

इस सम्मेलन का उद्घाटन दिल्ली एनसीटी सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री प्रवेश साहब सिंह ने किया, जिन्होंने पांच युवा महिला एथलीटों को व्यक्तिगत रूप से अपनाकर उनकी यात्रा को वित्तपोषित करने और मार्गदर्शन देने की प्रतिज्ञा करते हुए एक शक्तिशाली उदाहरण दिया। उनकी प्रतिबद्धता इस बात का प्रतीक थी कि कार्रवाई में वास्तविक गठबंधन कैसा दिखता है - प्रतीकात्मक मान्यता नहीं, बल्कि निरंतर समर्थन। सम्मेलन का एक प्रमुख आकर्षण SISF के आधिकारिक पॉडकास्ट और वेबसाइट की शुरुआत थी, जिसका उद्देश्य महिला एथलीटों - विशेष रूप से छोटे शहरों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों - की कहानियों को उजागर करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में जाना जाता है। इस बैठक में कई प्रतिष्ठित लोगों ने भाग लियाः भारत की पहली महिला पैरालंपिक पदक विजेता पद्म श्री डॉ. दीपा मलिक; गुजरात के विधायक श्रीमती रिवाबा रविंद्र सिंह जडेजा; हरियाणा योग आयोग के अध्यक्ष डॉ. जयदीप आर्य; खेल विश्वविद्यालय हरियाणा के उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमार; तथा योगेश थॉमर और अरुंदति चौधरी जैसे सफल एथलीट। उनकी उपस्थिति ने नीति से लेकर मानसिकता तक परिवर्तन के लिए सामूहिक आह्वान पर जोर दिया। एसआईएसएफ की अध्यक्ष श्रीमती गीता सिंह ने इस मिशन के सार को कैप्चर करते हुए कहा, ₹जब महिलाएं खेल चुनती हैं तो उन्हें अक्सर बताया जाता है कि यह लड़कों का काम है हम इस मानसिकता को बदलना चाहते हैं क्योंकि परिवर्तन नींव से शुरू होता है। हमारा मिशन खेल को एक सुरक्षित, समावेशी स्थान बनाना है जहां हर महिला के पास सपने देखने, प्रशिक्षण लेने और जीतने का अवसर हो इस सम्मेलन में योगासन भारत के बच्चों का प्रदर्शन भी शामिल था, जिसका प्रतीक यह है कि खेलों का भविष्य प्रारंभिक प्रोत्साहन पर आधारित है - जहां अनुशासन खुशी से मिलता है और महत्वाकांक्षा अवसर से मिलती है।

दिन के अंत तक, स्त्री इंडिया स्पोर्ट्स कॉन्क्लेव 2025 ने उत्सव से अधिक हासिल किया था। इससे भारतीय खेलों में इक्विटी और सशक्तिकरण के बारे में बातचीत फिर से शुरू हुई थी - एक ऐसी बात जो उन असाधारण महिलाओं को पहचानती है जिन्होंने अभी तक आने वाले लोगों के लिए प्रणालीगत सुधार की मांग करते हुए मार्ग प्रशस्त किया है। यदि भारत वास्तव में एक वैश्विक खेल शक्ति बनने जा रहा है, तो उसे यह सुनिश्चित करना होगा कि हर सपने वाली लड़की को इसका पीछा करने का मौका मिले - अपने लिंग के बावजूद नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि उसका देश विश्वास करता है कि वह जीत सकती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

रोगों से बचाव के ज्ञान का सम्मान

विजय गर्ग

अपने भीतर रोगों से बचाव की क्षमता बढ़ाने की चाह कौन नहीं करता ? जहां तक भारत का सवाल है, तो यहां देश के कोने-कोने में लोगों को असाध्य रोगों से बचाने के लिए क्षमता विकसित करने के ऐसे प्रयास किए गए कि वह स्वास्थ्य के एक ढांचे के रूप में वास्तविक हितकारी साबित होने के बजाय नेताओं के लिए प्रचार पाने के ही काम आए। फिर भी चिकित्सा के क्षेत्र में हमारा देश किसी से कम नहीं है, लेकिन यह भी तथ्य है कि देश के निर्धन लोगों के लिए बीमार हो जाने पर उनका जीना मुहाल । हो जाता है। सरकार र ने केंद्रीय और र राज्य स्तर पर बहुत-सी मुफ्त उपचार बीमा योजनाएं भी शुरू कर रखी हैं। वृद्धों को भी उनकी बीमारियों की स्थिति में संरक्षण दिया जा रहा है। वरिष्ठ नागरिक स्वास्थ्य बीमा योजना भी शुरू की जा चुकी है। इससे इतर, पंजाब सरकार ने भी ऐसी चिकित्सा बीमा योजना राज्य के हर परिवार के लिए घोषित कर रखी है। हालांकि देश जहां वरिष्ठ नागरिकों के लिए योजना के तहत पांच लाख रुपए की राशि तय की गई हैं, वहीं पंजाब में मैं इसे दस दस लाख रुपए तक रखा गया है।

जब इस तरह की की योजनाएं घोषित । होने के बाद लागू होती। हैं, तो आम आदमी खुश हो जाता है। उसे लगता है कि । उसे लगता है कि निजी क्षेत्र में चलाए जाने वाले आपका बड़े अस्पतालों के भारी-भरकम बिल से उसे छुटकारा मिल जाएगा। वह अपने आप को ऐसा भाग्यवान नागरिक मान सकता है, जिसे कभी कोई रोग लग जाए, तो उसके निदान और उपचार का दायित्व सरकार के ऊपर रहेगा। । संबंधित स्वास्थ्य कार्ड दिखाते ही मुफ्त इलाज हो जाएगा। लेकिन जमीनी हकीकत कुछ अलग है। अब भी सार्वजनिक क्षेत्र में चलने वाले सरकारी अस्पताल या पंजाब में चलाए गए मोहल्ला क्लीनिक बेहतर का वचन तो उपचार का वचन देते हैं, लेकिन बहुत बार ऐसे वचन पूरे होते नजर नहीं आते। दरअसल, निजी अस्पतालों का कहना है कि जब स्वास्थ्य कार्ड वाले मरीजों का का उपचार करते हैं. सरकार की ओर से तुरंत भुगतान नहीं किया जाता। इसलिए कई बार निजी अस्पताल मरीजों को दाखिल करने में करने से इनकार कर देते हैं।

कभी तपेदिक यानी टीबी से लोग

से लोग बहुत डरते थे। इसे जानलेवा समझकर किसी आरोग्य आश्रम में रहने लगते थे। अब यह रोग नियंत्रित हो गया है। बिल्कुल यही हाल डेंगू बुखार का भी गया है। कोरोना ने दो साल तक मानव जाति को जिस प्रकार आर्थिक और सामाजिक संकट में डाला, उसे भी कोई भूल नहीं सकता। इस संदर्भ देखें तो किसी भी मौलिक या उपयोगी काम के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार नोबेल सम्मान को माना जाता है। पिछले कुछ वर्षों नोबेल सम्मान घोषित हो इस समय रहे हैं, मानव जाति के कल्याण को प्रोत्साहित करने वाला चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार है। इस बार अमेरिका और जापान के वैज्ञानिकों के नाम 'मेडिसिन' के लिए इस सम्मान की घोषणा हुई। उनके नाम हैं मैरी ई ब्रांको, फ्रैंड रैंच डेल और शिमोन साकागुची। इन विद्वान वैज्ञानिकों ने न केवल इंसान के 'इम्यून सिस्टम' यानी रोग प्रतिरक्षा तंत्र को बढ़ाने के मामले में शोध किया है, बल्कि मनुष्य के अंदर प्रतिरक्षा तंत्र से जूझने वाली शत्रु कोशिकाओं को भी बेअसर किया और बाहर से इंसान के प्रतिरक्षा तंत्र पर कोई हमला न कर दे, इसके लिए 'मास्टर स्विच' भी खोजा है।

इन तीनों वैज्ञानिकों का मुख्य शोध या अध्ययन कैंसर और मधुमेह में रहा और वे इसमें नए शोध को सामने लाने का प्रयास भी कर रहे हैं। इस युगांतकारी विश्लेषण को आसान शब्दों में समझने के लिए हम कह सकते हैं कि खास तरह की कोशिका प्रतिरक्षा तंत्र को इंसानी शरीर को अपने अंदर तलाश करना होता है और अगर गलती से कोई कोशिका इस तंत्र की ताकत को समझ न पाने के कारण उस पर हमला कर दे, तो वे उसे रोक सकते हैं यानी ये खोज बताती है कि हमारे शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र और उसकी प्रतिक्रिया कैसे नियंत्रित होती है। साथ ही, कहां यह प्रणाली गड़बड़ हो जाती है और अपने मूल प्रतिरक्षा तंत्र तक कैसे पहुंचा जा सकता है।

यह यानी यह इलाज का एक नया तरीका है। इसे एक क्रांतिकारी बदलाव भी कह सकते हैं। यह रोग रोग प्रतिरक्षा प्रणाली हमारे शरीर में हजारों किस्म के जीवाणुओं को घुसने से रोकती है। । ये जीवाणु मानव कोशिकाओं जैसे होते हैं और यह समझना मुश्किल हो जाता है कि शरीर में हजारों कोशिकाओं में से कौन शरीर का बचाव करेगा और कौन शरीर का । दुश्मन बन जाएगा। तंत्र को बड़ी प्रतिरक्षा तंत्र का सुरक्षा है, है. जो बाहर से आने वाले रोगों, विषाणु या जीवाणु को रोकता मारता है। । लेकिन गड़बड़ यह यह है कि कई बार ये 'सुरक्षा' सेना' अपने ही शरीर के छिपे विषाणुओं को पहचान नहीं पाती। अब पुरस्कार प्राप्त तीनों वैज्ञानिकों की भूमिका पर गौर किया जाए. त सन् 1995 में शिमोन साकागुची ने शरीर में मौजूद 'शांति रक्षक सैनिक' यानी सुरक्षा कोशिकाओं की तलाश की। इन कोशिकाओं का ताल्लुक नहीं, बल्कि अन्य हमलावर कोशिकाओं को रोकना है। यह भी लड़ाई शुरू करना यह भी देखना है कि ये कोशिकाएं रास्ता भटककर अपने ही की हानि न पहुंचा दें। यह एक स्थापित ज्ञान को चुनौती थी, क्योंकि प्रायः उपचार विशेषज्ञ यह समझते थे कि प्रतिरक्षा तंत्र हमारे शरीर कोई शरीर में है, वह हमेशा लाभदायक होता है और उससे संक्रमण का डर नहीं है, बल्कि यह बाहर से होने वाले संक्रमण से बचाता है। इसका अर्थ यह है कि इन तीनों वैज्ञानिकों ने और विशेषकर शिमोन साकागुची ने यह बताया कि हर शरीर में एक सहन करने वाली ताकत भी बन जाती है। है। यह केंद्रीय सहन करने वाली ताकत है।

यह खोज बहुत समय से रही थी। वर्ष 2001 में इसके लिए एक 'मास्टर कवच' खोजा गया, जिसने पाया कि प्रतिरक्षा प्रणाली अगर बेकाबू हो जाए तो अपने ही शरीर को नुकसान पहुंचाने लगती है। अगर यह अनियंत्रित रहे तो इंसानी शरीर में 'आइपैक्स सिंड्रोम' भी पैदा हो सकता है। इन तीनों वैज्ञानिकों का शोध बहुत मूल्यवान है, क्योंकि इसके जरिए बड़ी तेजी से बीमारियों की जड़ तक पहुंचा जा सकता है और इलाज के नए तरीके भी विकसित किए जा सकते हैं।

इस समय इन 'टी सेल' के दो सौ चिकित्सीय परीक्षण चल रहे हैं। इसके निष्कर्ष आने में अभी वक्त है, लेकिन ये परीक्षण निश्चित रूप से इस प्रतिरक्षा प्रणाली की उपादेयता के हक में होंगे। मगर कैंसर की कोशिकाएं जैसी कुछ असाध्य बीमारियां, जो आजकल आदमी को मौत का संदेश लगती हैं, उन्हें 'रेगुलेटरी टी सेल' पहचानने और खत्म करने में भूमिका निभा सकते हैं। एक और बड़ी चुनौती तब आती है, जब अंग प्रत्यारोपण करना पड़ता है। जैसे घुटनों को बदलना या गुर्दा और यकृत के दानकर्ताओं से दान लेकर रोगी व्यक्ति को लगाना चिंता की बात यह है कि प्रत्यारोपित गुर्दा या यकृत कई बार नए शरीर को स्वीकारने से इनकार कर देता है। अब अगला कदम इन चिकित्सा विशेषज्ञों का यह है कि अगर ऐसे अंगों का प्रत्यारोपण होता है, तो वह शरीर के साथ पूरी तरह सहज हो जाए। इस तरह, खून या अंगों के न मिलने को विज्ञान की यह प्रगति सहज और सुलभ बना सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिराज

विजय गर्ग

"एआई मिराज" का उपयोग विभिन्न हालिया लेखों और चर्चाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आसपास की अतिरंजित प्रचार-प्रसार और इसके वर्तमान अनुप्रयोग की अक्सर अधिक विनम्र, चुनौतीपूर्ण या भ्रमात्मक वास्तविकता के बीच अंतर का वर्णन करने के लिए किया जाता है। हालिया भाषण से ₹एआई मिराज₹ के साथ जुड़े प्रमुख विषय और दृष्टिकोण यहां दिए गए हैं 1। अत्यधिक वादा किया गया प्रदर्शन और टूटी हुई प्रणाली हाइप बनाम। वास्तविकताः कई लेख इस तथ्य पर केंद्रित हैं कि एआई समाधान, भव्य विपणन के बावजूद, अक्सर वास्तविक दुनिया की व्यावसायिक परिस्थितियों में अपेक्षाओं को पूरा करने में विफल रहते हैं। कंपनियां भारी निवेश करती हैं, लेकिन उन्हें लगता है कि एआई सिस्टम अक्सर वादा किए गए परिणाम प्रदान नहीं करते हैं, कभी-कभी खराब एल्गोरिदम या मौजूदा ₹विघटित प्रणालियों₹ के साथ दोषपूर्ण एकीकरण के कारण ब्लैक बॉक्स समस्याः व्यवसायों के लिए, एआई अक्सर एक अस्पष्ट ₹ब्लैक बॉक्स₹ होता है - इसके निर्णयों की तंत्र अज्ञात होती हैं, जो विशेष रूप से स्वास्थ्य देखभाल निदान जैसे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में महत्वपूर्ण होते हैं।

"काम करना₹ बनाम ₹आइ₹ एआई गैपः कुछ सुझाव देते हैं कि अधिकांश संगठन बुनियादी व्यावसायिक समस्याओं (₹एआई करना₹) पर लागू करने के बजाय बुद्धिमत्ता की उपस्थिति का पीछा कर रहे हैं। वे स्थिति प्रतीक चाहते हैं, लेकिन पर्याप्त मूल्य निकालने के लिए आवश्यक डेटा बुनियादी ढांचे, पुनः डिज़ाइन की गई प्रक्रियाएं और स्पष्ट रणनीति का अभाव है।

डेटा, मेट्रिक्स और क्षमताओं में भ्रम

निर्मित डेटाः एआई मिराज का एक अंधेरा पक्ष बनावट या धोखाधड़ी के आंकड़ों का खतरा है, जो एआई मॉडलों के लिए अच्छी तरह से जहर हो सकता है। समझौता किए गए डेटा पर प्रशिक्षण से विकृत मॉडल, दोषपूर्ण निर्णय और पूर्वाग्रह या झूठ का प्रसार हो सकता है, जिसका उदाहरण डीपफेक और नकलीकरण की वृद्धि है।

मेट्रिक्स मिराज (उत्पादक क्षमताएं): बड़े भाषा मॉडल (एलएलएम) में, कुछ कथित ₹उत्पादित क्षमताएँ₹ (जैसे समस्या-समाधान की क्षमता में अचानक छलांग लगाना) बेंचमार्क में उपयोग किए जाने वाले पास-फेल मीट्रिक के सांख्यिकीय कलाकृतियां हो सकती हैं। जब शोधकर्ता रैखिक मापदंडों का उपयोग करते हैं जो आंशिक सटीकता को पुरस्कृत करते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि अचानक ₹उदय₹ अक्सर गायब हो जाता है, जिसके बजाय सुधार की स्थिर, रैखिक प्रगति प्रकट होती है।

पैटर्न मान्यता बनाम बुद्धिमत्ताः कुछ आलोचकों का तर्क है कि आधुनिक एआई, विशेष रूप से एलएलएम में वास्तविक बुद्धि या मानवीय विचारधारा नहीं होती। इसके बजाय, वे अपने विशाल प्रशिक्षण डेटा में पैटर्न के आधार पर मानव भाषा और प्रतिक्रियाओं की नकल करते हुए ₹उन्नत पैटर्न पहचान₹ के स्वामी हैं, जिससे समझ का एक आकर्षक भ्रम पैदा होता है।

वित्तीय और बाजार अनुमान

गोल्ड रशः एआई क्षेत्र में पूंजी का भारी प्रवाह और बढ़ते मूल्य निर्धारण ₹उन्नतिवाद के बंद सर्किट" का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, जहां प्रौद्योगिकी कंपनियां और निवेशक घनिष्ठ रूप से आपस में जुड़ा हुआ है, जिससे वास्तविक बाजार की मांग को वित्तीय अटकलों से अलग करना कठिन हो जाता है।

अस्थिर आधारः एआई का समर्थन करने वाली वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र को कभी-कभी अस्थिर बताया जाता है। डेटा सेंटर और हार्डवेयर में अरबों को अंतहीन विकास के वादे पर डाला जाता है, जिससे यह खतरा पैदा हो सकता है कि यदि ₹भ्रम₹ टूट जाए तो ये निवेश ₹तकनीकी सोने की धड़कन का ध्वस्त स्मारक₹ बन जाएंगे संक्षेप में, ₹एआई मिराज₹ एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आसपास अत्यधिक उत्साह और अवास्तविक अपेक्षाओं से सावधान करने के लिए किया जाता है, जिसमें तकनीकी विफलताओं और डेटा अखंडता समस्याओं से लेकर बाजार पर अटकलों तक तथा इस बात पर दार्शनिक बहस को उजागर किया गया है कि क्या वर्तमान एआई वास्तविक बुद्धि है या केवल परिष्कृत अनुकरण।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

सिनेमा के शुरुआती दौर में फिल्म की कहानी में दिवाली प्रमुख विषय होता था

विजय गर्ग

सिनेमा के शुरुआती दौर में फिल्म की कहानी में दिवाली प्रमुख विषय होता था लेकिन बाद के दौर के कथानकों में दिवाली, विषय, सीन, गीत या संदर्भ बिंदु तक सिमटकर रह गई है। सत्तर के दशक से लगभग २००5 तक ऐसे प्रसंग पर्दे पर खूब नजर आये। हालांकि कुछ फिल्मों में दिवाली का चित्रण इतना अच्छा किया गया कि दर्शकों के लिए वे दृश्य और गीत यादगार बन गये।

एक ज़माना था जब फ़ल्मिें दिवाली विषय के इर्दगिर्द घूमा करती थीं, जैसे 1940 में जयंत देसाई के निर्देशन में बनी 'दिवाली' या फिर गजानन जागीरदार की फिल्म 'घर घर में दिवाली' (1955) और इसके अगले साल यानी 1956 में बनी दीपक आशा की 'दिवाली की रात'। लेकिन अब फिल्मों में दिवाली, विषय, सीन, गीत या संदर्भ बिंदु तक सिमटकर रह गई है, बल्कि हाल के दिनों में तो निर्माताओं ने दिवाली को बड़े पर्दे पर लाना लगभग बंद ही कर दिया है। इस बारे में कुछ निर्देशकों का कहना है, 'आज फिल्मों के रुपहले पर्दे पर दिवाली को मुख्य सीन के रूप में पेश नहीं किया जा रहा है। फ़ल्मिकार नए विषयों व नए प्रयोगों को प्राथमिकता देते हैं। बॉलीवुड नए ग्लोबल मंचों तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है, इसलिए फ़ल्मिकार ऐसी फ़ल्मिें बनाने की कोशिश कर रहे हैं जो दोनों भारतीय व ग्लोबल दर्शकों को आकर्षित करें।' ध्यान रहे कि २००1 में अमिताभ बच्चन की प्रोडक्शन कंपनी एबीसीएल ने आमिर खान व रानी मुखर्जी को लेकर 'हैप्पी दिवाली' फिल्म बनाने की घोषणा की थी, लेकिन अस्पष्ट कारणों से यह फिल्म घोषणा से आगे न जा सकी।

बतौर संदर्भ ही पर्व का प्रयोग

बहरहाल, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि 70 के दशक से लगभग २००5 तक फिल्मकारों ने दिवाली को संदर्भ बिंदु के तौर पर अवश्य प्रयोग किया है। मसलन, 197२ की फिल्म 'अनुराग' में कैंसर पीड़ित बच्चे (सत्यजीत) की मृत्यु से पहले की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए पूरा पड़ोस दिवाली मनाने के लिए साथ आता है। कमल हासन की 1998 की फिल्म 'चाची 4२0' में हासन की बेटी का किरदार निभा रही बच्ची दिवाली के पटाखे से घायल हो जाती है। आदित्य चोपड़ा की फिल्म 'मोहब्बतें' (२000) में दिवाली को मिलन के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया गया कि तीन युवा प्रेमी जोड़े शाहरुख़ खान के प्रयासों से साथ आते हैं। करण जोहर की २001 की हिट फिल्म 'कभी ख़ुशी कभी गम' में दिवाली के सीन को यह दिखाने के लिए प्रयोग किया गया कि रायचंद परिवार के लिए समय किस तरह से बदला।

कहानी से हटकर भी हैं दृश्य

फिल्मों में दिवाली के संदर्भ घटने के बावजूद हर निर्माता मोटी कमाई करने के उद्देश्य से चाहता यही है कि उसकी फिल्म दिवाली के अवसर पर रिलीज़ हो। शायद इसलिए दिवाली से संबंधित कोई सीन फिल्म में ठूंस दिया जाता है, भले ही कहानी से उसका कुछ लेना देना न हो। 'तारे ज़मीन पर' (२007) के बाद २010 में 'आशा' में दिवाली को ऐसा महत्व दिया गया कि उसके सीन का कहानी से कोई संबंध न था। दिवाली का अक्सर जबरन संदर्भ भी ठूंसा जाता है, जैसे 1999 की फिल्म 'वास्तव' में पैसे वाला गुंडा बनने के बाद संजय दत्त अपनी चॉल में दिवाली मनाने के लिए आता है, लेकिन उसकी मां उसे भगा देती है कि वह एक गुंडे से संबंध नहीं रखना चाहती।

कई फिल्मों में दिवाली के यादगार सीन भी

वैसे कुछ फिल्मों में दिवाली का चित्रण इतना अच्छा किया गया है कि उन्हें देखते हुए ऐसा महसूस होता है जैसे आप भी उस उत्सव का हिस्सा हों। मसलन, आइकोनिक फिल्म 'मुहब्बतें' साल २000 में रिलीज़ हुई थी। इसका दिवाली सीन अपने संवेदनशील नाटक व विप्लव के लिए हमारी यादों में हमेशा के लिए बस गया है। फिल्म का क्लाइमेक्स अनधिकृत दिवाली कार्यक्रम की पृष्ठभूमि में सामने आता है जिसे गुरुकुल के सख्त प्राचार्य ने मंज़ूरी नहीं दी है। हर कोई नाच-गाने में डूबा हुआ है, जोकि पाबंदियों से मुक्त हो जाने का प्रतीक है। अजीब बात थी कि लोग चोरी में भी लगे हुए थे। यह वह पल था, जब सख्त प्राचार्य के विरुद्ध बगावत के सुर उभरते हैं। हर छात्र साहस दिखाता हुआ अपनी पार्टनर के साथ नाच जारी रखता है, गुरुकुल के नियमों को चुनौती देते हुए सब घुल मिल नहीं सकते।

'हम आपके हैं कौन' की दिलकश धुन

'हम आपके हैं कौन' का विशाल कैनवास हमें नास्टैल्जिक यात्रा यानी स्मृतियों में पर ले जाता है- अस्सी के दशक का युग जो ज़रा भी जटिल नहीं था और परिवार आधारित ड्रामे का संसार था। दिल को स्पर्श करने वाली धुन से आप मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। फिल्म में यह गीत उस समय आता है जब दिवाली का उत्सव मनाया जा रहा होता है। साथ ही यह वह पल भी है जब दर्शकों को मालूम होता है कि सलमान खान की भाभी रेणुका शहाणे का किरदार गर्भवती महिला का है।

दिवाली पर इस सीन ने खूब हंसाया

हास्य फिल्म 'गोलमाल 3' में दिवाली से संबंधित एक यादगार सीन है जिसे देखकर दर्शक हंसते-हंसते लोटपोट हो जाते हैं। अजय देवगन, करीना कपूर, अरशद वारसी व जॉनी लीवर की इस फिल्म में दिवाली के अवसर पर पटाखे बेचने की दुकान लगायी जाती है। लेकिन आपसी तनातनी में फिल्म के किरदार पटाखे कुछ इस अंदाज़ से छोड़ते हैं कि एक दूसरे की दुकानों में ही पटाखे फूट जाते हैं और पूरा धंधा चौपट हो जाता है। अपनी कॉमिक टाइमिंग से इस फिल्म के सितारे इस सीन को यादगार बना देते हैं।

मिसाल बने ये दिवाली गीत

तब्बू, जूही चावला व गोविंदा की फिल्म 'आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया' में दीपावली और उसके जश्न से संबंधित एक बहुत ही अच्छा गाना है। गाने में गोविंदा का ज़बरदस्त नृत्य है, जो उनके साथ नाचने के लिए प्रेरित करता है। गीत 'आयी है दिवाली सुनो जी घरवाली' पूरे पड़ोस को एक साथ आने के लिए प्रेरित करता है, सड़क पर रोशनी है, दीये जल रहे हैं, जो उत्सव के माहौल में चार चांद लगा रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद जब दिवाली के दीप जलते हैं तो अमीरबाई कर्नाटकी का गाया 'घर घर में दिवाली है' (किस्मत, 1943) और शमशाद बेगम का गाया 'आई रे आई रे दिवाली' (शीश महल, 1949) ही अधिक याद आता है।

हमास का समर्थन, तालिबान का विरोध क्यों

राजेश कुमार पासी

जब तालिबान के विदेश मंत्री भारत यात्रा पर आए थे तो उनका मोदी सरकार ने अच्छी तरह से स्वागत किया और उनकी विदेश मंत्री एस जयशंकर से वार्ता भी हुई । उनकी यात्रा के दौरान ही अफगानिस्तान पर पाकिस्तान ने एयर स्ट्राइक कर दी जिसकी प्रतिक्रिया में तालिबान ने पाकिस्तानी चौकियों पर हमला कर दिया। तालिबान के विदेश मंत्री आमिर खान मुताक्की ने पाकिस्तान को भारत की धरती से धमकी भी दी । वो अपनी यात्रा के दौरान दारुल उलूम देवबंद भी गये और उनका वहां जबरदस्त स्वागत किया गया। मुताक्की ने अफगान दूतावास में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की जिसमें महिलाओं को आने से मना कर दिया गया। इसके बाद भारत में मुताक्की का जबरदस्त विरोध हुआ तो उन्होंने अगली प्रेस कॉन्फ्रेंस में महिलाओं को भी बुलाया और उनके सवालों के जवाब भी दिए ।

भारत ने अफगानिस्तान में तालिबान सरकार को अभी तक मान्यता नहीं दी है सिर्फ उस सरकार के साथ संवाद स्थापित किया है। इसकी बड़ी वजह यह है कि दुनिया के बड़े देश तालिबान के साथ वार्ता कर रहे हैं और उसके साथ रिश्ते बढ़ा रहे हैं। रूस ने तो तालिबान सरकार को मान्यता भी दे दी है। भारत सरकार को यह एहसास हो गया है कि तालिबान लंबे समय तक सत्ता में रहने वाला है । अगर तालिबान की विचारधारा और नीतियों के कारण उससे दूरी बनाई गई तो तालिबान भारत के हाथ से निकल जाएगा । भारत के सामने दो विकल्प हैं, एक तो तालिबान से रिश्ते बनाए ताकि अफगानिस्तान में भारत के हितों की रक्षा की जा सके । दूसरा विकल्प यह है कि भारत तालिबान से दूरी बना ले और अपने दुश्मनों को अपने खिलाफ साजिश करने का मौका दे । भारत सरकार ने राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए तालिबान से रिश्ते बनाना ठीक समझा । इसका मतलब यह नहीं है कि भारत सरकार तालिबान की विचारधारा को स्वीकार कर रही है या उनकी नीतियों के साथ सहमति व्यक्त कर रही है ।

तालिबान के साथ रिश्ते बनाना इसलिए जरूरी है क्योंकि वो अफगानिस्तान की सत्ता में है । ऐसे बहुत से देश हैं, जहां तानाशाही चल रही है, महिलाओं का उत्पीड़न हो रहा है, अल्पसंख्यकों का दमन किया जा रहा है लेकिन भारत के उनके साथ अच्छे संबंध हैं । अगर अरब देशों की बात की जाए तो वहां भी तो सभी सरकारें तानाशाह चला रहे हैं और महिलाओं का उत्पीड़न हो रहा है । देखा जाए तो विचारधारा के स्तर पर तालिबान और अन्य मुस्लिम देशों में ज्यादा अंतर नहीं है । तालिबान सिर्फ आक्रामकता के साथ शरीयत को लागू कर रहा है जिसकी मांग ज्यादातर मुस्लिम देशों में कट्टरपंथी करते हैं । भारत संविधान से चलने वाला दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, इसका यह मतलब नहीं है कि गैर-लोकतांत्रिक देशों की मान्यता खत्म करके उनके साथ सारे रिश्ते तोड़ लिए जाएं । इसमें भी कोई शक नहीं है कि तालिबान एक आतंकवादी विचारधारा वाला संगठन है । फिलिस्तीन पर शासन करने वाले फिलिस्तीन प्राधिकरण के लोग पीएलओ से निकले हुए हैं जो कि एक आतंकवादी संगठन है । भारत ने शुरू से उसको फिलिस्तीन सरकार मानते हुए उसके साथ संबंध रखे हैं । सीरिया में जो सरकार आई है, वो भी एक आतंकवादी संगठन की है । भारत के उसके साथ भी संबंध हैं । सवाल यह है कि जब आतंकवादी संगठनों ने सत्ता पर कब्जा कर लिया है और जनता का उनको समर्थन मिल गया है तो क्या किया जाए ।

जावेद अख्तर ने तालिबान के विदेश मंत्री की यात्रा पर एक पोस्ट की है । उन्होंने लिखा है कि दुनिया के सबसे खूंखार आतंकवादी समूह तालिबान के प्रतिनिधि को हर तरह के आतंकवादियों के खिलाफ मंच पर बोलने वालों द्वारा दिए गए सम्मान और स्वागत को देखकर मेरा सिर शर्म से झुक जाता है । देवबंद को भी शर्म आनी चाहिए कि उसने अपने उस इस्लामिक हीरो का इतना सम्मानपूर्वक स्वागत किया जो उन लोगों में से एक है जिन्होंने लड़कियों की शिक्षा पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया है । मेरे भारतीय भाइयों और बहनों, हमारे साथ क्या हो रहा है । देवबंद को उन्होंने सिर्फ दिखावे के लिए निशाना बनाया है. उनका असली निशाना मोदी सरकार है जिसने तालिबान के विदेश मंत्री को आमंत्रित किया है । सवाल यह है कि जो लोग रोज पाकिस्तान के साथ रिश्ते सुधारने की वकालत करते हैं, वो लोग तालिबान का इतना विरोध क्यों कर रहे हैं ।

अजीब बात है कि जो लोग भारत में तालिबान का विरोध कर रहे हैं, जब तालिबान सत्ता में आया था तो यही लोग तालिबान का गुणगान कर रहे थे । भारत के मुस्लिम बुद्धिजीवी, वामपंथी और सेकुलर इसे अफगानिस्तान की आजादी बता रहे थे । तालिबान का विरोध मुताक्की की यात्रा के बाद ही क्यों शुरू हुआ है जबकि भारत तो पिछले एक साल से तालिबान से बातचीत कर रहा है । तालिबान ने रूस, चीन और कई देशों के साथ रिश्ते बनाए हैं लेकिन उसकी कोशिश है कि भारत से उसके संबंध बेहतर हो जाये । उसे यह अच्छी तरह से पता है कि भारत अकेला देश है जिसने निस्वार्थ भाव से अफगानिस्तान के विकास में सहयोग दिया है । भारत ने कभी भी अफगानिस्तान के अंदरूनी मामलों में दखल नहीं दिया है । भारत सरकार भी तालिबान के बदले हुए रवैये को देखते हुए ही कदम आगे बढ़ा रही है । तालिबान के विरोध का सीधा मतलब है कि वास्तव में तालिबान का विरोध नहीं हो रहा है, ये मोदी सरकार का विरोध हो रहा है । देश का विपक्ष और उसके पूरे इको सिस्टम की नीति बन चुकी है कि मोदी सरकार का हर हाल में विरोध करना है । मोदी सरकार कुछ भी करे, बिना तर्क और तथ्य के उसका विरोध करना है ।

ये लोग तालिबान का विरोध कर रहे हैं कि उसकी विचारधारा आतंकवाद से प्रेरित है । दूसरी तरफ तालिबान कहता है कि उसकी विचारधारा देवबंद से प्रेरित है । क्या ये लोग भारत के दारुल उलूम देवबंद को आतंकवादी विचारधारा फैलाने वाला संगठन घोषित कर सकते हैं । अगर तालिबान का इतना विरोध है तो देवबंद का भी उतना ही विरोध होना चाहिए । देवबंद का विरोध करने वालों को मुस्लिम विरोधी बता दिया जाता है । पिछला तालिबान मुल्ला उमर का तालिबान था जो पाकिस्तानी वहाबी विचारधारा से प्रेरित था, इसलिए वो भारत के विरोध में ही खड़ा रहा । इस बार जो तालिबान सत्ता में आया है, वो देवबंद की विचारधारा से प्रेरित है, इसलिए स्वाभाविक रूप से उसका झुकाव भारत की तरफ है । सत्ता में आने के तुरंत बाद ही इस तालिबान से घोषणा कर दी थी कि वो भारत के खिलाफ नहीं है और अफगानिस्तान की धरती का इस्तेमाल भारत के खिलाफ नहीं होने दिया जाएगा । इसके बावजूद भारत सरकार ने तीन साल तक तालिबान से दूरी बनाकर रखी थी ।

इजराइल पर गाजा से जब हमास ने बड़ा आतंकवादी हमला किया था तो भारत में इसका जश्न मनाया गया था । जब इजराइल ने गाजा पर बड़ी कार्यवाही शुरू की तो फिलिस्तीन के समर्थन के नाम पर हमास का समर्थन किया जा रहा था । हमास ने पाकिस्तान के आतंकवादी संगठनों के साथ मिलकर भारत के खिलाफ लड़ने का ऐलान कर दिया था, इसके बावजूद इसका विरोध नहीं किया गया । इसका मतलब माना जाए कि हमास का समर्थन इसलिए किया जा रहा है क्योंकि वो भारत विरोधी है । पाकिस्तान के खिलाफ चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर में जब भारतीय सेना ने कार्यवाही की तो यही लोग पाकिस्तान का समर्थन करने लगे । तब कहा जा रहा था कि आतंकवादियों के कारण पाकिस्तान पर हमला क्यों किया जा रहा है । पाकिस्तानी जनता का क्या कसूर है, जो वहां हमला किया जा रहा है । अजीब बात है कि तालिबान का विरोध करने वालों ने कभी आईएसआईएस का भी विरोध नहीं किया । तालिबान के साथ खड़े होने का मतलब यह भी है कि वो आज पाकिस्तान के खिलाफ खड़ा दिखाई दे रहा है । पाकिस्तान चाहता है कि भारत के खिलाफ दो फ्रंट हों ताकि जब भी युद्ध हो तो एक तरफ से चीन और दूसरी तरफ से पाकिस्तान भारत पर हमला करें । भारत ने चीन के साथ रिश्ते सुधार पर एक फ्रंट बंद करने कोशिश शुरू कर दी है, वैसे भी भारत की सैन्य शक्ति को देखते हुए चीन भारत से उलझने की कोशिश नहीं करेगा ।

पाकिस्तान की समस्या यह है कि तालिबान के कारण उसे अब टू फ्रंट वॉर का डर सता रहा है । उसे लग रहा है कि एक तरफ से भारत तो दूसरी तरफ से अफगानिस्तान उस पर हमला कर सकता है । वो इससे भी डरा हुआ है कि जब ऐसा होगा तो तीसरा हमला पाकिस्तान के अंदर से भी हो सकता है । वास्तव में यही डर मोदी सरकार के विरोधियों को सता रहा है, इसलिए तालिबान का विरोध किया जा रहा है । तालिबान के साथ भारत के संबंध भारत के हितों को देखते हुए स्थापित किए जा रहे हैं ताकि तालिबान का जो इस्तेमाल भारत के खिलाफ करने की योजना थी, उसे पलटा जा सके । पाकिस्तान तालिबान की मदद से अफगानिस्तान की धरती का इस्तेमाल भारत पर आतंकवादी हमलों के लिए करना चाहता था लेकिन अब हालात उल्टी दिशा में जा रहे हैं । यही वजह है कि भारत में बैठे पाकिस्तान के हमदर्द परेशान हैं और वो तालिबान का विरोध कर रहे हैं । उनकी कोशिश है कि भारत तालिबान के साथ सारे संबंध तोड़ दे ताकि वो पाकिस्तान और चीन की गोद में बैठ जाए और उसका इस्तेमाल भारत में आतंकवादी गतिविधियों के लिए किया जाए । हमास का समर्थन करने वाले क्यों तालिबान का विरोध कर रहे हैं, आपको विचार करने की जरूरत है, आपको खुद जवाब मिल जाएगा ।

विश्व को रोशन करता भारतीय प्रकाश-पर्व

जब संध्या का गहरा अंधेरा धरती पर पसरने लगता है, तभी एक छोटा-सा दीप उसका सीना चीरकर आलोक बिखेरता है । वह दीप केवल मिट्टी और तेल का नहीं, बल्कि आस्था, विश्वास और मानवता का प्रतीक है । दीपावली वह पवित्र क्षण है, जब हर घर, हर गली और हर दिल में उजाला नाच उठता है । यह केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन का वह गीत है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत, निराशा पर आशा की विजय और अंधकार पर प्रकाश की सत्ता को गाता है । दीपावली भारतीय संस्कृति का वह अनमोल रत्न है, जो न केवल भारत, बल्कि विश्व भर में एकता, प्रेम और समृद्धि का संदेश फैलाता है । यह वह पर्व है, जो हमें याद दिलाता है कि एक छोटी-सी लौ भी सबसे घने अंधेरे को मात दे सकती है ।

दीपावली का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना कि भारतीय संस्कृति की गहराई । त्रेता युग में भगवान श्रीराम के 14 वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटने की खुशी में दीप जलाए गए थे । यह परंपरा आज भी अयोध्या के सरयू तट पर लाखों दीपों के साथ जीवित है, जो न केवल भक्ति का प्रतीक है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक एकता का भी गवाह है । इसके अलावा, भगवान कृष्ण द्वारा नरकासुर के वध की कथा दीपावली को बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक बनाती है । जैन धर्म में यह पर्व भगवान महावीर के निर्वाण के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जबकि सिख परंपरा में इसे "बंदी छोड़ दिवस" के रूप में जाना जाता है, जब गुरु हरगोविंद जी ने 52 राजाओं को मुक्त कराया था । माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा इस पर्व का एक अभिन्न अंग है । लक्ष्मी समृद्धि और सौभाग्य की प्रतीक हैं, तो गणेश जी हर कार्य में सफलता के मार्गदर्शक । यह पर्व धर्म की सीमाओं को लांघकर आत्मविजय, मुक्ति और नई शुरुआत का प्रतीक बन चुका है । हर दीप, हर पूजा और हर अनुष्ठान हमें सिखाता है कि जीवन का सच्चा प्रकाश भीतर से ही आता है ।

दीपावली अब केवल भारत का पर्व नहीं, बल्कि वैश्विक उत्सव बन चुका है । इसे 'फ़ेस्टिवल ऑफ़ लाइट्स' के रूप में विश्व भर में पहचान मिली है । लंदन के ट्राफलगर स्क्वायर से लेकर न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर तक, दीपावली की रोशनी बिखरती है । अमेरिका के व्हाइट हाउस में भारतीय-अमेरिकी समुदाय के साथ मिलकर दीप प्रज्वलित किए जाते हैं, जो सांस्कृतिक एकता और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है । संयुक्त राष्ट्र भवन में भारतीय समुदाय और अन्य देशों के सहयोग से दीपावली को विश्व शांति और सौहार्द के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है, जिसे संयुक्त राष्ट्र के पंचांग में वैकल्पिक अवकाश के रूप में मान्यता प्राप्त है । ब्रिटेन में दीपावली को सरकारी समर्थन के साथ एक प्रमुख सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है, विशेष रूप से लंदन के ट्राफलगर चौक और 10 डाउनिंग स्ट्रीट पर, यद्यपि यह राष्ट्रीय अवकाश नहीं है । ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, सिंगापुर और न्यूजीलैंड में बसे भारतीय समुदाय इसे पूरे उत्साह के साथ मनाते हैं, जहाँ सिंगापुर में यह राष्ट्रीय अवकाश है और अन्य देशों में पर्यावरण-अनुकूल उत्सवों पर विशेष ध्यान दिया जाता है ।

नेपाल में दीपावली को 'तिहार' के रूप में पांच दिनों तक मनाया जाता है । इस दौरान कौवों, कुत्तों, गायों और बैलों की पूजा के साथ-साथ भाई-बहन के प्रेम को समर्पित 'भाई दूज' का आयोजन होता है । यह परंपरा प्रकृति और मानव के बीच संतुलन का संदेश देती है । मलेशिया, फिजी और मॉरीशस जैसे देशों में दीपावली को राष्ट्रीय अवकाश का दर्जा प्राप्त है । यह वैश्विक स्वीकार्यता दर्शाती है कि दीपावली अब केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि मानवता, एकता और प्रेम का उत्सव है ।

भारत में दीपावली का उत्सव एक अनूठा सामाजिक और सांस्कृतिक मेला है । यह वह समय है जब हर घर नया रंग-रूप लेता है । दीवारों पर चूने का लेप, रंगोली की सजावट, मिट्टी के दीयों की रोशनी और मिठाइयों की मिठास इस पर्व को जीवंत बनाती है । व्यापारी नए बही-खाते शुरू करते हैं, किसान फसल की खुशी मनाते हैं, और परिवार एक-दूसरे के साथ समय बिताकर रिश्तों को मजबूत करते हैं । बच्चों के लिए यह आतिशबाजी और आनंद का समय है, लेकिन आज के दौर में पर्यावरण के प्रति जागरूकता ने दीपावली को एक नया आयाम दिया है । लोग अब मिट्टी के दीए, प्राकृतिक रंगों से बनी रंगोली और इको-फ्रेंडली उत्सव की ओर बढ़ रहे हैं । अयोध्या में सरयू तट पर जलने वाले लाखों दीप न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय गौरव को भी दर्शाते हैं । उज्जैन, वाराणसी, मथुरा और हरिद्वार जैसे शहरों में दीपावली का उत्सव अब वैश्विक पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन चुका है । यह दृश्य विश्व को संदेश देता है कि दीपावली केवल भारत का नहीं, बल्कि समस्त मानवता का उत्सव है ।

दीपावली का सबसे गूढ़ अर्थ है—भीतर के अंधकार को मिटाना । एक छोटा-सा दीप जिस तरह अंधेरी रात को चुनौती देता है, उसी तरह एक सकारात्मक विचार, एक नेक कर्म और एक दयालु भावना पूरे समाज को रोशन कर सकती है । दीपावली हमें सिखाती है कि बाहरी उजाले से पहले भीतर का प्रकाश जलाना जरूरी है ।

आर के जैन

द्वारकांडी घाट में कार पर यात्री बस पलटी: 5 घायल: 20 गंभीर रूप से

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

बारीपदा /भूबनेश्वर : मयूरभंज जिले के राष्ट्रीय राजमार्ग 49 पर द्वारकांडी घाट में एक दुखद सड़क दुर्घटना हुई है । शनिवार को, श्रीगणेश नामक एक यात्री बस रायरंगपुर से बारीपदा जा रही थी जब द्वारकांडी घाट में अचानक उसका ब्रेक फेल हो गया । बस घाट के मुख्य द्वारकांडी द्वार के पास एक चट्टान से टकरा गई और सड़क पर गुजर रही एक कार, OD 01 AK 5230 पर पलट गई । नतीजतन, कार मालिक और बारीपदा क्षेत्र के दवा प्रतिनिधि, देबकांत महापात्रा, जो उनके साथ कार में थे, गंभीर हालत में हैं । कार में सवार एक अन्य व्यक्ति मुकेश विशाल घायल हो गए हैं । बस में एक यात्री (शिक्षक) आशुतोष महापात्रा का पैर टूट गया था और वह इलाज के लिए रायरंगपुर से बारीपदा जा रहे थे । दुर्घटना में उनकी हालत बिगड़ गई गंभीर रूप से घायलों में बांगिरिपोषी प्रखंड के ब्राह्मण ग्राम पंचायत के बलियाढीपा गांव की सीता टुडू (70), बारीपदा की तपस्विनी महानत (25) और बांगिरिपोषी थाने के कुसुम बंद गांव के चंद्रशेखर बेहरा की हालत गंभीर है । दमकल विभाग और पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और बचाव अभियान चलाया । गंभीर रूप से घायलों में से पांच को बारीपदा पंडित रघुनाथ मुर्मू मेडिकल कॉलेज भेजा गया, जबकि 20 अन्य को अस्पताल ले जाया गया । घटना स्थल पर बस चालक और सभी कर्मचारी फरार थे । पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर बस और कार को जब्त कर लिया और आगे की जांच कर रही है । प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार बस तेज गति से चल रही थी तभी सड़क फिसलन भरी हो गई और बस ने नियंत्रण खो दिया और कार को टक्कर मार दी । नतीजतन, बस यात्री एक बड़े हादसे से बच गए । हालांकि बस में 40 से अधिक यात्री सवार थे ।

वोट चुराने के बाद उम्मीदवार चुरा रही है भाजपा: भक्त दास

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : स्थानीय खुंटिया कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित मिश्रन पर्व में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भक्त चरण दास ने कहा, पहले भाजपा वोट चुराती थी, अब उम्मीदवार चुरा रही है । उन्होंने आगे कहा कि भाजपा उम्मीदवार चुराए जाने के बाद, बीजद को कोई उम्मीदवार नहीं मिला । आखिरकार, वे बरगढ़ जिले से एक उम्मीदवार लाए हैं । अब बीजद का कोई अस्तित्व नहीं है । कार्यकर्ता पार्टी छोड़कर दूसरी पार्टियों में शामिल हो रहे हैं । हर दिन सैकड़ों बीजद कार्यकर्ता कांग्रेस पार्टी में शामिल हो रहे हैं । उन्होंने कहा कि इस बार कांग्रेस उम्मीदवार गाजीराम माझी की जीत सुनिश्चित है । इस अवसर पर बीजद महासचिव सुधीर मिश्रा, वरिष्ठ यादव संगठनकर्ता करुणाकर चंडी, दुख भंजन नायक, कपाली भट्ट, रुकेश गहिर, नित्य बेहरा, प्रताप राणा के साथ सैकड़ों युवा कांग्रेस में शामिल हुए । इस अवसर पर कांटाबांजी के पूर्व विधायक संतोष सिंह सलूजा, कांग्रेस प्रवक्ता हामित हुसैन, नुआपाड़ा जिला पर्यवेक्षक मुरलीधर नायक, जिला परिषद सदस्य भरत लाल राउत, सदर एनएसी के पूर्व अध्यक्ष महेश नियाल, गरीब सेना के जिला संयोजक रवि मंगराज, टंकधर साहू, ज्ञानेंद्र दास, अंकित सिंघई प्रमुख रूप से उपस्थित थे ।

दीपोत्सव केवल दीपों का त्योहार नहीं बल्कि पुरुषार्थ का पर्व

डा.नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

हम सबों के जीवन में त्योहार एक खुशी का प्रतीक है, आनंद है व परिवार समाज देश में बंधुत्व स्थापित करने की एक कड़ी है । भले ही आज की नई पीढ़ी इसे लोक परम्परा, रीति रिवाज का आडंबर मानते हैं परंतु यह त्योहार हमारे परिवेश को एक सकारात्मक ऊर्जा देते हैं जिस ऊर्जा को पाकर हमारी निराशा, हमारी व्यस्तता की थकान एक पल में ही खत्म हो जाती है । हमारे आस पास के लोग बनावटीपन के जाल में उलझ गए हैं । ये त्योहारों की खुशी उस नकारात्मकता को तोड़कर जीवन में प्रेम आस्था खुशी का प्रकाश बिखेर देती है ।

ऐसे ही यह हमारा दीपावली का त्योहार है जो काली घनी अमावस की रात को भी पूर्णिमा में बदल देता है । है तो अमावस का घना अंधेरा पर जब दियों की रोशनी जगमगाने लगती है तो लगता है धरती और आकाश का आज मिलन हो गया है । धरती पर रोशनी की लड़ियां झिलमिला रही हों ऐसे जैसे धरती के आंचल में तारों की बारात निकली हो और चांद धरती के आंचल में बैठकर प्रकाशित दीपो का आनंद ले रहा हो ।

दिये जलकर रोशनी ही नहीं देते बल्कि हृदय में प्रेम, मन में खुशी और जीवन में उत्साह का रंग भर देते हैं । इस दीपोत्सव में उल्लास का जो दृश्य लोगो में झलकता है, वह मन की नकारात्मकता ही नहीं खत्म करता बल्कि दूषित मन पवित्र करके जीवन को सकारात्मक बनाता है ।

भारतीय सभ्यता एवम संस्कृति का महत्व तब और अधिक बढ़ जाता है जब आधुनिक युग में उसी सभ्यता को अपना कर लोग उसमें नवीनता का संचार कर जीवन को आनंदमयी बनाते हैं । अपने देश भारत में मनाए जाने वाले त्योहार के पीछे जो उद्देश्य होता है वह लोगों के विचार शैली को बदलता है और भारतीयों को एकता के सूत्र में बांधता है । असल की जिंदगी में इतनी उलझन, इतनी भागदौड़, इतनी व्यस्तता है कि लोग अपने आप को भी समय नही दे पाते पर ये त्योहार, खुशी मनाने के ऐसे बहाने होते हैं जो भागदौड़ भरे जीवन को नव ऊर्जा प्रदान करते हैं । ये छोटी छोटी खुशियां ही जीवन को जीवन देती हैं । आज अधिकांशतः लोग सामूहिक नहीं, व्यक्तिगत हो गए हैं अपनी निजी जिंदगी को किसी की सलाह मार्गदर्शन के अनुसार नही जी रहे हैं, अपने अनुसार जी रहे हैं और ना ही किसी से अधिक मतलब रख रहे हैं पर जब कोई उत्सव आता है तो लोग एक दूसरे को बधाइयां देते, गले मिलते थकते नही हैं और लोगो का यही प्रेम भाव हमारी परंपरा को जीवंत करता है, हमारी सभ्यता को आगे बढ़ाता है ।

यह दिवाली का पर्व मात्र दीपों का त्योहार नहीं है बल्कि यह पर्व पुरुषार्थ का पर्व है,

आत्म साक्षात्कार का पर्व है । सुषुप्त चेतना को जगाने का अनुपम पर्व है । विशुद्ध पर्यावरण को बनाए रखने के लिए नव संदेश देने का पर्व है । यह प्रकाश पर्व समाज के हर एक वर्ग में एक दूसरे के प्रति सम्मान सहयोग की भावना को जागृत करने का पर्व है । दीपावली का मुख्य बिंदु प्रकाश फैलाकर अंधेरे को दूर करना, सुख समृद्धि, सम्पन्नता, खुशहाली, वैभव आदि प्रदान करना है ।

हम भारत में रहते हैं जो विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों, परम्पराओं और विभिन्न प्रकार के त्योहारों के लिए प्रसिद्ध है । हिंदू धर्म में दीपावली का धार्मिक महत्व यह है कि आज के दिन अयोध्या के राजा राम अपने 14 वर्ष वनवास के बाद रावण पर विजय प्राप्त करके अयोध्या लौटे थे । अयोध्यावासियों ने दीपक जलाकर उनका स्वागत किया था । अयोध्यावासियों की यह खुशी आज भी देखने को मिल रही है । आज भी लोग उसी उत्साह से राजा राम के आगमन की खुशी दीप जलाकर मनाते हैं । कार्तिक महीने में अमावस्या के दिन मनाया जाने वाला यह त्योहार विजय पर्व, प्रकाशपर्व के नाम से जाना जाता है । जैन धर्म प्रवर्तक भगवान महावीर को इसी दिन मोक्ष प्राप्त हुआ था ।

500 वर्ष ईशा पूर्व मोहनजोदड़ो की सभ्यता के प्राप्त अवशेषों में मिट्टी की मूर्तिया और उस पर दीप के जलते हुए चित्र दिखाई दिए उसके अनुसार उस समय भी दीपावली मनाई जाती थी । हमारे वैदिक ग्रंथ में कार्तिक अमावस्या का विशेष महत्व है. इस दिन श्री लक्ष्मी गणेश पृथ्वी पर विचरण करते हैं और जन जीवन को कर्मानुसार सुख सम्पन्नता का आशीर्वाद भी देते हैं । आध्यात्मिक जीवन में दीपावली त्योहार का बहुत अधिक महत्व है । अमावस्या की रात्रि मंत्र सिद्ध करने का नकारात्मक ऊर्जा से उत्पन्न भय बाधा को दूर करने महत्वपूर्ण दिवस है । दीपावली पंच दिवसीय त्योहार के रूप में मनाया जाता है । दीपावली के दो दिन पहले आने वाला धनतेरस का त्योहार दीपावली के त्योहार को दुगनी खुशी देता है । गणेश लक्ष्मी के पूजन का सामान खरीदने के लिए बाजारों की चमक देखते ही बनती है । सांझ पहर से ही लोग भक्ति आस्था में डूबकर गणेश लक्ष्मी के आगमन में आरती कुबेर का वंदन करते हैं जो सुख समृद्धि के देवता हैं । इस पर्व का आरंभ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी से शुरू होकर शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि तक रहता है । नरकासुर के वध का भी बहुत अधिक महत्व है. इस दिन को नर्क चतुर्दशी या काली चौदस के नाम से मनाते हैं ।

धनतेरस, नरकचतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज ये सभी त्योहार बहुत ही धूम धाम से मनाते हैं । दीपावली का ये त्योहार सभी के जीवन को खुशी व उत्साह प्रदान करता है । यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि कोई हमारी वजह से त्योहार के दिन कोई दुखी न रहे । यदि हम किसी के लिए कुछ करने के योग्य हैं तो वह कार्य हमें करने में हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए । दूसरों को खुशी देने का प्रयास करना चाहिए ।

दीपावली का त्योहार तभी सार्थक होता है जब हम अपनी खुशी को दूसरों के साथ बांटते हैं और दूसरे की खुशी में शामिल होकर उनका सहयोग करते हैं । यह असंख्य दीपों की रंग बिरंगी रोशनी, जलती हुई फुलझड़िया मन को मोह लेती हैं ।

कार्तिक मांस का यह पर्व एक अनूठा पर्व है जिसमें खुशी, सुख समृद्धि, और ऊर्जा भरपूर मात्रा में मिलती है. यह एक ऐसा त्योहार है जो जीवन में खुशी के रंग भर देता है । इस दिन धरती की छवि अनुपम होती है । लोग दीप, मोमबत्ती, पटाखे फोड़कर इस त्योहार को मनाते हैं । अच्छा भोजन बनाते है, दूसरों को खुशी से खिलाते है । प्रेम भाईचारे का यह अद्भुत त्योहार दीपावली हर तरह से जीवन में खुशी सुख समृद्धि और शांति लेकर आता है । दीपावली पर्व की यहीं खूबसूरती है ।

एमकेसीजी के कर्मचारियों ने शिकायत की है कि चार घंटे तक मरीज़ों की सेवा बाधित रही

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

बेरहामपुर/भूबनेश्वर : स्थानीय एमकेसीजी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, ब्रह्मपुर के कर्मचारी इस बात से नाराज़ हैं कि उनके नियोक्ता उन्हें समय पर वेतन नहीं दे रहे हैं । दिवाली नज़दीक है, लेकिन वेतन न मिलने से कर्मचारियों को काफ़ी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है । इसी सिलसिले में, अभिराम केयरटेकिंग एक्सपर्ट सर्विसेज़, भुवनेश्वर के अंतर्गत कार्यरत सैकड़ों परिचारक अधीक्षक कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं । परिणामस्वरूप, चिकित्सा केंद्र में चार से पाँच घंटे तक मरीज़ों की सेवा बाधित रही । एजेंसी के अधिकारी और प्रशासनिक अधिकारी सब्ज़ा पांडा मौके पर पहुँचे और समझौता कराने का प्रस्ताव रखा । समाचार लिखे जाने तक पचास प्रतिशत वेतन मिल चुका था, और बाकी वेतन शाम तक मिल जाएगा, लेकिन विरोध प्रदर्शन समाप्त हो चुका था ।

गौरतलब है कि संबंधित एजेंसी को हर महीने की 10 तारीख तक कर्मचारियों का वेतन देने का निर्देश दिया गया था, लेकिन यूनियन ने शिकायत की है कि इसका उल्लंघन हो रहा है । मैं ऐसा कर रहा हूँ । लेकिन चूंकि मेडिकल कॉलेज को अभी भी ढाई करोड़ से अधिक प्राप्त होना बाकी है, इसलिए मेडिकल कॉलेज दावा कर रहा है कि एजेंसी ने पिछले अगस्त से बिल का भुगतान नहीं किया है । लेकिन जैसा कि रजिस्ट्रार प्रसाद पांडा ने कहा, अगर हमें अभी तक सही बिल नहीं मिला, तो हम भुगतान नहीं कर सकते, एजेंसी को इस मामले पर आकर बात करने के लिए कहा गया है, लेकिन एजेंसी इसे स्वीकार नहीं करती है । निविदा नियमों के अनुसार, बिना बिल के भी, एजेंसी इस नियम का उल्लंघन कर रही है, जबकि तीन महीने का वेतन देने का आदेश है । संघ के कर्मचारियों ने दावा किया है कि अगर बकाया राशि, ईपीएफ/ईएसआई भुगतान, एजेंसी का स्थानीय कार्यालय स्थापित करना और आज शाम तक वेतन की मांगें पूरी नहीं की जाती हैं, तो संघ आंदोलन फिर से शुरू करेगा । राज्य अध्यक्ष प्रताप प्रधान, अध्यक्ष सी. एच. सुनील पात्रा, संपादक एन. निरंजन दास और सभी कार्यकर्ताओं ने आज कार्यक्रम का नेतृत्व किया ।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025: नामांकन में गड़बड़ियों पर NCP का सशक्त विरोध, मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को सौंपा ज्ञापन – उम्मीदवारों की पूरी लिस्ट जारी

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। बिहार राज्य विधानसभा चुनाव 2025 की नामांकन प्रक्रिया में व्याप्त अनियमितताओं और पारदर्शिता की कमी को उजागर करते हुए, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) ने आज एक बड़ा कदम उठाया। पार्टी के केंद्रीय पर्यवेक्षक डॉ. राजकुमार यादव ने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी से मुलाकात की और नामांकन पत्रों की जांच में हो रही गड़बड़ियों, प्रतीक चिन्ह (सिंबल) आवंटन फॉर्म पर अनुचित आपत्तियों तथा समग्र प्रक्रिया की निष्पक्षता पर सवाल उठाते हुए एक विस्तृत ज्ञापन सौंपा जिसमे बिहार चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष रंजन प्रियदर्शी व अन्य शामिल थे1

NCP ने इन अनियमितताओं को विपक्षी दलों के उम्मीदवारों को अयोग्य ठहराने की साजिश करार दिया, जो राज्य की लोकतांत्रिक परंपराओं पर सीधा हमला है।

यह घटनाक्रम NCP की व्यापक चुनावी रणनीति का हिस्सा है, जिसमें पार्टी ने बिहार की 243 विधानसभा सीटों पर मजबूत पैठ बनाने के लिए व संगठन को सुदृढ़ करने के लिए प्रभावशाली तरीके से 15 जिलों में कुल 25 से अधिक नामांकन दाखिल किए हैं। ये नामांकन 'बिहार बचाओ, विकास लाओ' अभियान के तहत तैयार किए गए हैं, जो राज्य की पिछड़ी अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता और ग्रामीण विकास जैसी चुनौतियों पर केंद्रित हैं। उम्मीदवारों में सभी भाग संभाग और विशेषकर युवा शामिल हैं, जो बिहार की विविधता को प्रतिबिंबित करते हैं। पार्टी ने सभी नामांकनों की निगरानी के लिए स्थानीय माइक्रो पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की है जिनमे कुमार विशाल, प्रभानंद तिवारी, मुजम्मिल हुसैन, अतुल्य गुंजन, जितेंद्र शुक्ला हैं 1 किसी भी अनियमितता पर अदालती रास्ता अपनाने का ऐलान किया है।

स्थानीय मुद्दों पर मजबूत दांव

NCP के उम्मीदवारों का चयन जाति-समुदाय के संतुलन (OBC, SC/ST, EBC) और सामाजिक न्याय के आधार पर किया गया है। यहां प्रमुख नामांकनों की सूची दी गई है, जिनमें से कई पर नामांकन प्रक्रिया में गड़बड़ियों का आरोप लगाया गया है

दस्तावेजों पर अनावश्यक आपत्तियां।

सिंबल फॉर्म पर आपत्ति को लेकर निर्वाचन आयोग से शिकायत।

(नोटः कुल 25+ नामांकन हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं। शेष उम्मीदवारों की पूरी सूची NCP कार्यालय से उपलब्ध।)

डॉ. राजकुमार यादव का बयान-लोकतंत्र पर प्रहार

ज्ञापन सौंपते हुए डॉ. राजकुमार यादव ने कहा, ₹नामांकन प्रक्रिया लोकतंत्र का प्रथम द्वार है, और यदि इसे तोड़-मरोड़ दिया जाएगा, तो चुनाव की पवित्रता दांव पर लग जाएगी। हमारी पार्टी के उम्मीदवारों पर लगाई जा रही अनुचित आपत्तियां सत्ताधारी गठबंधन की घबराहट का प्रमाण हैं। NCP न केवल इन गड़बड़ियों का पुरजोर विरोध करेगी, बल्कि निर्वाचन आयोग से तत्काल जांच और सुधार की मांग भी करेगी। बिहार की जनता यह कभी नहीं भूलेगी कि असली लड़ाई सत्ता के कुर्सी के लिए नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण शासन के लिए है।"

NCP बिहार चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष ने कहा, ₹हमारे नामांकन न केवल दस्तावेज हैं, बल्कि बिहार की करोड़ों आवाजें हैं। इन पर सवाल उठाना मतलब जनता की आस्था पर प्रहार है। हम हर स्तर पर लड़ेंगे और जीत सुनिश्चित करेंगे।"

व्यापक परिदृश्य और आगे की रणनीति के तहत यह घटना पहले चरण (17 अक्टूबर) के नामांकन की अंतिम तिथि (20 अक्टूबर) के ठीक बाद आई है, जब जांच प्रक्रिया शुरू हुई। NCP का मानना है कि ये अनियमितताएं एनडीए, महागठबंधन और जनसुराज पार्टी के बीच त्रिकोणीय मुकाबले को प्रभावित करने की कोशिश हैं। पार्टी ने सभी 25+ उम्मीदवारों के समर्थन में राज्यव्यापी आंदोलन की बात कही है1

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी बिहार की जनता से अपील करती है कि वे इस लोकतांत्रिक संघर्ष में शामिल हों और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए निर्वाचन आयोग पर दबाव बनाएं।

मानदेय वृद्धि न होने से शिक्षामित्रों में निराशा, सरकार पर शिक्षामित्रों के साथ सौतेला व्यवहार करने का आरोप

समरकैप का मानदेय शीघ्र दिलाए जाने की मांग

अम्बेडकर नगर। प्राथमिक विद्यालयों में 25 वर्षों से शिक्षकों के समान शिक्षण कार्य कार्य करने वाले शिक्षक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण, टीईटी, सीटीईटी उत्तीर्ण शिक्षामित्रों को मात्र दस हजार रुपए का अल्प मानदेय वह भी 11 माह के लिए दिया जा रहा है। अल्प मानदेय के कारण शिक्षामित्रों को अपना व अपने परिवार का पेट पालना भी मुश्किल हो गया है। आर्थिक तंगी के चलते दस हजार से अधिक शिक्षामित्र आत्महत्या, अवसाद व बीमारी के चलते ईलाज न होने के कारण मौत के शिकार हो गए। पूर्व में 5 सितंबर शिक्षक दिवस पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा मानदेय वृद्धि की घोषणा करने के बाद भी दीपावली पर्व पर भी मानदेय वृद्धि न होने के कारण शिक्षामित्रों में घोर निराशा है। शिक्षामित्र शिक्षक संघ अम्बेडकर नगर के जिलाध्यक्ष व शिक्षामित्र केयर समिति अम्बेडकर नगर के जिला संयोजक राम चन्दर मौर्य ने सरकार पर शिक्षामित्रों के साथ सौतेला व्यवहार करने का आरोप लगाते हुए कहा कि टीईटी सीटीईटी उत्तीर्ण योग्य व अनुभवी शिक्षामित्रों को अल्प मानदेय देकर घोर अन्याय किया जा रहा है। जो शिक्षामित्रों के साथ उत्तर प्रदेश सरकार की भेद भाव पूर्ण नीति को उजागर करता है। जिलाध्यक्ष, जिला संयोजक राम चन्दर मौर्य ने कहा कि 5 माह का समय बीतने पर भी शिक्षामित्रों को समरकैम्प के मानदेय का भुगतान नहीं किया गया। अल्प मानदेय वह भी समय से न मिलने के कारण शिक्षामित्रों को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिलाध्यक्ष, जिला संयोजक राम चन्दर मौर्य ने शिक्षामित्रों को समरकैम्प का मानदेय शीघ्र दिलाए जाने की मांग किया है। जिलाध्यक्ष जिला संयोजक राम चन्दर मौर्य ने कहा कि सरकार द्वारा 8 वर्षों से केवल शिक्षामित्रों के मानदेय वृद्धि की झूठी घोषणाएं करने व कमेटी गठित करने तक ही सीमित है। दीपावली पर्व पर भी मानदेय वृद्धि न होने से शिक्षामित्रों के हाथ निराशा ही मिली वहीं मूल विद्यालय वापसी का शासनादेश जनवरी माह में जारी होने के बाद भी मूल विद्यालय वापसी की प्रक्रिया ज्यों कि त्यों बनी हुई है। जिलाध्यक्ष जिला संयोजक राम चन्दर मौर्य ने कहा कि यदि शीघ्र शिक्षामित्रों की समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो शिक्षामित्र एक बार फिर आन्दोलन करने को बाध्य होंगे।

घाटशिला में हेमंत की अपील: जमानत तक जप्त हो जानी चाहिए विरोधियों का

एक दर्जन तो क्या दो दर्जन मुख्यमंत्री पर भी भारी पड़ेगा ये मुख्यमंत्री (मतलब -हेमंत सोरेन)

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, घाटशिला में झामुमो प्रत्याशी सोमेश चन्द्र सोरेन के नामांकन सभा में सीएम हेमंत सोरेन ने कहा की बाबा दिशोम गुरू शिबू सोरेन के निधन के बाद उनके पीछे-पीछे ही हमारे बड़े भाई मंत्री रामदास सोरेन का भी निधन हो गया न जाने क्या संयोग था।

यह हम नहीं बता सकते, लेकिन कोई ना कोई जरूर ताकत है जो ऐसी स्थिति पैदा करती। ऐसी स्थिति आई कि हमने सोमेश बाबू को प्रत्याशी बनाया। आप जिस तरीके से पिछले बार ऐतिहासिक रिकॉर्ड मत के साथ घाटशिला के इतिहास में पहली बार 20 से 22 हजार से अधिक वोट से आपके रामदास सोरेन को विधायक बनाया, इस बार ऐसा वोट करना है की विरोधी प्रत्याशी का खाता भी न खुले। जमानत तक जब्त हो जाना चाहिए। इस बार वोट बंटने का नहीं है अभी तो दो-तीन दिन और चुनाव का पर्चा भरेगा।

इसलिए अभी हम बहुत ज्यादा नहीं बोलते। जब मैदान में हम लोग आ जाते हैं तो हम लोग के ऊपर भी थोड़ा सा कुछ भूत चढ़ जाता है। कभी-कभी कुछ ज्यादा भी बोला जाता है। लेकिन अभी समय है।

हमारे विपक्ष के लोग पूरी तैयारी के साथ सुने यहां पर एक दर्जन मुख्यमंत्री पूरे अलग-अलग राज्य से आकर डेरा डालेंगे। एक दर्जन क्या दो दर्जन मुख्यमंत्री पर भी ये अकेला मुख्यमंत्री भारी पड़ेगा। वह इसलिए की यहां का मुख्यमंत्री हम नहीं यहां का मुख्यमंत्री सामने बैठी जनता है।

मुख्यमंत्री हेमन्त ने प्रस्तावित टाइगर सफारी प्रोजेक्ट का देखा प्रेजेंटेशन

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड -झारखंड

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने आज कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में लातेहार जिला में प्रस्तावित टाइगर सफारी प्रोजेक्ट का प्रेजेंटेशन देखा। मौके पर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के समक्ष अधिकारियों ने टाइगर सफारी प्रोजेक्ट से संबंधित विस्तृत जानकारी रखी। मुख्यमंत्री को अधिकारियों ने अवगत कराया कि यह प्रोजेक्ट झारखंड का पहला टाइगर सफारी प्रोजेक्ट होगा। लातेहार जिला के पुटूवागढ़ क्षेत्र में इसका निर्माण किया जाना प्रस्तावित है जो पलामू टाइगर रिजर्व से बाहर का क्षेत्र है। इस निमित्त विभाग द्वारा भूमि चिन्हित कर ली गई है। टाइगर सफारी प्रोजेक्ट बेतला नेशनल पार्क के नजदीक क्षेत्र में बनाए जाने की योजना है। टाइगर सफारी प्रोजेक्ट बनने से डाल्टनगंज, बरवाडीह, मंडल डैम क्षेत्र के स्थानीय ग्रामीणों को आजीविका का बेहतर साधन मिलेगा। मुख्यमंत्री के समक्ष अधिकारियों ने यह जानकारी दी कि इस प्रोजेक्ट के बनने से पलामू टाइगर रिजर्व (पीटीआर) क्षेत्र के इको टूरिज्म सर्किट, जो नेतरहाट-बेतला-केचकी से लेकर मंडल डैम तक विस्तारित है, इसके विकास में यह प्रोजेक्ट एक महत्वपूर्ण कड़ी बनेगी।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन को अधिकारियों ने अवगत कराया कि टाइगर सफारी परियोजना की स्थापना निर्धारित सभी मानकों का अनुपालन करते हुए की जायेगी। टाइगर सफारी बनने से इस क्षेत्र के समुचित विकास की पूरी संभावना है। इस योजना के विस्तार से टूरिज्म क्षेत्र में पर्यटकों के लिए बाघों और अन्य वन्यजीवों को करीब से देखने का एक आकर्षक और नया मौका होगा। यह झारखंड का पहला टाइगर सफारी होगा, जिसका उद्देश्य पर्यटन को बढ़ावा देना और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करना है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने टाइगर सफारी प्रोजेक्ट से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत जानकारी ली तथा अधिकारियों को कई महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश भी दिए।

मौके पर मंत्री सुदिव्य कुमार, उनकी विधायक पत्नी कल्पना सोरेन, प्रधान मुख्य वन संरक्षक वाइल्डलाइफ परितोष उपाध्याय, पलामू टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टर एस०आर० नाटेश, उप निदेशक पलामू टाइगर रिजर्व प्रजेश जेना, कंसल्टेंट अशफाक अहमद सहित अन्य मौजूद थे।

बिहार में चुनावी घमासान, योगी ने संभाली 'कमान'

प्रदीप कुमार वर्मा

अयोध्या में भगवान श्री राम का भव्य मंदिर निर्माण, वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, मथुरा में कृष्ण जन्म भूमि के उत्थान की परिकल्पना, प्रयागराज में महाकुम्भ का आयोजन, अपराध के प्रति ज़ीरो टॉलरेंस और मजहबी उन्माद फैलाने वालों पर कानून का डंडा, इन सब ऐतिहासिक फसलों के पीछे जो एक शख्स हैं, वह हैं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। बीते दिनों में योगी आदित्यनाथ ₹हिंदुत्व₹ की विचारधारा के एक नए ₹भगीरथ₹ के रूप में देश के जनमानस एवं राजनीति में स्थापित हुए हैं। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के लोकप्रियता का आलम यह है कि उत्तर प्रदेश के साथ-साथ अब चुनावी राजनीति और प्रचार में उनकी डिमांड देशव्यापी हो चली है। भारतीय जनता पार्टी ने बिहार विधानसभा चुनाव के लिए अपने 40 स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी की है। इस लिस्ट में भी योगी आदित्यनाथ का नाम प्रमुख स्टार प्रचारकों में शुमार है।

बिहार विधानसभा के लिए भाजपा के स्टार प्रचारकों की सूची में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा तथा यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ के साथ भोजपुरी स्टार पवन सिंह, निरहुआ, मनोज तिवारी और रवि किशन तथा सम्राट चौधरी, स्मृति ईरानी, यूपी के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य का नाम भी शामिल है। पार्टी ने बिहार चुनाव में भाजपा शासित पांच राज्यों के मुख्यमंत्रियों को भी स्टार प्रचारक बनाया है। इनमें एमपी के मोहन यादव, असम के हिमंता बिस्वा सरमा और महाराष्ट्र के देवेंद्र फडणवीस के साथ दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का नाम शामिल है। बिहार चुनाव के पहले चरण के लिए 6 नवंबर को होने वाले मतदान की नामांकन प्रक्रिया में बुधवार को चुनाव प्रचार का श्रीगणेश हुआ तथा बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा के स्टार प्रचारक एवं यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ की एंट्री हो गई।

भाजपा की तरफ से प्रचार का मैदान संभालते हुए योगी आदित्यनाथ ने पटना के दानापुर और सहरसा में दो रैलियां कीं। दानापुर में भाजपा प्रत्याशी रामकृपाल यादव के नामांकन में शामिल होकर उन्होंने जनसभा को संबोधित किया। वहीं, सहरसा में डॉ. आलोक रंजन के समर्थन में योगी ने विपक्ष पर जोरदार हमला बोला। योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश और बिहार का रिश्ता ऐसा ही है जैसे भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और माता जानकी का। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में भगवान श्री राम का भव्य मंदिर बनकर तैयार है और अब केंद्र सरकार बिहार में भी माता जानकी के मंदिर का निर्माण करने जा रही है जिस पर 900 करोड रुपए की राशि खर्च की जाएगी। योगी ने कहा कि बिहार में एनडीए की सरकार बनेगी तो यूपी मॉडल जैसा विकास होगा। यूपी की तरह ही अपराध पर ज़ीरो टॉलरेंस की नीति होगी तथा माफिया की संपत्ति कुर्क करके गरीबों के घर बनाए जाएंगे।

सहरसा का इलाका कोशी-सीमांचल बेल्ट से सटा हुआ है जहां मुस्लिम वोटरों की तादाद ज्यादा है। ऐसे में योगी की यह एंट्री बीजेपी का महत्वपूर्ण रणनीतिक कदम माना जा रहा है। यही नहीं भाजपा की इस कवायद को हिंदुत्व के मुद्दे पर वोटर्स को मजबूत करने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। पार्टी ने चुनावी रणनीति के तहत योगी की रैलियों को खास तौर पर सीमांचल और कोसी के इलाकों में केंद्रित किया है, जहां धार्मिक ध्रुवीकरण का असर सीधा वोटों पर पड़ सकता है। यहां, यह भी गौरतलब है कि बीजेपी ने अब तक जारी प्रत्याशियों की सूची में किसी भी मुस्लिम उम्मीदवार को टिकट नहीं दिया है। राजनीति के जानकार मानते हैं कि सीएम योगी आदित्यनाथ का चुनाव में बिहार का दौरा भाजपा की अपनी परंपरागत हिन्दुत्व की राजनीति को धार देने की रणनीति का हिस्सा है। भाजपा के नीति नियंताओं को इस बात का पूरा विश्वास है कि योगी के चुनाव प्रचार के सकारात्मक परिणाम पार्टी को जीत के रूप में मिलेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एनडीए के सबसे बड़े स्टार प्रचारक हैं तथा योगी की डिमांड बिहार में सबसे ज्यादा है। सीएम योगी यूपी से सटे सीटों के साथ-साथ सीमांचल और मिथिलांचल में कई रैली करने जा रहे हैं। इनमें गोपालगंज, सारण, सीवान और वाल्मीकि नगर में योगी का गहरा प्रभाव माना जाता है जहां वह सीधे रैलियां करेंगे। मुस्लिम बहुल सीमांचल की सीटें योगी की प्राथमिकता में हैं। पार्टी द्वारा उनकी फायर ब्रांड ₹हिंदुत्व₹ की छवि को इन इलाकों में हिंदू मतदाताओं को एकजुट करने और ध्रुवीकरण को मजबूत करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।

दरअसल, बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा जिस यूपी मॉडल को दोहराना चाहती है, वह 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव की रणनीति पर आधारित है। इसी मॉडल की दम पर साल 2022 में पार्टी ने रिकॉर्ड जीत हासिल की थी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भारतीय जनता पार्टी के स्टार प्रचारकों में शामिल होने की अपनी अलग खास वजह है। उत्तर प्रदेश में बतौर मुख्यमंत्री उनकी कार्यशैली की प्रशंसा पूरे देश में होती है। इसके साथ ही कानून-व्यवस्था और भ्रष्टाचार पर ₹जीरो टालरेंस₹ की नीति लागू करने को लेकर भी देश के विभिन्न राज्यों में लोग उनकी सराहना करते हैं। बिहार चुनाव में यूपी सीएम योगी की सभा के लिए एनडीए के कई प्रत्याशियों ने मांग भाजपा नेतृत्व से की है। बिहार में योगी आदित्यनाथ के प्रचार से युवा, महिला, व्यापारी और मध्यम वर्ग के बीच यह संदेश जाएगा कि बीजेपी अपराध को सख्ती से नियंत्रित कर सकती है। ऐसे में अब देखना है कि क्या योगी के ₹हिंदुत्व और विकास₹ का मिश्रण बिहार के वोटरों को आकर्षित करेगा? अब बिहार की जनता ही फैसला करेगी कि क्या बिहार में यूपी मॉडल चलेगा या नहीं?

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

ओडिशा से मादक पदार्थ लेकर बंगाल जा रहे दो युवक झारखंड में गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड ,बंगाल , ओडिशा का सीमावर्ती इलाका बहरागोड़ा में पुलिस ने मादक पदार्थों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए दो तस्करों को शुक्रवार को गिरफ्तार किया है. घाटशिला एसडीपीओ कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में ग्रामीण एसपी ऋषभ गर्ग ने बताया कि यह कार्रवाई 16 अक्तूबर को हुई थी. ओड़िशा के जामसोला बॉर्डर के निकट भारत पेट्रोल पंप के पास पुलिस को देखकर दो युवक मोटरसाइकिल से भागने की कोशिश कर रहे थे. पुलिस ने पीछा कर दोनों को पकड़ा. पूछताछ और तलाशी के दौरान उनके पास से पांच किलो गांजा बरामद किया गया. इस कार्रवाई में बांगरीपोसी के पाठरी बुरामारा निवासी प्रहलाद पुटी व ओडिशा के मयूरभंज निवासी रामाचंद्र गिरी को गिरफ्तार किया गया. पुलिस ने उनके पास से एक मोटरसाइकिल (ओआर 11ई-8078) और दो एंड्रॉयड मोबाइल फोन जब्त किया. इस संबंध में बहरागोड़ा थाना में मामला दर्ज कर दोनों आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है. ग्रामीण एसपी ने बताया कि घाटशिला विधानसभा उपचुनाव के दौरान अब तक पुलिस द्वारा लगभग 28 लाख रुपये मूल्य की मादक पदार्थ, नगद और अन्य अवैध सामग्रियां जब्त की गयी हैं. इस अभियान में घाटशिला एसडीपीओ अजीत कुजूर, बहरागोड़ा अंचलाधिकारी राजाराम सिंह मुंडा, थाना प्रभारी शंकर प्रसाद कुशवाहा, राहुल कुमार, ओम शरण, शुभकांत झा, संजू लकड़ा, किसको साव, सुमन कुमार, ज्योति अभिषेक उरांव समेत कई पुलिस अधिकारी और जवान शामिल थे. प्रेस वार्ता के दौरान एसडीपीओ अजीत कुजूर और मुसाबनी डीएसपी संदीप भगत उपस्थित थे।

झारखंड में सिक्योरिटी गार्ड ने अपने सुपरवाइजर की कुल्हाड़ी से मारकर की हत्या

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर। रामगढ़ जिले में एक निर्माणधीन मार्केट कंपलेक्स के प्लॉट पर तैनात सिक्योरिटी गार्ड ने अपने सुपरवाइजर की हत्या कर दी। घटना गुरुवार की रात रामगढ़ थाना क्षेत्र स्थित रामगढ़ कॉलेज स्थित हरिओम टावर आई वी वाई नामक निर्माणधीन मार्केट कंपलेक्स की है। वहीं, आरोपी ने शुक्रवार सुबह थाना में जाकर आत्मसमर्पण कर दिया।

मृतक की पहचान सुनील सिंह के रूप में की गई। पुलिस के अनुसार, आरोपी शंकर महतो कम सैलरी मिलने से नाराज था। आरोपी ने कुल्हाड़ी से वारकर सुनील सिंह की हत्या की है। हत्या की जानकारी मिलने के बाद पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

घटनास्थल पर पहुंचे मृतक सुनील सिंह की पत्नी और परिजनो को रो-रोकर बुरा हाल है। मृतक के भाई रामवृक्ष सिंह ने कहा- सुनील सिंह की गुरुवार को ड्यूटी नहीं थी। उसके बाद भी सिक्योरिटी गार्ड के एजेंसी मालिक द्वारा जबरन काम पर बुलाया गया और शंकर महतो ने मेरे भाई को कुल्हाड़ी से मारकर हत्या कर दी। शंकर महतो को फांसी की सजा होनी चाहिए।

इधर, घटना के बाद से मृतक के गांव वालों में काफी आक्रोश है। निर्माणधीन प्लॉट पर कल गुरुवार को सुरक्षा कर्मी सुनील सिंह और शंकर महतो को तैनात किया गया था। सुनील सिंह और शंकर महतो गुरुवार की दोपहर में किसी बात को लेकर लड़े थे और दोनों के बीच हाथा पाई भी हुई थी। रात में शंकर महतो ने सुनील सिंह की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर डाली।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023